

## ভেতরের পাতায়

|                                     |       |    |
|-------------------------------------|-------|----|
| সূচনাকথা .....                      | ..... | ১৩ |
| কল্যাণময় বন্ধন .....               | ..... | ২১ |
| ব্যক্তি জীবনে বিয়ের সুফল .....     | ..... | ২৫ |
| দ্঵ীন এবং ঈমানের সুরক্ষা.....       | ..... | ২৫ |
| সতীত্বের সুরক্ষা.....               | ..... | ২৫ |
| নিরাপত্তাবোধ থেকে আনন্দ লাভ.....    | ..... | ২৬ |
| সৎকর্ম বৃদ্ধির সুখময় পন্থা.....    | ..... | ২৭ |
| সুশৃঙ্খল জীবন যাপন .....            | ..... | ২৯ |
| বিয়ের সামাজিক সুফল.....            | ..... | ৩০ |
| মানবজাতির ধারাকে অব্যাহত রাখা ..... | ..... | ৩০ |
| আত্মীয়তার বন্ধন সৃষ্টি .....       | ..... | ৩০ |
| নেতৃত্ব অবক্ষয়া থেকে সুরক্ষা ..... | ..... | ৩০ |
| রোগব্যাধি থেকে নিরাপদ রাখা.....     | ..... | ৩১ |
| পারিবারিক পরিবেশ গড়ে তোলা .....    | ..... | ৩১ |
| মুসলিম জাতিকে সংখ্যাগরিষ্ঠ করা..... | ..... | ৩২ |
| স্বামী-স্ত্রী নির্বাচন পর্ব .....   | ..... | ৩৩ |
| আদর্শ পাত্রীর বৈশিষ্ট্য .....       | ..... | ৩৪ |
| সৎকর্মশীলতা .....                   | ..... | ৩৪ |
| উত্তম চরিত্র .....                  | ..... | ৩৫ |
| কুমারীত্ব .....                     | ..... | ৩৫ |
| সন্তান ধারণে সক্ষমতা .....          | ..... | ৩৬ |
| মমতাময়ী আচরণ .....                 | ..... | ৩৮ |

|   |    |
|---|----|
| অঞ্জে তুষ্টি .....                              | ৩৮ |
| সরলমতিত্ব .....                                 | ৩৯ |
| সৌন্দর্য .....                                  | ৪০ |
| সামঞ্জস্য .....                                 | ৪১ |
| আদর্শ পাত্রের বৈশিষ্ট্য .....                   | ৪২ |
| ধার্মিকতা .....                                 | ৪২ |
| উন্নত চরিত্র .....                              | ৪২ |
| আর্থিক অবস্থা .....                             | ৪৩ |
| আচার-ব্যবহার ও সৌজন্যবোধ .....                  | ৪৩ |
| চেহারা .....                                    | ৪৪ |
| <br>বিয়ের প্রস্তাব .....                       | ৪৫ |
| পাত্রী দেখা .....                               | ৪৬ |
| ছবি আদান-প্রদান .....                           | ৪৮ |
| কথা বলা এবং যোগাযোগ রাখা .....                  | ৪৯ |
| ইন্টারনেটে পাত্রী খোঁজা .....                   | ৪৯ |
| সিদ্ধান্ত গ্রহণে ইস্তেখারাহ করা .....           | ৫০ |
| পরামর্শ করা .....                               | ৫১ |
| সত্য জানানো .....                               | ৫১ |
| নিষিদ্ধ প্রস্তাব .....                          | ৫২ |
| বিবাহিতা নারীকে প্রস্তাব না দেওয়া .....        | ৫২ |
| কারও প্রস্তাবের ওপর প্রস্তাব না দেওয়া .....    | ৫২ |
| অন্যান্য নিষিদ্ধ বিষয়সমূহ .....                | ৫৩ |
| অধীনস্থ নারীর জন্য বিয়ের প্রস্তাব প্রদান ..... | ৫৩ |
| বাগ্দানের আংটি ও স্বর্ণলক্ষার .....             | ৫৪ |
| বাগ্দান পার্টি .....                            | ৫৫ |
| বাগ্দত্বা দম্পতির নির্জন অন্তরঙ্গতা .....       | ৫৫ |
| <br>আকৃদ অনুষ্ঠান .....                         | ৫৭ |
| পাত্রের উপযুক্তা .....                          | ৫৮ |

|  |    |
|--|----|
| পাত্রীর উপযুক্ততা.....                                 | ৫৯ |
| পাত্রীর অনুমতি .....                                   | ৫৯ |
| নারীর জন্য অভিভাবকের অপরিহার্যতা.....                  | ৬২ |
| ওয়ালীর দায়িত্ব ও কর্তব্য .....                       | ৬৪ |
| সামগ্রীর শুরুত্ব .....                                 | ৬৫ |
| মোহর .....   | ৬৫ |
| মোহর নির্ধারণে পরিমিতলোধ .....                         | ৬৬ |
| অনির্ধারিত মোহর .....                                  | ৬৭ |
| বাকি মোহর .....  | ৭১ |
| নারীর কাছ থেকে তার মোহর নিয়ে নেয়ার কঠিন শাস্তি ..... | ৭১ |
| বাড়ি শর্ত আরোপের বিধান .....                          | ৭২ |
| চৃক্ষিনামা সম্পাদন প্রক্রিয়া .....                    | ৭৩ |
| শুৎবাহ .....   | ৭৩ |
| ইজাব ও কবুল .....                                      | ৭৩ |
| চৃক্ষিনামা লিখে রাখা .....                             | ৭৪ |
| <br>বিয়ের অনুষ্ঠান .....                              | ৭৫ |
| বিয়ের সংবাদ লোকজনের মাঝে প্রচার করা .....             | ৭৫ |
| দু'আ করা .....   | ৭৬ |
| গান-বাজনা নিষিদ্ধ হওয়া .....                          | ৭৬ |
| 'দফ'- বাজনার ক্ষেত্রে ব্যতিক্রম .....                  | ৭৭ |
| বিয়ের অনুষ্ঠানে দফ বাজানো এবং গান গাওয়া.....         | ৭৮ |
| নৃত্য করা .....  | ৭৯ |
| উপহার দেওয়ার সঠিক নিয়ম .....                         | ৭৯ |
| পাপে ভরা বিয়ে অনুষ্ঠান.....                           | ৭৯ |
| বিয়েতে অনৈসলামী বেশ-ভূষা.....                         | ৮০ |
| বিয়েতে অনৈসলামী কার্যকলাপ.....                        | ৮২ |
| ছবি তোলা থেকে বিরত থাকা .....                          | ৮৪ |

|   |     |
|---|-----|
| একসাথে পথচলা .....                        | ৮৭  |
| যৌথ দায়িত্ব, যৌথ প্রতিদান.....           | ৮৭  |
| সাম্য ও সমতার সমীকরণ .....                | ৮৯  |
| উত্তম আচরণ ও তার বৈশিষ্ট্য .....          | ৮৯  |
| সত্যবাদিতা.....                           | ৯১  |
| কোমল আচরণ ও মমত্ববোধ .....                | ৯২  |
| ক্ষমাশীলতা.....                           | ৯৫  |
| অন্যায় আচরণ ও অশ্লীল ভাষা বর্জন করা..... | ৯৫  |
| তর্ক-বিতর্ক এবং বাকবিতঙ্গ বর্জন করা.....  | ৯৭  |
| সমস্যার শাস্তিপূর্ণ সমাধান .....          | ৯৭  |
| স্ত্রীকে বিনোদন দেওয়া .....              | ৯৮  |
| অন্তরঙ্গতার গুরুত্ব.....                  | ৯৯  |
| পরস্পরের শারীরিক চাহিদা পূরণ করা .....    | ৯৯  |
| গাইরাহ বা ব্যক্তিত্ববোধ .....             | ৯৯  |
| স্ত্রীর গোপনীয়তা রক্ষা করা.....          | ১০০ |
| নারীর নাজুক প্রকৃতিকে বোঝা .....          | ১০১ |
| পরস্পরের মনোভাব বুঝে মানিয়ে চলা.....     | ১০১ |
| নারীর প্রকৃতি বোঝা .....                  | ১০২ |
| স্ত্রীর ভালো দিকটিই বিবেচনা করা.....      | ১০৮ |
| পারস্পরিক সহযোগিতা ও তার সীমারেখা .....   | ১০৫ |
| পরিবার-পরিজনকে রক্ষা করা .....            | ১০৬ |
| সঙ্গ পরিত্যাগের বিধান.....                | ১০৭ |
| <br>বাসর রাত .....                        | ১১১ |
| নববধূর প্রতি কোমল আচরণ .....              | ১১১ |
| এক সাথে দুই রাকা‘আত সালাত .....           | ১১২ |
| চুলের অগ্রভাগ ধরে দু‘আ করা .....          | ১১২ |
| বাসর রাতের পরের দিন .....                 | ১১৩ |
| হানিমুন বা মধুচন্দ্রিমা .....             | ১১৩ |

|   |     |
|---|-----|
| দৈহিক মিলন.....                               | ১১৫ |
| উদ্দেশ্য বিশুদ্ধ করা.....                     | ১১৬ |
| সুগন্ধী ব্যবহার.....                          | ১১৭ |
| সহবাসের পূর্বক্ষণ .....                       | ১১৮ |
| সহবাসের দু'আ.....                             | ১১৮ |
| সহবাসের বৈচিত্র্যময় আসন .....                | ১১৯ |
| পায়ুপথে সঙ্গম.....                           | ১২০ |
| ঋতুপ্রাব ও নেফাস চলাকালীন অবস্থার বিধান ..... | ১২০ |
| হস্তমৈথুন নিয়ে বিভ্রান্তি.....               | ১২১ |
| স্ত্রীর চাহিদা পূরণ করা.....                  | ১২১ |
| আজল করা .....                                 | ১২২ |
| একাধিকবার সহবাস করা.....                      | ১২২ |
| সহবাসের পর গোসল করা.....                      | ১২৩ |
| পরস্পরের গোপনীয়তা প্রকাশ না করা। .....       | ১২৩ |
| স্ত্রী যখন একাধিক .....                       | ১২৫ |
| সমপরিমাণ সময় দেওয়া .....                    | ১২৫ |
| পক্ষপাতমূলক আচরণ না করা.....                  | ১২৬ |
| ওয়ালীমা বা বৌভাত .....                       | ১২৯ |
| ওয়ালীমা অনুষ্ঠানের সময় .....                | ১২৯ |
| যাদেরকে আমন্ত্রণ করতে হবে .....               | ১৩০ |
| আমন্ত্রণকারীর আদবকেতা .....                   | ১৩১ |
| অতিথিদের আদবকেতা.....                         | ১৩৩ |
| আমন্ত্রণ গ্রহণ করা দ্বিনি দায়িত্ব .....      | ১৩৩ |
| প্রবেশের জন্য অনুমতি চাওয়া .....             | ১৩৪ |
| সালাম জানানো এবং করমর্দন করা .....            | ১৩৫ |
| অনুষ্ঠানে খাবার খাওয়ার আদব.....              | ১৩৬ |
| সিয়াম পালনকারীদের করণীয়.....                | ১৩৬ |
| আল্লাহর নাম নিয়ে খাবার খাওয়া.....           | ১৩৭ |

|  |            |
|--|------------|
| খাবারের সমালোচনা না করা.....                           | ১৩৭        |
| পরিমিত পরিমাণে খাওয়া.....                             | ১৩৭        |
| সবাই মিলে একসাথে খাওয়ার বারাকাহ.....                  | ১৩৮        |
| ন্যূনতাবে বসা এবং পাত্রের একপাশ থেকে খাওয়া .....      | ১৩৮        |
| খাবার অপচয় না করা.....                                | ১৩৮        |
| আল্লাহর প্রশংসা করা এবং তাঁর নিকট দু'আ করা .....       | ১৩৯        |
| প্রস্তান .....   | ১৪০        |
| <b>নিষিদ্ধ বিয়ে .....</b>                             | <b>১৪১</b> |
| বংশগত সম্পর্কের কারণে যাদেরকে বিয়ে করা নিষিদ্ধ.....   | ১৪২        |
| বৈবাহিক সম্পর্কের কারণে যাদেরকে বিয়ে করা নিষিদ্ধ..... | ১৪৩        |
| দুঃখ সম্বন্ধীয় কারণে নিষিদ্ধ.....                     | ১৪৪        |
| যে সকল নারীকে বিয়ে করা সাময়িকভাবে নিষিদ্ধ.....       | ১৪৫        |
| চারজনের অধিক নারীকে বিয়ে করা.....                     | ১৪৬        |
| একই সাথে দুই বোনকে বিয়ে করা .....                     | ১৪৬        |
| একই সাথে খালা-ফুফু এবং ভাতিজি-ভাগিকে বিয়ে করা .....   | ১৪৬        |
| বিবাহিতা নারীকে বিয়ে করা .....                        | ১৪৬        |
| ব্যভিচারিণীদেরকে বিয়ে করা.....                        | ১৪৭        |
| ইহরাম অবস্থায় বিয়ে করা .....                         | ১৪৭        |
| গর্ভবতী যুদ্ধবন্দিনীকে বিয়ে করা .....                 | ১৪৭        |
| অন্যান্য নিষিদ্ধ বিয়ে .....                           | ১৪৮        |
| মুত'আহ্ বিয়ে .....                                    | ১৪৮        |
| হিল্লে বিয়ে.....                                      | ১৪৯        |
| শিগার বিয়ে .....                                      | ১৫১        |
| তালাক দেওয়ার উদ্দেশ্য নিয়ে বিয়ে করা .....           | ১৫২        |
| অমুসলিমদেরকে বিয়ে করা.....                            | ১৫২        |
| 'আহলে কিতাব' নারীদের সাথে বিয়ের ব্যাপারে সতর্কতা..... | ১৫৪        |
| একটি কঠিন শর্ত .....                                   | ১৫৫        |

|   |            |
|---|------------|
| <b>স্তুর অর্থনৈতিক নিরাপত্তা.....</b>                       | <b>১৫৯</b> |
| মোহর .....  | ১৬১        |
| তত্ত্বাবধায়ন: পুরুষের জন্য একটি গুরুত্বপূর্ণ দায়িত্ব..... | ১৬১        |
| ভরণ-পোষণ .....  | ১৬২        |
| সঙ্গতি অনুযায়ী বাসস্থানের ব্যবস্থা করা .....               | ১৬৫        |
| <b>স্তুর অধিকার স্বামীর কর্তব্য .....</b>                   | <b>১৬৭</b> |
| স্তুকে শাসনের অধিকার ও নিয়ম .....                          | ১৬৮        |
| তালাক .....   | ১৭১        |
| <b>স্বামীর অধিকার স্তুর কর্তব্য .....</b>                   | <b>১৭৩</b> |
| স্বামীর কর্তৃত্বের প্রতি অনুগত থাকা .....                   | ১৭৫        |
| স্বামীর প্রতি কৃতজ্ঞতা ও মমত্ববোধ .....                     | ১৭৭        |
| স্বামীকে কষ্ট না দেওয়া .....                               | ১৭৯        |
| স্বামীর সেবা-যত্ন করা .....                                 | ১৭৯        |
| স্বামীকে পরিত্তপ্ত রাখা .....                               | ১৮০        |
| স্বামীর শারীরিক চাহিদা পূরণ করা .....                       | ১৮০        |
| সন্তান প্রতিপালন ও শিক্ষা প্রদান .....                      | ১৮২        |
| সন্তানদেরকে স্তন্যদান করা.....                              | ১৮৩        |
| স্বামীর সম্পদের রক্ষণবেক্ষণ করা .....                       | ১৮৪        |
| পরপুরুষ থেকে সতর্ক থাকা .....                               | ১৮৫        |
| স্বামীর অনুমতি ছাড়া কাউকে প্রবেশাধিকার না দেওয়া.....      | ১৮৭        |
| মাহুরাম ছাড়া ভ্রমণ না করা .....                            | ১৮৭        |
| অকারণে বাড়ির বাইরে না যাওয়া .....                         | ১৮৮        |
| ভান করা এবং মিথ্যা দাবি পরিহার করা .....                    | ১৮৯        |
| মেয়ের প্রতি এক মায়ের উপদেশ .....                          | ১৮৯        |
| <b>শেষ কথা .....</b>  | <b>১৯২</b> |

## সূচনাকথা

চৌধুরী সাহেব। কল্পিত চরিত্র নয়; বাস্তব দুনিয়ার রক্তমাংসে গড়া জীবিত মানুষ। দেখতে শুনতে প্রচলিত অর্থে নিপাট ভদ্রলোক। সুস্থাম দেহের অধিকারী। আমি আর সে এক সময় কিছু দিন একই এলাকায় বসবাস করেছি। রাস্তা-ঘাটে চলতে ফিরতে দেখা-সাক্ষাৎ হওয়া থেকেই পরিচয়। সে কীভাবে যেন জেনেছে যে, আমি লেখালেখির সাথে জড়িত। সেই থেকে আমার সাথে তার বেশ খাতির-যত্ন। বেশ অনেক বছর ওপার বাংলায় বসবাসের সুবাদে লেখকশ্রেণির লোকদের প্রতি তার বিশেষ সমীহবোধ জন্মেছে।

আমাকে দেখলেই অশুন্দ উচ্চারণে সালাম দিত, বাসায় নিয়ে যাওয়ার জন্য টানাটানি করত। না পারলে রাস্তায় দাঁড়িয়েই কথাবার্তা শুরু করত। এভাবে আজ একটু কাল একটু শুনতে গিয়ে আবিষ্কার করলাম: সাধারণ গোছের লোক হলেও সে আমার জন্য ক্ষুদ্র পরিসরে একজন অসাধারণ কালের সাক্ষী। তার অভিজ্ঞতার ঝুলি এমন অঙ্ককার জগতের বিচিত্র অভিজ্ঞতায় সমৃদ্ধ যে জগতের পর্দা উঠানো আমার নিজের পক্ষে কখনোই সম্ভব নয়। তাই আমি নিজেও কিছু সময় বের করলাম তার সাথে গল্প করার মধ্য দিয়ে কিছু জানতে, কিছু বুঝতে।

আজ এই দাম্পত্য জীবন সংক্রান্ত বইয়ের সূচনাকথা লিখতে গিয়ে তার নিজের জীবন থেকে নেওয়া একটি অভিজ্ঞতা খুবই প্রাসঙ্গিক হয়ে দাঁড়িয়েছে। বর্ণনাকে যথাসম্ভব সংক্ষিপ্ত ও একেবারেই প্রাসঙ্গিক পরিসরের মধ্যে রেখে যতটুকু বলা যায় তার চেয়ে এক চুলও বাইরে যাব না। কারণ খারাপের প্রতি নাফসের সহজাত ঝোঁক থাকে এবং তার প্রতি সে সহজেই আকৃষ্ট হয়। তাই স্থান-কাল-পাত্রের উল্লেখ যথাসম্ভব উহ্য রাখব। এ কারণে কোথাও বর্ণনাকে খুব দ্রুতগতির মনে হতে পারে। এটা ইচ্ছাকৃত।

একবার তিনি বাইরের কোনো একটি দেশে যান বেড়াতে। সেখানে তিনি এক রাতের জন্য একটি হোটেলে একজন শয্যাসঙ্গীসহ রুম বুকিং দেন। চুক্তি অনুযায়ী নির্দিষ্ট দিনে তিনি সন্ধ্যায় সেখানে যাবেন এবং পর দিন দুপুর পর্যন্ত তাকে নিয়ে থাকবেন।

যেদিন সেখানে তার রাত্রীযাপনের কথা সেদিন দুপুরে অচেনা নাম্বার থেকে একটি ফোন এল—‘কেমন আছ?’

প্রশ্নের ধরন এমন যেন কতকালের ঘনিষ্ঠ পরিচয়। বলল, ‘দুপুরে খেয়েছো?’

এরপর ফোনে যত রকম মনভোলানো কথা বলা যায় তার কোনোটাই বাদ গেল না। এরই মধ্য দিয়ে সে নারী তার রুচিবোধ, পছন্দ-অপছন্দ, আগ্রহের বিষয় ইত্যাদির যতখানি সম্ভব খোঁজ নিয়ে নিলো।

নির্দিষ্ট দিনে তিনি যখন সন্ধ্যায় গিয়ে সেখানে উপস্থিত হন তখন তার নির্ধারিত চেক-ইন টাইমের চেয়ে ঘন্টাখানেক দেরি হয়ে গেছে।

রিসিপশন থেকে জানতে পারলেন যে তার সঙ্গিনী তার জন্য রুমে অপেক্ষা করছে। তিনি রুমে গিয়ে নক করলেন। সত্যিই নীল চোখের অসাধারণ রূপবতী এক তরুণী ভেতর থেকে দরজা খুলে তাকে কোমল অভিবাদন জানাল; বয়স বাইশ তেইশের মতো হবে। পরক্ষণেই তাকে আশ্র্য করে দিয়ে আলতো করে জড়িয়ে ধরে তার বুকে মাথা রাখল এসে। বলল: ‘তোমাকে বেশ ক্লান্ত দেখাচ্ছে, নিশ্চয়ই বাইরে অনেক কাজ ছিল; তাই বোধ হয় দেরি হয়ে গেছে।’

সে তাকে হাত ধরে নিয়ে গিয়ে বিছানায় বসাল, এক প্লাস পানি এনে দিল। তারপর নিজ হাতে তার জুতো-মোজা খুলে দিল। শাটের বোতাম খুলে দিল এবং বোতাম খোলার সময় বুকে একটা চুম্বও এঁকে দিল।

মেয়েটি ফোনালাপে জেনে নিয়েছিল চৌধুরী কেমন পোশাক পছন্দ করে—ভারতীয় নারীদের মতো শাড়িতে, না কি ইউরোপিয়ানদের মতো জিন্স টি শাটে। সে সাধ্যমতো চেষ্টা করেছে নিজেকে তার পছন্দের সাজে সাজাতে।

ওয়াশরুম থেকে বেরিয়ে চৌধুরী দেখল হাতে একটি তোয়ালে আর একটি টি-শাট নিয়ে মেয়েটি দরজার কাছে দাঁড়িয়ে। টি টেবিলে হাঙ্কা নাস্তা, ফল আর কফি। বলল, সে কেবল তাকে আপ্যায়নের জন্য এই নাস্তা নিজে বানিয়েছে। তোয়ালে দিয়ে মাথা ভালো করে মুছে দিয়ে গেঞ্জিটি গায়ে পরিয়ে দিল।

এরপর নাস্তা খাইয়ে দিল নিজ হাতে আদরের সাথে যত্ন করে। ফলটা কাটল। একটি একটি করে টুকরো তাকে খাইয়ে দিল। চৌধুরী খেয়াল করে দেখল: প্রত্যেকটি

## সূচনাকথা

টুকরো কেটে সে তাকে আগে এক কামড় খাইয়েছে, তারপর বাকি অংশটুকু নিজে খেয়েছে। ভুলেও সে নিজে কোনো টুকরোয় আগে কামড় দেয়নি। চা পান করে তারপর বিছানায় গেল। তার মাথাটা পরম যত্নে বুকে নিয়ে শুল, তারপর মাথায় হাত বুলিয়ে দিতে থাকল আলতো করে। আর তার সাথে তারই আগ্রহের নানা বিষয় নিয়ে গল্ল করতে শুরু করল। সয়ত্বে খেয়াল রাখল কোন বিষয়ে কথা বলতে সে উৎসাহবোধ করে, আনন্দ পায়। কোনো বিষয়ে তার সাথে দ্বিমত পোষণ করল না; তর্ক করল না। বরং সম্ভব হলে তার কথাকে সমর্থন করে কিছু যুক্ত করল। সে নিজে বেশি কথা বলেনি, বরং সে ছিল অধিকাংশ ক্ষেত্রে একজন আগ্রহী ও আদর্শ শ্রোতা: যার সাথে মন খুলে কথা বলা যায়, কথা বলে আনন্দ পাওয়া যায়।

তার বলা যেসব কথা চৌধুরী আমাকে শুনিয়েছিল তার মধ্যে আমার একটি কথা বিশেষভাবে মনে আছে। সে বলেছিল: ‘গাছ যেমন মানুষের ছাড়া বিষাক্ত কার্বন-ডাই-অক্সাইড শুষে নেয় আর অক্সিজেন নির্গত করে মানুষকে সজীবতা দেয়, সৃষ্টি জগতে নারী হলো পুরুষের জন্য তেমনই। বাইরের কঠোর কঠিন জগতে কাজ করতে করতে পুরুষ ক্লান্ত হয়ে যখন নারীর কাছে আসবে, তখন সে তার সকল ক্লান্তি-শ্রান্তি শুষে নিয়ে তাকে আবার সম্পূর্ণ সজীব ও সতেজ করে দেবে। তুমি আমার কাছে এক রাতের জন্যই হয়তো এসেছ; আর কখনও আসবে কি না জানি না; আমি চাই আজকের রাতের পূর্বে তোমার শরীরে জমা সকল ক্লান্তি, মনের সকল শ্রান্তি আমি দূর করে তো, আকে সম্পূর্ণ সতেজ ও সজীব করে দেব—এতেই আমার সার্থকতা।’

কথাগুলো আমার নিজের ভাষাতে লিখছি, তবেই মোটেই রঙ চরিয়ে নয়। চৌধুরীর মনোহরণের জন্য সেই নারীর কৃত ক্রিয়াকলাপের বর্ণনা থেকে যতটুকু মনে আছে এবং তুলে ধরার যোগ্য আমি কেবল ততটুকুই লিখলাম। তবে এটা কেবল টিপ অব অ্যান আইসবার্গ।

আমি চৌধুরীর এই ঘটনার বর্ণনা শোনার পর কৌতুহলবশত জিজ্ঞেস করলাম, ওরা তো নিছক দেহপসারিণী, ওদের সম্পর্কে বরং উল্টো অনেক জনশ্রুতি রয়েছে; কিন্তু সে আপনার সাথে এমন মনোহরী আচরণ কেন করল?

চৌধুরী আমাকে বলল, তার এমন ধরনের অভিজ্ঞতা একবার নয় একাধিকবার হয়েছে। এবং সে নিজেও এ বিষয়ে জানতে চেষ্টা করেছে। সে যা জানতে পেরেছে তার সারমর্ম হলো: দেহব্যবসার এই পেশার পেছনে বর্তমান দুনিয়ার অনেক বড় বড় ধনাট্য ব্যক্তি ও প্রতিষ্ঠানের গোপন বিনিয়োগ আছে। তারা পতিতাদেরকে নানা রকম প্রশিক্ষণের ব্যবস্থা করছে। তাদের এই ব্যবসায় তাদের মূল প্রতিদ্বন্দ্বী হলো পরিবার

ব্যবস্থা ও সুখী দাম্পত্য জীবন। কোনো মানুষ যদি সুখী দাম্পত্য জীবন যাপন করে তাহলে তাকে তাদের খন্দের বানানো যায় না সহজে। পক্ষান্তরে মানুষের দাম্পত্য জীবনে অশান্তি সৃষ্টি, কিংবা মানুষের চরিত্র নষ্ট করতে পারলে সহজেই তাদেরকে তাদের খন্দের বানানো যায়। আর এ লক্ষ্যে সমাজের বিভিন্ন স্তরের মানুষের জন্য তাদের বিভিন্ন রকম প্রোগ্রাম রয়েছে।

আর পতিতাদেরকে এমন অনুগত ও মনোহরী স্তীসুলভ আচরণের শিক্ষা দেওয়া হয় নিয়মিত প্রশিক্ষণের মাধ্যমে; যেন স্ত্রীদের বিপরীতে একজন পুরুষ এদের কাছে এসেই অধিক প্রশান্তি লাভ করে। গবেষণা থেকে তাদের কাছে এটা প্রমাণিত হয়েছে যে, পুরুষকে কেবল শারীরিক সুখ দিয়ে সত্যিকার অর্থে আকৃষ্ট করা যায় না; এটা ক্ষণিকের। তাদেরকে নিয়মিত খন্দের বানাতে হলে তাদের হৃদয় মনে শান্তির পরশ দিয়ে তাদেরকে পাগল করে দিতে হবে। যেন তার মন ঘরে নয়, এখানেই পড়ে থাকে—যেন বারবার ফিরে আসে।

## ২.

শেষ জামানায় স্টোর অক্ষুণ্ণ রাখা হাতে জ্বলন্ত অঙ্গার নিয়ে থাকার মতো কেন হবে তার আরও একটি কারণ যেন আমার কাছে উন্মোচিত হলো চৌধুরীর কথা শুনে।

দেহ ব্যবসার ইতিহাস অনেক দীর্ঘ। বর্তমান ও অতীতের অনেক জাতির মধ্যেই এই ঘৃণ্য কর্মের চর্চা ছিল এবং আছে। কিন্তু বিংশ শতাব্দীর এই ধর্মনিরপেক্ষ গণতান্ত্রিক সভ্যতা এতে যে-পেশাদারিত্ব যুক্ত করেছে তা অতীতের কোনো যুগে ছিল বলে আমার জানা নেই।

অর্থের বিনিময়ে ক্ষণিকের সঙ্গী হিসেবে আসা একজন কাস্টমারের সাথে কৃত আচরণকে দাম্পত্য জীবনের স্থায়ী সঙ্গীর সাথে মেলানোর কোনো অবকাশ নেই। কারণ দাম্পত্য সম্পর্ক ক্ষণিকের জন্য কারও শয্যাসঙ্গী হওয়া নয়—সেখানে সবসময় মুখে কৃত্রিম হাসি লাগিয়ে রাখা যায় না, ‘কাস্টমার ইজ অলওয়েজ রাইট’ বলা যায় না। এখানে স্বামী-স্ত্রীরা দীর্ঘ দিন একত্রে বসবাস করেন। বাস্তব জীবনের নানা রকম সুবিধা-অসুবিধা, প্রাণি-অপ্রাণি, পরিবার-পারিবারিকতা, অর্থ-আর্থিকতা, সচ্ছলতা-অসচ্ছলতা, সমাজ-সামাজিকতা, নিত্য দিনের অভ্যাস আচরণের বিচ্চি মিল-অমিলসহ নানারকম টানাপোড়েনের মধ্য দিয়ে সংসার জীবন যাপন করেন তারা। প্রায় ভিন্ন প্রকৃতির দুজন মানুষকে এভাবে দীর্ঘ দিন মানিয়ে চলাটাই বরং এখানে একটা বড় চ্যালেঞ্জ। তাই দাম্পত্য জীবনের প্রতিটি দিন, প্রতিটি সন্ধ্যা মধুময় না-ও হতে পারে।

তবে হ্যাঁ, বিপরীত প্রান্তে এটাও ফ্রুব সত্য যে, তিক্ততা যদি মধুরতার উপর জয়লাভ করে, ভালোলাগার উপর যদি বিরক্তি প্রাধান্য বিস্তার করে, মিলের চেয়ে অমিল যদি বেশি হয়, মাতেক্ষেত্রে চেয়ে দ্বিমত যদি মাত্রা ছাড়ায়, আকর্ষণের চেয়ে অনীহা যদি প্রবল হয় তবে দাম্পত্য সুখ বিদায় জানাবে; হয়তো ভাঙ্গও অনিবার্য হয়ে পড়বে। সেক্ষেত্রে কেবল সন্তানের নোঙরই যদি দুজনকে এক ঘাটে বেঁধে রাখে, তাতে জীবন হয়ত কেটে যাবে, কিন্তু তাতে রঙ থাকবে না।

দাম্পত্য জীবনে যে এমন মনোহরী আচরণের প্রয়োজন নেই তা নয়, বরং আরও বেশি প্রয়োজন। এখানেও প্রয়োজন মানসিক ও শারীরিক দিক থেকে একের সাথে অন্যের পার্থক্য ও চাহিদাকে সম্মানের সাথে মূল্যায়ন করা। এখানেও থাকতে হবে নিজের গল্ল বলার চেয়ে অন্যের গল্ল শোনার অধিক আগ্রহ। একে অন্যের ভুলক্রটি ক্ষমাসুন্দর দৃষ্টিতে দেখা; কষ্ট ভুলে গিয়ে মুখে হাসির দৃতি ছড়ানো। দুঃখ-বেদনার উপর ধৈর্যের শক্ত প্রলেপ দিয়ে আনন্দ প্রকাশ করা। অপ্রাপ্তির খাতা বন্ধ রেখে প্রাপ্তির ফর্দ প্রস্তুত করা। পরম্পরের প্রতি কৃতজ্ঞতা জানানো, পরম্পরকে সুখী ও খুশী করতে নিজের চাওয়ার উপর অন্যের চাওয়াকে গুরুত্ব দেওয়া। সর্বোপরি প্রয়োজন উভয়ের ইচ্ছা অনিছ্ছা, পছন্দ অপছন্দকে উভয়ের শ্রষ্টা মহান আল্লাহর ইচ্ছার কাছে সমর্পণ করা।

দেহপসারিণীদের বিপরীতে আজ পরিবারকে ধরে রাখা এক বড় রকম চ্যালেঞ্জ হয়ে দাঁড়িয়েছে—বিশেষত অমুসলিম এবং নামকাওয়াস্তে মুসলিম দম্পত্তিদের জন্য। মূল ভিত্তিগুলো নড়বড়ে হলেও একটা সময়ে ইসলাম ছাড়া অন্যান্য ধর্মাবলম্বীদের মধ্যেও নৈতিকতার একটা মাত্রা ছিল। কিন্তু বস্তুবাদ ও ধর্মনিরপেক্ষতার ভাটার টানে সে ঠুনকো নৈতিকতার পলি তলায় জমার আগেই ভেসে গেছে। একমাত্র প্র্যাকটিসিং মুসলিমদের স্ত্রী ছাড়া কমবেশি সকলকেই আজ যেন প্রশিক্ষিত ও পেশাদার বারাঙ্গনাদের সাথে প্রতিযোগিতায় নামতে হবে সংসার টিকিয়ে রাখতে।

তবে তার অর্থ এই নয় যে প্র্যাকটিসিং মুসলিমদের জন্য সংসার সুখ বজায় রাখার জন্য কোনো নির্দেশনা প্রয়োজন নেই। মানুষ যতই ধার্মিক হোক না কেন, যে সমাজে সে বাস করে তার প্রত্বাব থেকে সে নিজেকে সম্পূর্ণ মুক্ত রাখতে কখনোই পারবে না। সচেতন মুসলিমদের দাম্পত্য জীবনেও আজ অশান্তি তুষের আগুনের মতো ধিকিধিকি জ্বলছে। ‘ভালোবাসার চাদর’ শিরোনামের এই বইটি মূলত তাদেরই জন্য।

দুঃখজনক হলেও সত্য যে আজ এই জাতির পুরুষরা যেমন পৌরুষ হারিয়েছে—সাহসিকতা, ন্যায়পরায়ণতা ও দায়িত্বশীলতার সংমিশ্রণে সৃষ্টি চারিত্রিক দৃঢ়তা

খুইয়েছে; তেমনি নারীরাও হারিয়েছে তাদের নারীসুলভ বিন্দুতা, আনুগত্যপরায়ণতা ও মমত্বোধের সংমিশ্রণে তৈরি চারিত্রিক সুষমা।

স্বামী তার স্ত্রীদের প্রতি কতটা ন্যায়পরায়ণ, কতটা দায়িত্বশীল, কতটা যত্নবান হতে পারেন তার অসংখ্য উদাহরণ রয়েছে আমাদের মুসলিমদের ইতিহাসে। স্বয়ং আল্লাহর নবি মুহাম্মাদ ﷺ তার স্ত্রীকে উটে চড়তে সাহায্য করার জন্য হাঁটু গেড়ে বসেছেন যেন স্ত্রী তার হাঁটুকে সিঁড়ির মতো ব্যবহার করে উটে আরোহণ করতে পারেন।

অন্যদিকে স্বামীর প্রশান্তির জন্য একজন স্ত্রী কতটা চিন্তিত হতে পারে তা দেখতে পাই অসংখ্য নারী সাহাবীদের জীবনে। তেমনই একজন ছিলেন উম্মু সুলাইম (রা.)। তিনি তখন ছিলেন আবু তালহা (রা.)-এর স্ত্রী। তাদের ছিল একটি মাত্র ছেলে। আবু তালহা তাকে খুব ভালোবাসতেন। কিন্তু এক সময় ছেলেটি অসুস্থ হয়ে পড়ে, বেশ অসুস্থ। আবু তালহা সাধারণত ফজরের সময় চলে যেতেন সালাতে, এরপর আল্লাহর রাসূলের সাথে থাকতেন মধ্যাহ্ন পর্যন্ত। এরপর এসে খেয়ে সামান্য বিশ্রাম নিয়ে আবার চলে যেতেন এবং আসতেন ‘ইশার সালাতের পর।

ছেলের অসুস্থতার সময়ে একদিন সকালে আবু তালহা মাসজিদে কিংবা আল্লাহর রাসূলের সাথে সাক্ষাৎ করতে চলে যান এবং একবারে রাতে ফিরে আসেন; আবার সাথে কজন মেহমানও নিয়ে আসেন। তার অনুপস্থিতির এই সময়েই তার আদরের ছেলেটি মারা যায়। তার স্ত্রী উম্মু সুলাইম ছেলেকে এমনভাবে আবৃত করে তার ঘরে রেখে দেন, যেন সে আরামে ঘুমুচ্ছে। অন্য সকলকে অনুরোধ জানান যে, তিনি নিজে না বলা পর্যন্ত কেউ যেন তার স্বামীকে তার ছেলের মৃত্যুসংবাদ না জানায়।

রাতে আবু তালহা এসে জিজ্ঞেস করেন, ‘ছেলেটা কেমন আছে আজ?’

তিনি বলেন, ‘অসুখ হওয়ার পর থেকে আজকের মতো শান্ত সে আর কোনো দিন ছিল না; সে এখন বেশ আরামেই আছে।’

উম্মু সুলাইম সবার জন্য রাতের খাবারের ব্যবস্থা করেন। মেহমানরা খাবার খেয়ে চলে গেলে আবু তালহা বিছানায় যান। উম্মু সুলাইম গায়ে সুগন্ধী লাগান এবং স্বামীর জন্য এমন সুন্দরভাবে নিজেকে সাজান যেভাবে কখনও ইতিপূর্বে সাজেননি। তারপর তিনি বিছানায় যান এবং স্বামীর সাথে এক মধুময় রাত্রীযাপন করেন।

এরপর যখন রাত শেষ হয়ে আসে, তখন তিনি স্বামী আবু তালহাকে বলেন, ‘আচ্ছা কেউ যদি কারও কাছে কোনো আমানত রেখে তা আবার ফেরত চায়, তাহলে তার কি কোনো অধিকার আছে তা ফেরত না দেওয়ার?’

‘অবশ্যই না।’

‘মহাপরাক্রমশালী আল্লাহ আপনাকে একটি পুত্রসন্তান দিয়েছিলেন আমানত হিসেবে; এখন তিনি তার আমানত ফেরত নিয়ে গেছেন। অতএব ধৈর্য ধারণের মাধ্যমে তাঁর কাছ থেকে এর প্রতিদান কামনা করুন।’

নিশিত্বারে আবু ছালহা গোসল করে পবিত্র হয়ে আল্লাহর রাসূলের কাছে যান এবং তার সাথে সালাত আদায় করেন। তারপর তিনি তাঁকে গতরাতের সব ঘটনা বলেন। রাসূলুল্লাহ ﷺ সব শব্দে এই দম্পত্তির জন্য দু‘আ করে বলেন, ‘আল্লাহ আমাদের গতরাতের মধ্যে বারাকাহ দান করুন।’

সেই রাতেই উম্মু সুলাইম (রা.) আবার গর্ভবতী হয়ে পড়েন।

বর্তমান সময়ের প্রেক্ষাপটে এমন দৃষ্টান্ত নিশ্চয়ই খুব বেখাঙ্গা মনে হতে পারে আমাদের অনেকের কাছে। কিন্তু সুখের নিশ্চয়তা এখানেই। আমরা যতই চেষ্টা করি, যতই পরিশ্রম করি, আমরা ততক্ষণ পর্যন্ত সুখী দাম্পত্য জীবনের নিশ্চয়তা পাব না যতক্ষণ আমাদের দাম্পত্য সম্পর্ককে আল্লাহর সন্তুষ্টি অর্জনের মাধ্যম না বানাব, যতক্ষণ না আমাদের হাসি-কান্না, আনন্দ-বেদনা ও সুখ দুঃখের মূল অনুষঙ্গ হবে আল্লাহর সন্তুষ্টি অর্জন কিংবা তার রোষানল থেকে বাঁচার তামাঙ্গা।

বিয়ে ছাড়াও পৃথিবীতে আজ লক্ষ লক্ষ নারী-পুরুষ এক সাথে থাকছে—নাম দিয়েছে লিভ টুগেদার, ট্রায়াল ম্যারেজ—আরও কত কী। শারী‘আহ নিয়মে সম্পাদিত আমাদের বিয়ে ও তাদের লিভ টুগেদারের মধ্যে সত্যিকার পার্থক্য রেখা স্পষ্ট হবে তখনই, যখন আল্লাহর নাম নিয়ে শুরু করা পবিত্র বন্ধন পরিচালিত হবে আল্লাহর সন্তুষ্টির উদ্দেশ্যে। আমাদের প্রতিটি কথা, আচরণ পরিচালিত ও নিয়ন্ত্রিত হবে আল্লাহর সন্তুষ্টি কামনা এবং অসন্তুষ্টি থেকে বেঁচে থাকার উদ্দেশ্য নিয়ে। সবার জন্য এই কামনাই রইল।

আবু তাসমিয়া আহমদ রফিক  
প্রধান সম্পাদক  
সিয়ান পাবলিকেশন

## কল্যাণময় বন্ধন

মহান আল্লাহ আমাদের এই পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এবং এই পৃথিবী কীভাবে চলবে, তার বিধানও তিনি দান করেছেন। তাঁর নির্ধারিত নিয়মেই বেঁচে থাকার জন্য আমাদের খাওয়ার প্রয়োজন হয়; নিঃশ্বাস নিতে বাতাসের প্রয়োজন হয়; গাছপালার জন্য বৃষ্টির প্রয়োজন হয়; এমন আরও অজস্র বিধান। সকল কিছুর জোড়ায়-জোড়ায় সৃষ্টি হওয়া আল্লাহর গুরুত্বপূর্ণ বিধানসমূহের অন্যতম। এ সকল জোড়া থেকেই বয়ে চলছে সৃষ্টির আবহমান স্রোতধারা। এ প্রসঙ্গে আল্লাহ তা‘আলা বলেন:

﴿وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ﴾

«আমি সকল জিনিষ জোড়ায়-জোড়ায় সৃষ্টি করেছি, যাতে তোমরা হৃদয়ঙ্গম করো।<sup>[১]</sup>»

একইভাবে মানবজাতির মাঝেও রয়েছে একটি জুটি—নর ও নারী। আমাদের পিতা আদম এবং মাতা হাওয়ার মাধ্যমেই শুরু হয়েছে মানবজাতির ক্রমবিকাশ। এই যুগল থেকেই আল্লাহ সৃষ্টি করেছেন পৃথিবীর পরবর্তী সকল মানুষকে। তিনি বলেন:

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ نُفُسٍّ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً﴾

«হে মানবমণ্ডলী! তোমরা তোমাদের রবকে ভয় করো, যিনি তোমাদেরকে একই ব্যক্তি হতে সৃষ্টি করেছেন ও তা হতে তদীয় সহধর্মিণী সৃষ্টি করেছেন এবং তাদের উভয় হতে বহু নর ও নারী ছড়িয়ে দিয়েছেন।<sup>[২]</sup>»

ইসলামী শারী‘আতের বই-পুস্তকে বিবাহ বোঝাতে যে শব্দটি ব্যবহৃত হয় তা হলো, ‘নিকাহ’। আরবি ভাষার প্রাচীন প্রয়োগ অনুযায়ী এর অর্থ হলো ‘দৈহিক মিলন’।

[১] সূরা আদ-দারিয়াত ৫১:৪৯।

[২] সূরা আন-নিসা ৪:১।

কিন্তু সেই সময় বিয়ের চুক্তিকে বোঝানোর জন্য ঐ শব্দটিই ব্যবহৃত হতো। কারণ বিয়ের মধ্য দিয়েই দৈহিক মিলনের বিষয়টি বৈধ হতো।<sup>[৩]</sup>

আল্লাহ তা'আলা মু'মিনদেরকে বিয়ে করার জন্য এবং তারা যাতে তাদের অধীনস্থদের বিয়ে করার ক্ষেত্রে সাহায্য করে, সে জন্য নির্দেশ দিয়েছেন। তিনি বলেন:

» وَأَنِّكُحُوا الْأَيَامِ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَاءِكُمْ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءٌ يُغْنِيهِمْ  
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِمْ «

« তোমাদের মধ্যে যারা বিয়েহীন, তাদের বিয়ে সম্পাদন করে দাও এবং তোমাদের দাস ও দাসীদের মধ্যে যারা সৎকর্মপরায়ণ তাদেরও। তারা যদি নিঃস্ব হয়, তবে আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে সচ্ছল করে দেবেন; আল্লাহ প্রাচুর্যময়, সর্বজ্ঞ।<sup>[৪]</sup> »

রাসূল ﷺ নিজেও যুবকদেরকে বিয়ে করার নির্দেশ দিয়েছেন এবং যুবকদের মধ্যে যারা বিয়ের ভরণ-পোষণ নির্বাহ করতে অসমর্থ তাদেরকে তিনি সিয়াম পালন করার উপদেশ দিয়েছেন, যাতে তারা নিজেদের যৌন চাহিদাকে নিয়ন্ত্রণে রাখতে সমর্থ হয়। ইবনে মাস'উদ ৫ বর্ণনা করেন, আমরা যুবক অবস্থায় একদিন রাসূল ﷺ-এর সাথে ছিলাম এবং আমাদের সম্পদ বলতে কিছুই ছিলো না। তাই রাসূল ﷺ বললেন:

» يَا مَعْشِشَ الشَّبَابِ، مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاعَةَ فَلْيَتَرْوَجْ، فَإِنَّهُ أَغْضُ لِلْبَصَرِ، وَأَحْصَنْ  
لِلْفَرْجِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ، فَإِنَّ الصَّوْمَ لَهُ وِجَاءُ «

« হে যুবক সম্প্রদায়, তোমাদের মধ্যে যারা বিয়ের সামর্থ্য রাখে সে যেন বিয়ে করে; কেননা তা চক্ষুকে অবনত করে এবং লজ্জাস্থানকে হেফাজত করে। আর যে এর সামর্থ্য রাখে না, তার কর্তব্য সিয়াম পালন করা; কেননা তা যৌন উদ্দেজনার প্রশমন ঘটায়।<sup>[৫]</sup> »

আজকাল মুসলিম সমাজেও অবিবাহিত নর-নারীর সংখ্যা আশঙ্কাজনক হারে বেড়ে গেছে। এর পরিণতি হতে পারে খুব ভয়াবহ।

[৩] লিসানুল 'আরাব।

[৪] সূরা আন-নূর ২৪:৩২।

[৫] আল-বুখারি, খণ্ড ৭, অধ্যায় ৬৭, হাদীস নং ৫০৬৬, পৃষ্ঠা ২১; মুসলিম, খণ্ড ৪, অধ্যায় ১৬, হাদীস নং ৩৩৯৮, পৃষ্ঠা ১৫; জামে' আত-তিরমিয়ি, খণ্ড ২, অধ্যায় ৯, হাদীস নং ১০৮১, পৃষ্ঠা ৪৫২-৪৫৩; সুনান আবু দাউদ, খণ্ড ২, অধ্যায় ১২, হাদীস নং ২০৪৬, পৃষ্ঠা ৪৯৯; সুনান আন-নাসাই, খণ্ড ৪, অধ্যায় ২৬, হাদীস নং ৩২১১, পৃষ্ঠা ৮৮-৮৯; সুনান ইবনু মাজাহ, খণ্ড ৩, অধ্যায় ৯, হাদীস নং ১৮৪৫, পৃষ্ঠা ৫৭-৫৮।

ব্যক্তিগত পর্যায়ে কেউ অবিবাহিত থাকলে তা মুসলিম সমাজের জন্য কোনো দুষ্কৃতি নলে মনে না-ও হতে পারে। তবে ইসলামে ব্যাপারটি তথাকথিত অন্যান্য ধর্মের চেয়ে একেবারেই আলাদা। ইসলামে প্রত্যেকটি বিষয়কে বিচার করা হয় কোনো একটি লিখিত সম্পত্তি সমাজের জন্য কতটা কল্যাণকর বা কতটা ক্ষতিকর তার আলোকে। তাই নারী-পুরুষ অবিবাহিত থাকলে মুসলিম সমাজের ওপর এর প্রভাব কতটা ক্ষতিকর তা সূক্ষ্মতে চাইলে অমুসলিম জাতি-গোষ্ঠীগুলোর দিকে তাকাতে হবে। আমরা প্রতিদিন শাক্ত্যক্ষ করছি কীভাবে অমুসলিম সমাজগুলোতে যৌন বিকৃতি ও এ ধরনের নানাবিধি পাখাচার তাদের সমাজকে সংয়োগ করে যাচ্ছে। অথচ এর সবকিছু তাদের কাছে একেবারেই স্বাভাবিক ও গ্রহণযোগ্য ব্যাপার। আর এ সবকিছুর পেছনে মূল কারণ হলো তাদের বিয়ে থেকে দূরে থাকার এক প্রকৃতিবিরুদ্ধ সিদ্ধান্ত।

নবী মুহাম্মাদ ﷺ বলেন, বিয়ে করা তাঁর সুন্নাহ্ এবং তাঁর সুন্নাহ্ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেওয়ার ব্যাপারে তিনি আমাদেরকে সাবধান করেছেন। যদিও তিনি সালাতেই সবচেয়ে বেশি আনন্দ ও সন্তুষ্টি খুঁজে পেতেন, তবে পার্থিব যেসব উপভোগ্য ব্যাপার রয়েছে যেমন, স্ত্রীসঙ্গ বা সুগন্ধি—এসবের প্রতি তিনিও আকর্ষণ অনুভব করতেন। শুধুমাত্র রক্ত-মাংসের তৈরি একজন রাসূলের ক্ষেত্রেই এমনটি হওয়া স্বাভাবিক। আনাস †  
বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেন:

» حُبِّبَ إِلَيَّ مِنْ دُنْيَاكُمُ النِّسَاءُ وَالْطِيبُ وَجَعَلْتُ قُرْآنَ عَيْنِي فِي الصَّلَاةِ «

« তোমাদের এ পার্থিব জগৎ হতে আমার নিকট নারী ও সুগন্ধি প্রিয় করে দেওয়া হয়েছে। আর সালাতের মধ্যে আমার চোখের শীতলতা রেখে দেওয়া হয়েছে।<sup>[৬]</sup> »

‘আইশাহ (রবিয়াল্লাহ ‘আনহা) বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“বিয়ে আমার সুন্নাহ্। যে আমার সুন্নাহ্ মোতাবেক কাজ করে না, সে আমাদের দলভুক্ত নয়। তোমরা বিয়ে করো। কেননা আমি তোমাদের সংখ্যাধিক্য নিয়ে অন্যান্য উন্মত্তের সামনে গর্ব করবো। অতএব যার সামর্থ্য আছে সে যেন বিয়ে করে। আর যার নাই সে যেন সিয়াম পালন করে। কেননা সিয়াম একে (জৈবিক চাহিদাকে) প্রশংসিত করে।”<sup>[৭]</sup>

[৬] হাদিসটি আহমাদ, আন-নাসা’ঈ এবং অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। শায়েখ আল-আলবানি সহীহল জামে’, হাদিস ৩১২৪-এ হাদিসটিকে সহীহল বলে মত দিয়েছেন।

[৭] সুনান ইবনু মাজাহ, খণ্ড ৩, অধ্যায় ৯, হাদিস নং ১৮৪৬, পৃষ্ঠা ৫৮-৫৯। শায়েখ আল-আলবানি আস-সাহীহাহ, হাদিস ২৩৮৩-এ হাদিসটিকে সহীহল বলে মত দিয়েছেন।

## ভালোবাসার চাদর

পূর্বেকার নবীদের কিছু অনুসারী আত্ম-পরিশুদ্ধির মাধ্যম হিসেবে সন্ন্যাসব্রতকে বেছে নিয়েছিল এই ভেবে যে, হয়তো তা তাদেরকে আল্লাহর নৈকট্য লাভে সাহায্য করবে। কিন্তু দিন শেষে তারা তাদের লক্ষ্য অর্জনে ব্যর্থ হয়েছে। কারণ তারা যেমনটি আশা করছিল তেমনটি ঘটেনি। এর কারণ খুবই স্পষ্ট। আর তা হলো এই ধরনের চর্চা মানব প্রকৃতির বিরুদ্ধে যায়। একারণেই ইসলামে বৈরাগ্যবাদের কোনো স্থান নেই।

‘আইশাহ (রবিয়াল্লাহু ‘আনহা) বর্ণনা করেন যে, সুলামি গোত্রের এক লোক হাকিম ইবনু উম্যাইয়্যাহ আস-সুলামির কন্যা খুওয়াইলাহ তাঁর সাথে সাক্ষাৎ করতে এলেন। খুওয়াইলাহর বিষে হয়েছিল ‘উসমান ইবনু মায’ উনের সাথে। আল্লাহর রাসূল ﷺ তাকে দেখতে পেলেন এবং তার অপরিপাটি চেহারাও লক্ষ্য করলেন। তাই তিনি ‘আইশাহকে জিজ্ঞেস করলেন, “হে ‘আইশাহ! খুওয়াইলাহকে এতো মিলিন এবং অপরিপাটি দেখাচ্ছে কেন?”’ ‘আইশাহ (রবিয়াল্লাহু ‘আনহা) উত্তরে বললেন, “হে আল্লাহর রাসূল! এই মহিলার স্বামী দিনের বেলা সিয়াম পালন করে আর রাতের বেলা সালাত আদায় করে; এমন যেন তার স্বামীই নেই। আর তাই সে তার নিজের ব্যাপারে যত্নশীল নয়।” অতঃপর আল্লাহর রাসূল ﷺ ‘উসমান ইবনু মায’ উনকে ডেকে পাঠালেন এবং তাকে বললেন, “হে ‘উসমান! তুমি কি আমার সুন্নাহকে অপচন্দ করো বলেই এমনটি করছো?” সে উত্তর দিলো, “আল্লাহর কসম! সে জন্য নয়, হে আল্লাহর রাসূল! বরং আমার পুরো উদ্দেশ্যই হলো আপনার সুন্নাহর অনুসরণ করা।” তখন আল্লাহর রাসূল ﷺ বললেন:

“নিশ্চয়ই আমি ঘুমাই এবং সালাত আদায় করি, কোনো দিন সিয়াম পালন করি আবার কোনো দিন করি না এবং নারীদেরকে বিয়ে-শাদী করি। কাজেই হে ‘উসমান, আল্লাহকে ভয় করো এবং তাঁর প্রতি আনুগত্যশীল হও। কারণ তোমার ওপর তোমার পরিবারের, তোমার মেহমানের এবং তোমার নিজের (শরীরের) হক রয়েছে। তাই (কোনো দিন) সিয়াম রাখো আর (কোনো দিন) রেখো না, (রাতে কিছু অংশ) সালাত আদায় করো আবার (কিছু অংশ) ঘুমাও।”<sup>[৮]</sup>

‘আইশাহ (রবিয়াল্লাহু ‘আনহা) থেকে বর্ণিত অন্য একটি বর্ণনায় আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেন:

[৮] আহমাদ এবং আবু দাউদ হাদীসটি সংকলন করেছেন। শায়েখ আল-আলবানি ইরওয়াহু আল গালীল, হাদীস নং ২০১৫-এ হাদীসটিকে সহীহল বলে মত দিয়েছেন।

“হে ‘উসমান! সম্মানসূর্যত তো আমাদের ওপর ফরজ করা হচ্ছিনি। আমার মধ্যে কি তোমার  
জন্য উত্তম আদর্শ নেই? আল্লাহর শপথ! আমি তোমাদের চেয়ে আল্লাহকে বেশি ভয় করি,  
এবং আল্লাহর সেখানে দেওয়া গাঞ্জিসমূহের ব্যাপারে তোমাদের চেয়ে আমিই বেশি সতর্ক।”<sup>[৯]</sup>

### গ্রাহিত জীবনে বিয়ের সুফল

যেহেতু সর্বজ্ঞ এবং সর্বজ্ঞানী আল্লাহ বিয়ে করাকে আমাদের জন্য নির্ধারিত করে  
দিয়েছেন, তাই এটা নিশ্চিত যে, বিয়ের মধ্যে আমাদের জন্য রয়েছে অনেক সুফল  
আর উপকারিতা। নিম্নে এসব উপকারিতারই একটা তালিকা দেয়া হলো—

### দীন এবং ঈমানের সুরক্ষা

সৎকর্মপরায়ণ স্বামী-স্ত্রী একে অপরকে সাহায্য, সহায়তা এবং উপদেশ প্রদানের  
মাধ্যমে আল্লাহর আনুগত্য করতে এবং পাপাচার থেকে নিজেরা বেঁচে থাকতে  
পরম্পরকে সহযোগিতা করে। আনাস رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“আল্লাহ যখন কাউকে একজন সৎকর্মশীল স্ত্রী দান করেন, তিনি তাকে তার দীনের অর্ধেক  
সুরক্ষায় সাহায্য করেন। সে যেন বাকি অর্ধেকের ব্যাপারে আল্লাহকে ভয় করে চলে।”<sup>[১০]</sup>

### সতীত্বের সুরক্ষা

প্রকৃতিগতভাবেই পুরুষ যেমন নারীর প্রতি আকর্ষণ বোধ করে, নারীও ঠিক  
তেমনিভাবেই পুরুষের প্রতি আকর্ষণ বোধ করে। আর শয়তান নারী-পুরুষের এই  
পারম্পরিক আকর্ষণবোধের সুযোগ নিয়ে থাকে। নারী পুরুষের নিকটবর্তী হলে কিংবা  
তার পাশ দিয়ে অতিক্রম করলে শয়তান পুরুষের কামোচ্ছাসকে তাড়িত করে; নারীর  
প্রতি তাকে প্রলুক্ত করে; নারীকে পুরুষের সামনে এক আকর্ষণীয় এবং মহনীয় অবয়বে  
মেলে ধরে। ফলে তারা যৌনাচার ঘটিত বিভিন্ন রকম পাপকার্যের দিকে ধাবিত হয়।  
উসামাহ ইবনু যায়েদ رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

[৯] হাদিসটি ইবনু হিবান, আহমাদ, এবং আত-তাবারানী তার আল-কবীর গ্রন্থে সংকলন করেছেন।  
শায়েখ আল-আলবানি ইরওয়াহ আল-গালীল, হাদিস নং ২০১৫-এ হাদিসটিকে সহীহল বলে মত  
দিয়েছেন।

[১০] আত-তাবারানী এবং আল-হাকিম হাদিসটি সংকলন করেছেন। শায়েখ আল-আলবানি আস-  
সাহীহাহ, হাদিস নং ৬২৫-এ হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন।

| “আমি আমার পরে পুরুষের জন্য নারীর চাহিতে বড় কোনো পরীক্ষা ছেড়ে যাচ্ছি না।” [১]

## নিরাপত্তাবোধ থেকে আনন্দ লাভ

‘ভালোবাসা এবং দয়া’ এমন দুটি তাৎপর্যময় হৃদয়ানুভূতির নাম যেগুলো জীবনকে আলোক-সুষমায় ভরিয়ে তোলে এবং জীবনে বয়ে আনে আত্মপ্রত্যয়, নিরাপত্তাবোধ ও সুখের বারতা। আল্লাহ তা‘আলার অবারিত অনুগ্রহসমূহের একটি হলো এই যে, বিবাহিত যুগলদের হৃদয়ে তিনি পারম্পরিক সম্প্রীতি ও মমত্ববোধের সঞ্চার করেন। ফলে সুরক্ষা ও নিরাপত্তা বেষ্টিত কোনো গৃহে ভাবনাহীন জীবন যাপনের মতোই তারা একে অন্যকে হৃদয়ে স্যান্ডেল আগলে রাখে। আল্লাহ তা‘আলা বলেন:

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا تَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدًّا  
وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

« এবং তাঁর নির্দর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্য হতে সৃষ্টি করেছেন তোমাদের সঙ্গনীদেরকে, যাতে তোমরা তাদের নিকট শান্তি পাও এবং তিনি তোমাদের মধ্যে পারম্পরিক সম্প্রীতি এবং দয়া সৃষ্টি করেছেন। চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্য এতে অবশ্যই বহু নির্দর্শন রয়েছে।[১২] »

অধিকস্তু, দেহের সাথে পোশাকের সম্পর্ক যতটা নিবিড়, বিয়েও নারী-পুরুষের মাঝে তেমনি এক নিবিড় ও ঘনিষ্ঠ সম্পর্কের অনুপম সুখানুভূতি দিয়ে তাদেরকে জড়িয়ে রাখে। একজন আরেকজনের জন্য হয়ে ওঠে সুরক্ষা আর প্রশান্তির সুশোভিত প্রচ্ছদ। সুমহান আল্লাহ বলেন:

هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ

« তারা তোমাদের জন্য আবরণ এবং তোমরা তাদের জন্য আবরণ।[১৩] »

## বৈধ পন্থায় জৈবিক চাহিদা পূরণ

খাদ্যের মতো জৈবিক চাহিদাও মানুষের একটি প্রকৃতিগত ব্যাপার। একজন মানুষ যখন বয়ঃপ্রাপ্ত হয় তখন থেকেই সে বিপরীত লিঙ্গের প্রতি আকর্ষণ বোধ করে। নারী-পুরুষ পরম্পরের সাথে মিলিত হলে শারীরিক সুখ অনুভবের সাথে সাথে হৃদয়ে এক অপার্থিব আনন্দ অনুভব করে। মানুষের জীবনের দুঃখ-বেদনা, ক্লান্তি-শ্রান্তি ভুলিয়ে

[১১] হাদীসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[১২] সূরা আর-রুম, ৩০:২১।

[১৩] সূরা আল-বাকারাহ, ২:১৮৭।

## কল্যাণময় বন্ধন

তাকে পুনরায় উদ্যম ফিরিয়ে দিতেও এর বিকল্প নেই। কিন্তু নারী-পুরুষের এই মিলন যদি হয় অন্যায় পথে অবৈধভাবে তাহলে এই নির্মল আনন্দ লাভ সন্তুষ্ট নয়; বরং এতে শাশ্বিতের শারীরিক সুখ লাভ হলেও মনের গভীরে এক অপরাধবোধ তাকে কৃত্রু কৃতে খায়। অবসাদ ও বিষণ্ণতা তাকে আরও ক্লান্ত করে তোলে। আমাদের প্রতি আল্লাহর অসীম অনুগ্রহসমূহের অন্যতম একটি হলো এই যে, তিনি বিয়েকে আমাদের জৈবিক বাসনা পূরণ করার এক বৈধ পদ্ধা হিসেবে নির্ধারণ করে দিয়েছেন। আল্লাহ সুন্নাহ্নাহ ওয়া তা'আলা বলেন:

« তোমরা নারীদের মধ্য থেকে যাদেরকে তোমাদের পছন্দ তাদের থেকে দুই দুই,  
তিনি তিনি কিংবা চার চারজনকে বিয়ে করে নাও। আর যদি সমতা রক্ষার ব্যাপারে  
আশংকা করো তাহলে এক জনকে করো। (সূরা আন নিসা, আয়াত ৩) »

রাসূল সাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম বিয়ে করতে তাঁর উম্মাহকে উৎসাহ  
দিয়ে বলেন:

“বিয়ে আমার সুন্নাহ। যে আমার সুন্নাহ মোতাবেক কাজ করে না সে আমাদের দলভুক্ত  
নয়। তোমরা বিয়ে করো। কেননা আমি তোমাদের সংখ্যাধিক্য নিয়ে অন্যান্য উম্মতের  
সামনে গর্ব করবো। অতএব যার সামর্থ্য আছে সে যেন বিয়ে করো। আর যার নাই সে  
যেন সিয়াম পালন করো। কেননা সিয়াম একে (জৈবিক চাহিদাকে) প্রশংসিত করে।” [১৪]

ইবনে ‘উমার এবং ইবনে ‘আমর বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

“দুনিয়ার সবকিছুই আসলে ক্ষণকালীন সম্পদ। তবে দুনিয়ার এসব ক্ষণকালীন সম্পদের  
মধ্যে সবচেয়ে ভালোটি হলো পুণ্যবতী স্ত্রী।” [১৫]

## সৎকর্ম বৃদ্ধির সুখময় পদ্ধা

বিয়ে কেবল বৈধ পদ্ধায় জৈবিক চাহিদা পূরণের মাধ্যমই নয় বরং বিয়ে হলো নিজের  
‘আমলনামায় সৎকর্ম সঞ্চয়ের এক মাধ্যম। আবু যর ﷺ বর্ণনা করেন যে,

“আল্লাহর রাসূল ﷺ-এর কিছু সাহাবী তাঁর নিকট অভিযোগ করলেন, ‘হে আল্লাহর  
রাসূল! সম্পদশালী ব্যক্তিরা তো সব সওয়াব নিয়ে গেছে। আমরা যেমন সালাত আদায়  
করি, তারাও করো। আমরা যেমন সিয়াম পালন করি, তারাও করো। কিন্তু তারা তাদের

[১৪] সুনান ইবনু মাজাহ, খণ্ড ৩, অধ্যায় ৯, হাদীস নং ১৮৪৬, পৃষ্ঠা ৫৮-৫৯। শায়েখ আল-আলবানি  
আস-সাহীহাহ, হাদীস ২৩৮৩-এ হাদীসটিকে সহীহল বলে মত দিয়েছেন।

[১৫] মুসলিম, খণ্ড ৪, অধ্যায় ১৭, হাদীস নং ৩৬৪৯, পৃষ্ঠা ১২৭; সুনান আন-নাসাই, খণ্ড ৪, অধ্যায়  
২৬, হাদীস নং ৩২৩৪, পৃষ্ঠা ১০৩ এবং আহমাদ।

উদ্বৃত্ত সম্পদ দান করে সওয়াব লাভ করছে অথচ আমাদের পক্ষে তা সন্তুষ্ট হচ্ছে না'।”  
তিনি ﷺ উত্তরে বললেন:

“কিন্তু আল্লাহ কি তোমাদেরকে তা দান করেননি যা তোমরা সাদাকাহ করতে পারো?

প্রতিটি তাসবীহ ('সুবহানাল্লাহ'- 'আল্লাহ পবিত্র' পাঠ করা) হলো সাদাকাহ;

প্রতিটি তাকবীর ('আল্লাহ আকবার'- 'আল্লাহ মহান' পাঠ করা) হলো সাদাকাহ;

প্রতিটি তাহলীল ('লা ইলাহা ইল্লাল্লাহ'- 'আল্লাহ ব্যতীত সত্য কোনো ইলাহ নেই' পাঠ করা) হলো সাদাকাহ;

প্রতিটি তাহ্মীদ ('আলহামদুল্লাহ'- 'প্রশংসা আল্লাহর জন্য' পাঠ করা) হলো সাদাকাহ;

সৎকাজের আদেশ করা হলো সাদাকাহ;

মন্দকে প্রতিহত কিংবা নিষেধ করা হলো সাদাকাহ;

এবং তোমার (স্ত্রীর সাথে) সহবাস করাও হলো সাদাকাহ।”

সাহাবারা জিজ্ঞেস করলেন, “হে আল্লাহর রাসূল! আমাদের কেউ জৈবিক চাহিদা পূরণ করলে তাতেও তার সওয়াব হবে?”

তিনি ﷺ উত্তরে বললেন: “তোমরা বলো দেখি, যদি তোমাদের কেউ তা হারাম কাজে (যিনি) ব্যবহার করতো তাহলে কি তার পাপ হতো না?”

তারা উত্তর দিলেন, “হ্যাঁ, নিশ্চয়ই।”

অতঃপর তিনি ﷺ বললেন: “অনুরূপভাবে যখন সে তা হালাল উপায়ে ব্যবহার করবে তাতে তার সওয়াব হবে।”

এরপর আল্লাহর রাসূল ﷺ আরও বেশকিছু বিষয়ের উল্লেখ করলেন যেগুলো করলে সাদাকাহ বলে গণ্য হয় এবং এই বলে শেষ করলেন যে:

“আর এ সবকিছুরই পরিপূরক হচ্ছে দুহার দুই রাক'আত সালাত।” [১৬]

সা'দ ইবন আবী ওয়াকাস বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ ﷺ বলেছেন:

“তোমরা যা কিছু আল্লাহর সন্তুষ্টির জন্য খরচ করবে তার জন্য তোমাদেরকে প্রতিদান দেওয়া হবে। এমনকি তোমরা তোমাদের স্ত্রীদের মুখে যে খাবার তুলে দাও তার জন্যও।” [১৭]

ইবন মাসউদ ﷺ বর্ণনা করেন যে, রাসূলুল্লাহ ﷺ বলেন:

[১৬] মুসলিম এবং আহমাদ সহ অন্যান্যরা হাদিসটি সংকলন করেছেন।

[১৭] সহীহ বুখারী, হাদিস নং ১২৯৫, মুসলিম হাদিস নং ১৬২৮

"যে ব্যক্তি আত্মার সন্তুষ্টি পাওয়ার ইচ্ছায় তার পরিবারের জন্য খরচ করে, তাহলে তা তার জন্য সাদাকা বলে গণ্য হবে।"<sup>[১৮]</sup>

### সুশৃঙ্খল জীবন যাপন

অনেক সমাজে দেখা যায় যে, ছেলেরা লেখাপড়া শেষ করার পর একটা লম্বা সময় লেকার জীবন যাপন করে। তারা উদ্দেশ্যহীন ভাবে ঘুরে বেড়ায়, রকে বসে আড়া মারে। কাজকর্ম করে না এবং নানারকম অপরাধমূলক ও সন্ত্রাসী কর্মকাণ্ডেও নিজেরা জড়িয়ে পড়ে। এমন ছেলেদের নিয়ে পিতা-মাতাদের দুশ্চিন্তার অন্ত থাকে না। মুরব্বীরা বলে থাকেন তাদেরকে বিয়ে করিয়ে দিতে। পিতা-মাতার প্রতি দায়িত্ববোধ থেকেও অনেক ছেলেরা কাজকর্ম করে; তবে পিতামাতাসুলভ স্নেহবাণ্সল্যের কারণে কিছু পিতা-মাতা সন্তানের অকর্মণ্যতা ও অলসতাকে প্রশ্রয় দিয়ে থাকেন। তাই সেসব সন্তানরা তেমন দায়িত্ববোধ অনুভব করে না। একারণে তাদের মধ্যে একটা গা-ছাড়া ভাব চলে আসে। কিন্তু বিবাহিত হলে পরে দাম্পত্যজীবনে স্ত্রীর কাছ থেকে এতটা ছাড় আশা করা যায় না। তার অধিকার তাকে বুঝিয়ে দিতে হয়। বাবা-মা'র কাছে সে সন্তান হওয়ায় সেখানে তার অক্ষমতার কারণে নিজেকে অপমানিত বোধ করে না। কিন্তু বিয়ে করে স্ত্রীর ভরণ-পোষণ দিতে না পারাটা তার পৌরুষে এসে আঘাত করে। স্ত্রীর কাছে তখন নিজের ভাব-মর্যাদা ভুলুষ্ঠিত হয়ে যায়। একইভাবে সন্তানের ভরণ-পোষণের জন্য সে আরও গভীর দায়বোধ অনুভব করে।<sup>[১৯]</sup>

তাই এসব কারণে বিয়েকে মানবজীবনকে সুশৃঙ্খল করার একটি চমৎকার উপায় বলা যেতে পারে। বিয়ে মানবজীবনকে সুশৃঙ্খল, সুসমন্বিত করে তোলে। এতে জীবন-ঘনিষ্ঠ নানান সমস্যার সমাধান হয়। বাউগুলে জীবনধারার অবসান ঘটে। অনেক দ্বিধা-দ্বন্দ্ব আর বিষঘন্তার নিরসন ঘটে।

[১৮] সাহীহ বুখারী, হাদীস নং ৫৫, মুসলিম হাদীস নং ১০০২

[১৯] (আমাদের গ্রামাঞ্চলে ছেলেরা বথে গেলে মুরব্বীরা তাদের পিতা-মাতাকে বলে থাকেন যে, 'কাঁধে জোয়াল দাও'। এটি একটি প্রবাদের মতো। গরু দিয়ে হাল-চাষ করার সময় দুটো গরু পাশাপাশি দাঁড় করিয়ে তাদের কাঁধে যে কাঠের খণ্ডটি দেওয়া হয় একে বলে জোয়াল। এটা কাঁধে না দেওয়া পর্যন্ত গরু হাঁটে না। পুরুষের কাঁধের জোয়াল বলা হয়েছে স্ত্রীকে। স্ত্রীর দায়িত্ব কাঁধে পড়লে ঠিকই সে আড়াবাজি ছেড়ে আয়-রোজগারের পথে নেমে পড়ে—সম্পাদক)।

## বিয়ের সামাজিক সুফল

উল্লিখিত আলোচনা থেকে আমার এই সিদ্ধান্তে উপনীত হতে পারি যে, সামগ্রিকভাবে পুরো সমাজ বিয়ের মাধ্যমে কল্যাণ লাভ করে থাকে। নিম্নে বিয়ের সামাজিক সুফলগুলোর একটি তালিকা দেয়া হলো:

### মানবজাতির ধারাকে অব্যাহত রাখা

পশ্চিমা অনেক দেশের জনসংখ্যা বৃদ্ধির হার মাইনাসের দিকে। নারী-পুরুষ নির্বিশেষে বহির্মুখী কর্মজীবনে অভ্যন্তর হয়ে পড়ায় তাদের মধ্যে বিয়ের প্রতি আগ্রহ করে যাচ্ছে। ফলে তাদের মধ্যে যিনা-ব্যভিচারের হার বেড়ে গেছে এবং সন্তান গ্রহণের প্রবণতা অনেকাংশে করে গেছে। একারণে তারা নানা প্রোগ্রামের নামে পৃথিবীর অন্যান্য দেশ থেকে লোকদেরকে নিয়ে নাগরিকত্ব প্রদান করে জনসংখ্যার হার ধরে রাখার চেষ্টা করছে। এই প্রক্রিয়া কোনো কারণে ব্যাহত হলে তাদের অবস্থা হবে করুণ। কয়েক শতাব্দীর মধ্যে সেসব জাতিগুলো নিশ্চিহ্ন হয়ে যেতে পারে পৃথিবীর বুক থেকে।

বিয়ের মাধ্যমে আল্লাহ পৃথিবীতে মনুষ্য ক্রমধারাকে জারি রাখার জন্য তাঁর সৃষ্টি বিধানকে পূর্ণ করে থাকেন। আর এভাবেই বিয়ে মানবজাতির ক্রমধারা অব্যাহত রাখার একমাত্র সঠিক পদ্ধা হিসেবে ভূমিকা পালন করে যাবে যতদিন না আল্লাহ পৃথিবী এবং এতে যা কিছু রয়েছে তার পরিসমাপ্তি ঘটাবেন।

### আত্মীয়তার বন্ধন সৃষ্টি

বিয়ের মাধ্যমে মানুষে-মানুষে আত্মীয়তার বন্ধন সৃষ্টি হয়। একটি মানবজুটির মিলনের মধ্য দিয়ে একাধিক পরিবার, গোত্র ও সমাজের মধ্যে আত্মীয়তার বন্ধন প্রতিষ্ঠিত হয়। বিয়ের মাধ্যমেই মানুষ সন্তান লাভ করে, পিতামাতা এবং সন্তান-সন্ততিদের মাঝে এক পবিত্র বন্ধন সুপ্রতিষ্ঠিত হয়। এই বন্ধন তাদেরকে পরম্পরের প্রতি দায়িত্বশীল করে তোলে। এতে ব্যক্তি, পরিবার ও সমাজের মানুষগুলোর মাঝে সম্প্রীতি ও পারম্পরিক সৌহার্দ্যের বন্ধন সুদৃঢ় হয়।

### নৈতিক অবক্ষয়া থেকে সুরক্ষা

নারী ও পুরুষের মাঝে বৈধ এবং রুচিসম্মত সম্পর্ক স্থাপনের সর্বোত্তম পদ্ধা হলো বিয়ে। বিয়ে সতীত্বের রক্ষাকৰ্ত্তা যা মুসলিম নারী-পুরুষকে অশ্লীলতা এবং এধরনের

সকল প্রকার পাপাচারে নিপত্তি হওয়া থেকে বাঁচায়। ফলে বিয়ে নৈতিক অবক্ষয় এবং অধিকারের জন্য দায়ী ঐ সকল নোংরামি আর কুকর্মের দুয়ারকে বন্ধ করে দেয়া যা বহু সমাজকে ধ্বংস করে দিয়েছে।

### রোগব্যাধি থেকে নিরাপদ রাখা

ব্যক্তিগত ও অশ্লীলতার পরিণতি হলো বেশকিছু প্রাণঘাতী রোগব্যাধি। এগুলোর মধ্যে উল্লেখযোগ্য হলো— গনোরিয়া, সিফিলিস ও বিভিন্ন প্রকার যৌনঘটিত আলসার। আর এগুলোর সাথে সাম্প্রতিক যোগ হয়েছে মরণব্যাধি 'এইডস'। এগুলো ছাড়াও রয়েছে আরও অনেক রোগ যার দ্বারা মানুষ সহজেই সংক্রমিত হয়ে থাকে। এমনকি শিশুরাও এসব রোগ থেকে রেহাই পায় না। সমাজকে এ সকল রোগব্যাধি থেকে রক্ষা করার সর্বোত্তম উপায় হলো বিয়ে।

### পারিবারিক পরিবেশ গড়ে তোলা

পারিবারিক প্রশান্তি ও নিরাপত্তাবোধ মহান আল্লাহর এক মহান নিয়ামত। এখানে যে শান্তি, স্বন্তি ও নিরাপত্তাবোধ মানুষ লাভ করে তা পরিবারের বাইরে কোথাও লাভ করা সম্ভব নয়; সে পরিবারের নীড়টুকু যতোই জীর্ণশীর্ণ হোক না কেন। ঘর থেকে বাইরে থাকার মধ্যে এক ধরনের ক্লান্তি বোধ কাজ করে; তাতে বাইরে যতোই আনন্দ ও আরাম-আয়েশের ব্যবস্থা থাকুক না কেন। আর ঘরে মানুষ প্রশান্তি বোধ করে; তাতে সেখানে সে যতোই ব্যস্ত থাকুক না কেন। এই পরিবার গড়ে তোলার মৌলিক একক হলো স্বামী ও স্ত্রী। আর বিয়ের মধ্য দিয়েই গঠিত হয় এই পরিবার।

এরপর আসে ভবিষ্যৎ প্রজন্মকে সুচারুরূপে গড়ে তোলার দায়িত্ব। একজন মানুষের সন্তান-সন্ততি লালন-পালনের জন্য একটি সুষ্ঠু ও সুন্দর পরিবেশ গড়ে তোলার ক্ষেত্রে বিয়ে হলো একটি অপরিহার্য পদক্ষেপ। আমাদের সন্তান-সন্ততিরা হলো আমাদের দাস্ত্যের ফসল; এবং এরাই হবে ভবিষ্যৎ মুসলিম উম্মাহর আদর্শ নারী-পুরুষ। সার্থক বিয়ের পরিণতি হিসেবে ভালোবাসা, মেহ, মায়া-মমতা, দয়া এবং সত্যের সুশিক্ষা দিয়ে আমরা সন্তানদেরকে গড়ে তুলি যা তাদের সুষ্ঠুভাবে বেড়ে ওঠার জন্য এবং তাদের মানবিক বিকাশের জন্য একান্ত অপরিহার্য।

## মুসলিম জাতিকে সংখ্যাগরিষ্ঠ করা

ইসলাম শুধু সংখ্যা বা পরিমাণের ভিত্তিতে বিচার করে না। বরং গুণ ও মানের ভিত্তিতে সংখ্যা বা পরিমাণকে হিসেব করে থাকে। সে কারণেই আমাদেরকে মানসম্পন্ন মুসলিমের সংখ্যা বৃদ্ধি করতে উদ্বৃদ্ধ করা হয়েছে। কেবল নাম ও লেবাসধারী মুসলিমের সংখ্যা নয়। মানসম্পন্ন মুসলিম হলো তারাই যারা সুমহান আল্লাহ-এর উকুম ও তাঁর প্রেরিত রাসূল ﷺ-এর প্রদর্শিত পথ অনুসরণ করে চলে। এধরনের মানুষের সংখ্যাই বৃদ্ধি করতে হবে; এবং বহুগণে বৃদ্ধি করতে হবে যারা পৃথিবীতে আল্লাহর দ্বীনকে প্রতিষ্ঠা করবে এবং পরকালে জান্মাতে প্রবেশ করবে।

ন্যায়পরায়ণ এবং সৎকর্মশীল মুসলিমদের সংখ্যা বৃদ্ধি করার উদ্দেশ্য নিয়েই একজন মুসলিম বিয়ে করবে। ফলে, নিজের পরিবারকে একমাত্র সত্য দ্বীন ইসলামের ওপর প্রতিষ্ঠিত রাখার জন্য সে আপ্রাণ চেষ্টা অব্যাহত রাখবে। শুধুমাত্র তখনই এই পরিবার ঐসকল মুসলিমদের সংখ্যাভুক্ত হবে যারা বিচারের দিনে আল্লাহর রাসূল ﷺ-কে এতোটাই সন্তুষ্ট এবং আনন্দিত করবে যে, তিনি তাঁর উম্মাহর ব্যাপারে পূর্ববর্তী অসংখ্য জাতির সামনে গর্ববোধ করবেন। আবু উরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “বিয়ে করো! কেননা আমি তোমাদের মাধ্যমে সংখ্যা নিয়ে গর্ব করতে চাই।” [২০]

আবু উমামাহ ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “বিয়ে করো! কেননা আমি তোমাদের মাধ্যমে অন্য জাতিসমূহের চেয়ে সংখ্যায় অধিক হতে চাই। খ্রিস্টানদের মতো সন্ধ্যাস্বরত ধরো না।” [২১]

[২০] সুনান ইবনু মাজাহ, খণ্ড ৩, অধ্যায় ৯, হাদীস নং ১৮৬৩, পৃষ্ঠা ৬৯, আল-হাকিম, ২/১৬০; শায়েখ আল-আলবানি সহীহুল জামে’, হাদীস নং ১৫১৪-এ হাদীসটিকে সহীহুল বলে মত দিয়েছেন।

[২১] আল-বায়হাকি সহ অন্যান্যরা হাদীসটি সংকলন করেছেন; শায়েখ আল-আলবানি সহীহুল জামে’, হাদীস নং ২৯৪১ এবং আস-সাহীহহ হাদীস নং ১৭২-এ হাদীসটিকে সহীহুল বলে মত দিয়েছেন।

## স্বামী-স্ত্রী নির্বাচন পর্ব

পুরোঁর অশ্যামে আমরা বিয়ের গুরুত্ব ও তাৎপর্য কী তা দেখিয়েছি। উল্লিখিত গুরুত্ব শব্দ তাৎপর্যকে সামনে রেখেই একজন মুসলিম নারী এবং পুরুষকে তাদের জীবনসঙ্গী বা সঙ্গনী নির্বাচনের জন্য তাগিদ দেওয়া হয়েছে। যাতে তারা সর্বোচ্চ সন্তোষজনক পদ্ধায় বিয়ের কাঙ্ক্ষিত লক্ষ্য ও উদ্দেশ্যসমূহ অর্জন করতে পারে। আর এই বিষয়টিই স্বামী-স্ত্রী নির্বাচনের প্রক্রিয়াকে অনেক বেশী গুরুত্ব ও তাৎপর্যবহু করে তোলে। একজন স্ত্রী হতে পারে সুখের কেন্দ্রবিন্দু কিংবা দুঃখ-দুর্দশা ও অশান্তির উৎস। একজন সৎকর্মশীলা, পুণ্যবতী স্ত্রী যেমন এই জীবনে সুখ লাভের একটি প্রধান উৎস, ঠিক তেমনি একজন মন্দ স্ত্রী জীবনে দুঃখ-দুর্দশা ও অশান্তির অন্যতম প্রধান কারণ। তাই বিয়ের জন্য পাত্র-পাত্রী বাছাই খুবই গুরুত্বপূর্ণ একটি বিষয়। এ প্রসঙ্গে আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা ‘আলা বলেন:

« যদি তোমরা ইয়াতিম মেয়েদের ব্যাপারে ন্যায়পরায়ণতা অবলম্বন করতে না পারার ভয় করো তবে নারীদের মধ্য থেকে যাদেরকে তোমাদের ভালো লাগে তাদের মধ্য থেকে দুই জন, তিন জন কিংবা চার জনকে বিয়ে করে নাও; তবে যদি তোমরা সমতা রক্ষা করতে না পারার আশংকা করো তাহলে একজনকে... »<sup>[১]</sup>

আলোচ্য আয়াতে যদিও নারীদের মধ্য থেকে যাদেরকে ভালো লাগে তাদেরকে বিয়ে করতে বলা হয়েছে, তবে একইসাথে কুরআন ও সুন্নাহৰ বিভিন্ন বর্ণনায় সেই ভালো লাগার কারণগুলোকেও ব্যাখ্যা করা হয়েছে। মানুষ স্বভাবজাতভাবে ত্বরাপ্রবণ, আবেগী ও অদৃবদশী। তাই ক্ষণিকের কোনো ভালো লাগার আগ্নে যেন তাকে সারা জীবন ঝলতে না হয় সেজন্য ইসলাম সুষ্পষ্ট দিকনির্দেশনা প্রদান করেছে। কোন কোন গুণ-বৈশিষ্ট্যগুলো সত্যিকার ও দীর্ঘস্থায়ী ভালো লাগা হিসেবে বহাল থাকবে, কোন

[১] সূরা আন নিসা, ৪:৩

ভালো লাগার মধ্যে কল্যাণ নিহিত রয়েছে, আর কোন ভালো লাগায় অকল্যাণ রয়েছে  
সে সম্পর্কে সুস্পষ্ট নির্দেশনা রয়েছে।

স্ত্রী নির্বাচনের ক্ষেত্রে যে বিষয়গুলো কোনো ব্যক্তিকে সতর্কতার সাথে বিবেচনা  
করতে হয়, তার এমন কিছু বিষয় পাঠকদের জন্য নিচে তুলে ধরা হলো—

## আদর্শ পাত্রীর বৈশিষ্ট্য

### সৎকর্মশীলতা

একজন স্ত্রীর প্রথম এবং সর্বপ্রধান গুণ হলো তার সৎকর্মশীলতা। নবী ﷺ পুরুষদেরকে  
বিয়ের জন্য সৎকর্মশীল, পুণ্যবতী নারী অন্বেষণ করার তাগিদ দিয়েছেন এবং এই  
ধরনের নারীকে বিয়ে করলে পুরুষ সুখী হবে বলে ইঙ্গিত করেছেন। আবু হুরায়রা ﷺ  
বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“কোনো নারীকে চারটি কারণে বিয়ে করা হয়ে থাকে— ধনসম্পদ, সামাজিক অবস্থান,  
সৌন্দর্য এবং দ্বীন (ধর্মিকতা); কাজেই যে দ্বীনসম্পন্ন তাকেই খুঁজো যাতে তোমরা  
সফল হতে পারো।” [২৩]

সাওবান ﷺ বর্ণনা করেন যে,

সোনা-রূপা [২৪] সঞ্চয়কারী লোকদের সতর্ক করার জন্য আল্লাহ তা‘আলা যখন আয়াত  
অবতীর্ণ করলেন, তখন সাহাবারা ভাবলেন, ‘আমরা তাহলে কোন ধরনের সম্পদ জমা  
করে রাখবো?’ ‘উমার ﷺ বললেন, ‘আমি এই প্রশ্নের উত্তর খুঁজবো।’ রাসূল ﷺ-এর  
নাগাল না পাওয়া পর্যন্ত তিনি তার উট নিয়ে দ্রুত সামনে এগোতে থাকলেন। তখন তিনি  
(সাওবান) তার ঠিক পেছনেই ছিলেন। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, ‘হে আল্লাহর রাসূল!  
কোন ধরনের সম্পদ আমাদের সঞ্চয় করা উচিত?’ তিনি উত্তরে বললেন:

“তোমাদের প্রত্যেকের যেন (আল্লাহর প্রতি) কৃতজ্ঞ হৃদয়, সর্বদা (আল্লাহর) প্রশংসাকারী  
জিহ্বা এবং এমন একজন স্ত্রী থাকে যে তাকে পরকালের ব্যাপারে সহায়তা করে।” [২৫]

[২৩] আল-বুখারি এবং মুসলিম সহ অন্যান্যরা হাদীসটি সংকলন করেছেন।

[২৪] আত-তাওবাহ; ৯:৩৪-৩৫

[২৫] আহমাদ এবং আত-তিরমিয় সহ অন্যান্যরা হাদীসটি সংকলন করেছেন। শায়েখ আল-আলবানি  
হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস সাহীহাহ, হাদীস নং ২১৭৬)।

## উত্তম চরিত্র

স্ত্রী হিসেবে এমন কাউকে খুঁজতে হবে যে উত্তম চরিত্রের অধিকারিণী কিংবা যে উন্নত সৈতিক চরিত্র সম্পদ পরিবেশে লালিত-পালিত এবং বড় হয়েছে। এমনকি শারীরিক সৌন্দর্য কিংবা মনস্পদের মতো লোভনীয় বৈশিষ্ট্য থাকলেও স্ত্রী নির্বাচনের ক্ষেত্রে দুর্বল সৈতিক চরিত্রের নারীকে অবশ্যই বর্জন করতে হবে। আবু সা'ঈদ আল খুদরী  
৷ বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ ﷺ বলেছেন:

"(সাধারণত) তিনটি বৈশিষ্ট্যের কোনো একটির কারণে নারীদেরকে বিয়ে করা হয়—  
সম্পদের জন্য, সৌন্দর্যের জন্য এবং দ্বীনদারিতার জন্য। তবে তুমি শুধু দ্বীনদার ও উত্তম  
চরিত্রবান নারীকে গ্রহণ করো; তুমি সফলকাম হতে পারবে।"<sup>[২৬]</sup>

আবু মূসা আল-আশ'আরি ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

"তিনজন ব্যক্তি আছে যারা আল্লাহর কাছে দু'আ করলে তাদের দু'আ করুল হয় না—  
এমন ব্যক্তি যার দুশ্চরিত্বান স্ত্রী আছে অথচ সে তাকে তালাক দেয় না, এমন ব্যক্তি যে  
কারও কাছে কোনো সম্পদ গচ্ছিত রাখলো কিন্তু সাক্ষী রাখলো না, এবং সেই ব্যক্তি যে  
নির্বোধ মানুষকে তার সম্পদ দিয়ে দেয়।"<sup>[২৭]</sup>

এই হাদিসে 'দুশ্চরিত্ব' বলতে মূলত চারিত্রিক দুর্বলতা এবং অশ্লীলতাকে বোঝানো  
হয়েছে যা নারীর আচার-আচরণকে সন্দেহজনক এবং তার সতীত্বকে প্রশ্নবিদ্ধ করে।  
এই ধরনের স্ত্রী যে পুরুষের অধীনে থাকে তাকে বলে 'দাইয়ুস'।

## কুমারীত্ব

কুমারীত্ব বিয়ের জন্য কোনো শর্ত নয়। তবে যদি একাধিক নারীর মধ্য থেকে যেকোনো  
একজনকে পছন্দ করার সুযোগ থাকে এবং অন্যান্য সবদিক থেকে তাদের সকলেই  
সমপর্যায়ের হয়, তাহলে যে কুমারী তাকেই স্ত্রী হিসেবে বেছে নিতে উদ্বৃদ্ধ করা হয়েছে।  
কাজেই কুমারীত্ব এমন একটি বিষয় যা স্ত্রী নির্বাচনের ক্ষেত্রে কেবল একটি বাড়তি  
বৈশিষ্ট্য হিসেবে পছন্দের পাল্লাকে ভারী করে।

জাবির ইবনু 'আবদুল্লাহ ﷺ বর্ণনা করেন যে,

[২৬] সাহীহ ইবন হিবান, মুসনাদ আহমাদ ও আল হাকিম। আলবানী সাহীহ সাব্যস্ত করেছেন: আস  
সাহীহাহ ৩০৭

[২৭] আল-হাকিম, আবু নুয়াইম এবং অন্যান্যরা হাদিসটি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে  
সাহীহ বলে মত দিয়েছেন ('সাহীহ জামে', হাদিস নং ৩০৭৫ এবং আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১৮০৫)।

"মৃত্যুকালে তার পিতা নয়জন মেয়ে রেখে মারা যান"<sup>[২৮]</sup> যাদেরকে দেখাশোনার দায়িত্ব ছিলো জাবিরের ওপর। অল্প কিছুদিন পরেই জাবির একজন অকুমারীকে বিয়ে করেন। নবী ﷺ-এর সাথে তার দেখা হলে তিনি তাকে জিজ্ঞেস করেন, "হে জাবির! তুমি কি বিয়ে করেছ?" তিনি উত্তর দিলেন, "হ্যাঁ।" তিনি তাকে জিজ্ঞেস করলেন, "সে কি কুমারী, না অকুমারী?" তিনি উত্তর দিলেন, "অকুমারী।" তিনি বললেন, "কেন কুমারী বিয়ে করলে না! তাহলে পরম্পর (অধিক) আনন্দ-ফূর্তি ও এক সাথে হাসি-তামাশা করতে পারতে।" জাবির উত্তর দিলেন, "আসলে আমার পিতা 'আবদুল্লাহ' অনেকগুলো মেয়ে রেখে মারা গেছেন। আমি চাইনি যে, তাদের মতোই কমবয়সী আরও একজন তাদের সাথে যোগ হোক; তাই আমি একজন পূর্ণবয়স্কা মহিলাকে বিয়ে করেছি যাতে সে তাদের যত্ন নিতে পারে এবং তাদের দেখাশোনা করতে পারে।" অতঃপর আল্লাহর রাসূল ﷺ বললেন:

"নিশ্চয়ই তুমি উত্তম সিদ্ধান্ত নিয়েছ। তোমার জন্য আল্লাহ অফুরন্ত কল্যাণ দান করুন।"<sup>[২৯]</sup>

আবদুল্লাহ ইবন মাস 'উদ ﷺ বর্ণনা করেন, রাসূল ﷺ বলেন:

"কুমারী নারীদেরকে বিয়ে করো, তাদের কথা মধুরতর, গর্ভ উর্বর এবং অল্পতে সন্তুষ্ট হয়।"<sup>[৩০]</sup>

তবে মনে রাখতে হবে যে, স্বয়ং আমাদের প্রিয় নবী ﷺ প্রথম যাকে বিয়ে করেছিলেন তিনি ছিলেন অকুমারী, পূর্বে বিবাহিতা এবং তাঁর চেয়ে প্রায় পনের বছরের বড়। শুধু তাই নয় তাঁর স্ত্রীদের মধ্য থেকে শুধু একজন ব্যতীত বাকি সকলেই ছিলেন অকুমারী। তাই কুমারী হওয়াটা বিয়ের জন্য কোনো অপরিহার্য শর্ত নয়; বরং অন্যান্য দিক থেকে যদি সকলেই একই মানের পাত্রী হয় তবে কেউ কুমারী হলে সেটা হবে তার একটি বাড়তি বৈশিষ্ট্য। অনেক ক্ষেত্রে বিধবা, কিংবা তালাকপ্রাপ্ত নারীদেরকে বিয়ে করা উত্তম বলেও বিবেচিত হতে পারে—বিশেষত যে সমাজে তাদের জন্য বিয়ে কঠিন হয়ে দাঁড়ায়।

## সন্তান ধারণে সক্ষমতা

যেহেতু বিয়ের অন্যতম গুরুত্বপূর্ণ উদ্দেশ্য হলো সন্তান জন্মদান, তাই এমন ধরনের কমবয়সী যুবতী নারীকে বিয়ে করতে উদ্বৃদ্ধ করা হয়েছে যে স্বাভাবিকভাবেই অধিক সন্তান জন্মদানে সক্ষম। মা'কিল ইবনু ইয়াসার ﷺ বর্ণনা করেন যে,

[২৮] জাবিরের পিতা, আবদুল্লাহ ইবনু 'আমর ইবনু হারাম, উহুদের যুদ্ধে শহীদ হন। ঐ সময় বয়স ছিলো মাত্র উনিশ বছর।

[২৯] আল-বুখারি, মুসলিম এবং অন্যান্যরা হাদীসটি সংকলন করেছেন।

[৩০] মু'জামুল কাবীর, আলবানী হাসান সাব্যস্ত করেছেন।

## ঘামী-স্ত্রী নির্বাচন পর্ব

এক লোক আল্লাহর রাসূলের কাছে এসে বলল, “আমি এক সন্ত্রান্ত এবং সুন্দরী মহিলার মেধা পেয়েছি, কিন্তু সে বন্ধ্য। আমার কি তাকে বিয়ে করা উচিত?” তিনি বললেন, “না।” তাকে আরও দুইবার জিজ্ঞেস করলে, আল্লাহর রাসূল বললেন:

“মুমল মারীকে বিয়ে করো যে প্রেমময়ী এবং অনেক সন্তান ধারণের ক্ষমতা রাখে, কারণ (কিম্বাইতের দিন) আমি তোমাদের সংখ্যা নিয়ে গর্ব করবো।”<sup>[৩১]</sup>

মনে রাখতে হবে এই নিরুৎসাহিতকরণের অর্থ এই নয় যে, সন্তান ধারণে অক্ষম নারীকে একেবারেই বিয়ে করা যাবে না। এখানে অধিক সন্তান ধারণে সক্ষম নারীকে বিয়ে করতে উৎসাহিত করা হয়েছে মাত্র। এর অর্থ হলো এটা মুস্তাহাব, আর সন্তান ধারণে অক্ষম নারীকে বিয়ে করা মাকরুহ। প্রশ্ন হতে হতে পারে যে, সন্তান ধারণে অক্ষম নারীকে কেউ যদি বিয়ে না করে তাহলে তার জীবন কিভাবে চলবে। সেক্ষেত্রে তিনি এমন কোনো পুরুষের স্ত্রী হতে পারেন যিনি একাধিক স্ত্রী গ্রহণ করতে ইচ্ছুক এবং অন্য স্ত্রী থেকে তার সন্তান রয়েছে বা সন্তান লাভের আশা করা যায়।

একই সাথে মনে রাখতে হবে যে, সন্তান ধারণে অক্ষম কিংবা সক্ষম হওয়া কোনোটাই মানুষের নিজস্ব যোগ্যতা কিংবা অযোগ্যতা নয়। এটা একমাত্র আল্লাহরই এখতিয়ার এবং তাঁরই ইচ্ছাধীন। তিনি বলেন:

« আসমান ও জমিনের যাবতীয় ক্ষমতা একমাত্র আল্লাহর জন্য; তিনি যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন। কাউকে কন্যাসন্তান দেন, আবার কাউকে পুত্রসন্তান দেন; কাউকে চাইলে পুত্র-কন্যা দুটোই দান করেন। আবার যাকে ইচ্ছা তিনি বন্ধ্য করে রাখেন। নিশ্চয়ই তিনি সুউচ্চ ও প্রজ্ঞাময়।»<sup>[৩২]</sup>

অনেক পরিবারে দেখা যায়, বন্ধ্য নারীদেরকে অপয়া অলঙ্কুণে মনে করা হয়। অনেক কাজে তাদেরকে অংশগ্রহণ করতে বাধা দেওয়া হয়। এটা সম্পূর্ণ জাহিলি যুগের পৌত্রলিঙ্কদের আচরণ। কোনো মুসলিম যদি এ ধরনের আচরণ করেন তাহলে নির্বিধায় বলা যায়, তিনি মুশরিকদের দ্বারা প্রভাবিত এবং তার মধ্যে সুস্পষ্ট জাহিলিয়াত বিদ্যমান। মুসলিম জাতি একটি জ্ঞানসমৃদ্ধ আলোকিত জাতি। এধরনের কুসংস্কারে বিশ্বাস তাদের ধর্মীয় মূল্যবোধ সাথে মোটেই মানানসই নয়।

[৩১] হাদিসটি আবু দাউদ এবং আন-নাসা'ঈ সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে', হাদিস নং ২৯৪০ এবং ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৭৮৪)।

[৩২] সূরা শূরা, আয়াত ৪৯-৫০

## মমতাময়ী আচরণ

জীবনের দুটো দিক রয়েছে—ঘর এবং বাহির। বাইরের পৃথিবী স্বত্বাবতই বাস্তবতা, কঠোরতা ও রুক্ষতায় ভরা থাকে। মানুষ যদি শুধু বাইরের এই রুক্ষ জীবন যাপন করতো তাহলে তার মধ্য থেকে আদর-মায়া, স্নেহ-মমতা বিদায় নিত। এটা হতো এক মহা বিপর্যয়। মানুষ বাইরের জগৎ থেকে কাজকর্ম সেবে যখন ঘরে ফেরে তখন তার প্রশান্তির জন্য প্রয়োজন হয় একটু আদর-মমতার ছোঁয়া, যা তার সারা দিনের ক্লান্তি মুছে দিয়ে তাকে আবার সতেজ ও প্রাণবন্ত করে তুলবে। একইভাবে সন্তান প্রতিপালন এমনই একটি দায়িত্ব যা মমতাময়ী বৈশিষ্ট্য ছাড়া পালন করা সন্তুষ্ট নয়। শিশুরা যেহেতু কোমল ও নাজুক প্রকৃতির হয়ে থাকে তাই তাদের প্রতিপালনের জন্য আদর-স্নেহ মায়া-মমতার বিকল্প নেই।

তাই স্বামী-সন্তানের প্রতি মমতাময়ী এবং যত্নশীল আচরণের আশা করা যায় এমন নারীকে বিয়ে করার চেষ্টা করতে হবে। নারীর এই বৈশিষ্ট্যগুলো সাধারণত তার বেড়ে ওঠার পরিবেশ এবং বংশমর্যাদা থেকে আঁচ করা সন্তুষ। মাক্সিল ইবনু ইয়াসার <sup>৩৩</sup> থেকে বর্ণিত হাদিসটিতে পরোক্ষভাবে এই বিষয়ের প্রতিই ইঙ্গিত করা হয়েছে। একই মর্মে আবু উসাইনাহ আস-সাদাফি <sup>৩৪</sup> থেকে বর্ণিত হাদিসে আল্লাহর রাসূল <sup>ﷺ</sup> বলেছেন:

“তোমাদের নারীদের মধ্যে সর্বোত্তম হলো তারাই যারা অনেক সন্তান জন্মানে সক্ষম, যারা (তাদের স্বামীদের প্রতি) প্রেমময়ী, প্রশান্তিদায়ী এবং সহিষ্ণুঃ— যখন তারা আল্লাহকে ভয় করবে। আর তোমাদের নারীদের মধ্যে সর্বনিকৃষ্ট হলো তারা, যারা (পর পুরুষকে) তাদের সৌন্দর্য দেখায় এবং যারা দর্পভরে চলাচল করে। এরাই হলো কপট এবং এদের যারা জানাতে প্রবেশ করবে তারা হবে লাল ঠোঁট এবং লাল পা ওয়ালা কাকের মতোই বিরল।” [৩৩]

## অল্লে তুষ্টি

বস্ত্র পরিমাণের মধ্যে নয় বরং শান্তি নির্ভর করে মানুষের মনের তৃপ্তির ওপর। বিশেষত ঘরের স্ত্রী যদি অল্লে তুষ্টি না হয় তবে তার চাহিদা পূরণ করতে গিয়ে স্বামীকে অনেক সময় সামর্থ্যের বাইরে যেয়ে চেষ্টা করতে হয়; আর তখনই স্বামীর দ্বারা শুরু হয় অন্যায়

[৩৩] হাদিসটি আল-বায়হাকি (তার সুনান গ্রন্থে) এবং অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে), হাদিস নং ৩৩৩০ এবং আস-সাইহাহ, হাদিস নং ১৮৪৯। এছাড়াও হাদিসের (কাক বিষয়ক) শেষাংশটুকু আহমাদ সহ অন্যান্যরা ‘আম্র ইবনুল ‘আস <sup>৩৪</sup> থেকে সংকলন করেছেন এবং আল-আলবানি এটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাইহাহ, হাদিস নং ১৮৫০)।

ও দৃঢ়ীতি। তাই স্ত্রীর মাঝে তাকে তুষ্টির শুল খুঁজতে হবে। স্ত্রী অত্থপুত্রে ভুগলে তা স্বামীর জীবনকে দুর্ব্যবস্থা করে ফেললে এবং স্ত্রী নিজের ইচ্ছা পূরণের জন্য স্বামীকে দ্বা ইচ্ছে করা হই করতে পারে করাবে। স্বামীর আর্থিক অবস্থা এবং স্বামী যা দেয় তা নিয়েই সম্পূর্ণ ধারণা একজন কুমারীর পক্ষে যতটা সন্তু একজন অকুমারীর পক্ষে কুকুটা নহ। কারণ তার পূর্বের স্বামী যদি তাকে বিলাসী জীবন যাপনে অভ্যস্ত করে তুলে থাকে এবং সর্বশাস্ত্র সৃষ্টি হতে পারে। আর একজন কুমারী জীবনের বাস্তবতার মাধ্যমে অভিজ্ঞ নারী; তার চাহিদা পূরণের ব্যাপারে সে যেমনভাবে ভাববে, একজন অভিজ্ঞ নারী হয়তো সেভাবে চিন্তা করবে না। সে হয়তো তার চাওয়া-পাওয়া আদায় করতে স্বামীকে চাপ প্রয়োগ করবে। পক্ষান্তরে একজন কুমারী নারীকে নিয়ে তার স্বামী যেভাবে জীবন যাপন শুরু করবে, সে তার সাথে নিজেকে মানিয়ে নেবে। তাই হাদিসে অঞ্চে তুষ্টিকে কুমারীত্বের সাথে যুক্ত করা হয়েছে। জাবির ইবনু ‘আব্দিল্লাহ  
ৰ্গনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“(বিয়ের জন্য) কুমারীদেরকে খুঁজবে; কারণ এদের গর্ভ অধিক উর্বর, এরা অধিক মিষ্টভাষণী, কম শৃতাপূর্ণ, এবং এরা অল্পতে খুব সহজে সন্তুষ্ট হয়।”<sup>[৩৪]</sup>

তবে এটা কোনো একমুখী সরল অংক নয়। মূল কথা হলো অঞ্চে তুষ্টি। যদি তা কোনো অকুমারী নারীর মধ্যে পাওয়া যায় তাহলে তাকেও অন্য পাঁচ জনের মতো এই গুণের বিচারে প্রাধান্য দিতে হবে

### সরলমতিত্ব

সরলমতিত্ব, চারিত্রিক সারল্য, মাধুর্য এবং নিষ্কলুষ হৃদয়- এগুলো হলো নারী চরিত্রের প্রশংসনীয় দিক যা একজন স্ত্রীর মাঝে খুঁজতে হবে। এই বৈশিষ্ট্যগুলো অকুমারীদের চাহিতে কুমারীদের মধ্যেই বেশী পরিমাণে উপস্থিত। আর পারিবারিক 'পলিটিক্স' তাদের অনভিজ্ঞতাই এর প্রধান কারণ। জাবির ﷺ থেকে বর্ণিত উল্লিখিত হাদিসে এ বিষয়টিই ফুটে ওঠেছে। অবশ্য বর্তমান সময়ে বিজাতীয় টিভি সিরিয়ালগুলো দেখে দেখে নারীরা বিয়ের আগেই পারিবারিক পলিটিক্সে সিদ্ধহস্ত হয়ে ওঠেছে। এই

[৩৪] হাদিসটি আত-তাবারানি (তার আল-আসওয়াত প্রস্তুত) এবং আদ-দিয়া'উল মাকদিসি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ৬২৪ এবং সহীহুল জামে', হাদিস নং ৪০৫৩)।

গুণবৈশিষ্ট্য আগে থেকে যাচাই করে নেওয়া দৃঃসাধ্য ব্যাপার। চেষ্টা করতে হবে তার পারিবারিক পরিবেশ ও ঐতিহ্য দেখে বুঝে নিতে। যেসব পরিবার নিজেদের ভাই-বোন, মামা-চাচা ও নিকটাত্মীয়দের সঙ্গে সুসম্পর্ক বজায় রেখে চলে, পরম্পরের বিরুদ্ধে কুটচালি করে না তাদের মধ্যে এই সারল্য অধিক মাত্রায় বজায় থাকার সন্তাননা থাকে। যে পরিবারে নিকটজন, আত্মীয়-স্বজনদের সাথে কুট সম্পর্ক রাখা, কিংবা সম্পর্কচ্ছদের কালচার আছে, সেই পরিবেশে বেড়ে ওঠা ছেলে-মেয়েদের মধ্যে নোংরা পারিবারিক পলিটিক্সের বীজ বপিত হয়ে যায়।

### সৌন্দর্য

দুঃখজনক হলেও সত্য যে— সাধারণ সমাজ তো বটেই, আমাদের যেসব লোকেরা নিজেদেরকে ধার্মিক ভাবতে পছন্দ করেন তাদের সমাজের অবস্থাও আজকাল খুবই খারাপ। পাত্রী নির্বাচনের ক্ষেত্রে যে বৈশিষ্ট্যগুলোকে ইসলাম তুলনামূলক গুরুত্বের দিক থেকে সবার শেষে স্থান দিয়েছে সেগুলোকেই সবার ওপরে উঠে এসেছে। রাস্তাঘাটে, বিলবোর্ডে, বিজ্ঞাপনচিত্রে, নাটক-সিনেমায় সারাক্ষণ মেকআপ মাখা পরিপাটি সাজের আবেদনময়ী ভঙ্গিমায় সুন্দরী নায়িকা ও মডেলদেরকে দেখতে দেখতে মানুষের মন এখন নারী ভাবতে কেবল তাদের মতো নারীকেই কল্পনা করে। এটা একটা ভয়াবহ সামাজিক ব্যাধিতে রূপান্তরিত হয়েছে। একজন নারীকে কেবল তার চামড়ার রঙ আর শারীরিক কাঠামো দিয়েই মূল্যায়ন করা হচ্ছে। তবুক ফর্সাকারী ক্রীম ও প্রসাধনী সামগ্রীর বিজ্ঞাপনগুলোতে নারীর জীবনের সফলতাকে গেঁথে দিচ্ছে কেবলই তার গায়ের রঙ আর চেহারার সৌন্দর্যের সাথে। তার মেধা, যোগ্যতা, গুণ-বৈশিষ্ট্য সবকিছু যেন গৌণ বিষয়ে পরিণত হয়েছে। একারণে পাত্রী পছন্দের ক্ষেত্রে চেহারা ফিগারের মানদণ্ডে উত্তীর্ণ হলেই লোকেরা কেবল অন্য বিষয় বিবেচনা করে। কিন্তু ইসলামে একজন স্ত্রীর মাঝে যেসব বৈশিষ্ট্য খুঁজতে হয় তার মধ্যে সৌন্দর্য, অর্থ-সম্পদ এবং সামাজিক অবস্থানকে গুরুত্বের দিক থেকে দ্বিতীয় পর্যায়ের বৈশিষ্ট্য হিসেবে উল্লেখ করা হয়েছে। এসবের বিনিময়ে স্ত্রীর সৎকর্মশীলতা, মেধা, যোগ্যতা, চরিত্র-বৈশিষ্ট্য কিছুতেই বিসর্জন দেওয়া যাবে না।

তবে দ্বিতীয় পর্যায়ের বৈশিষ্ট্য হিসেবে মনে করা হলেও সৌন্দর্যের বিষয়টিকে আমরা একেবারেই অগ্রাহ্য করতে পারি না। চেহারা সূরত ও সৌন্দর্যের প্রতি মানুষের

## স্বামী-স্ত্রী নির্বাচন পর্ব

আকর্ষণ একটা চিনামত ব্যাপার। আবু হুরায়রা কর্ণা করেন যে, আল্লাহর রাসূল  
সেই সময়ে;

“স্বামীসের মধ্যে সর্বোচ্চম হলো সে-ই, যার দিকে তাকালে সে তার স্বামীর মনকে আনন্দে  
ভরিসে তখন, কোনো ভাবেই দিলে তার আনুগত্য করে এবং নিজেকে কিংবা তার (স্বামীর)  
সর্বোচ্চ কর্মস বিষয়ে জড়ান না থা স্বামী অপছন্দ করে।”<sup>[৩৫]</sup>

এই সেই স্বামীর ‘সর্বোচ্চ’ হওয়া গুলতে মূলত স্ত্রীর মাঝে আল্লাহর আনুগত্য এবং  
সহকর্মশীলতা দেখে স্বামীর সর্বোচ্চ হওয়াকেই বোঝানো হয়েছে। তবে স্ত্রীর শারীরিক  
সৌন্দর্যের মাধ্যমেও স্বামী সর্বোচ্চ হতে পারে। আর একারণেই বিয়ের প্রস্তাব প্রদানের  
সময় স্বামীর চেহারা দেখে নিতে আদেশ করা হয়েছে। এ বিষয়ে আমরা পরবর্তী অধ্যায়ে  
ভালোচনা করবো। একই সাথে পুরুষের উচিত এমন স্ত্রী খোঁজা যে তার উপযুক্ত এবং  
স্বামীরও উচিত এমন পুরুষ খোঁজা যে তার উপযুক্ত।

## সামাজিক

আল্লাহর সৃষ্টির মধ্যে ‘বৈচিত্র্য’ এক অনন্য বৈশিষ্ট। বৈষয়িক, আর্থিক, সামাজিক,  
সুস্থিতিক দিকসহ নানা বিবেচনায় মানুষের মধ্যেও নানারকম পার্থক্য আছে। পৃথিবীতে  
মানুষের জীবনযাত্রা সচল রাখতে এর গুরুত্ব অপরিসীম। আল্লাহ সুবহানাল্ল ওয়া  
ত্তা ‘আলা এ প্রসঙ্গে কুরআনুল কারীমে বলেছেন:

«আমি তোমাদেরকে শ্রেণিগত দিক থেকে কিছু মানুষকে কিছু মানুষের ওপর স্থান  
দিয়েছি, যেন তোমরা একে অন্যের কাজে লাগতে পারো (সূরা আয যুখরুফ,  
আয়াত ৩২)।»

বৈষয়িক এই পার্থক্যের ভিত্তিতে আল্লাহর কাছে কারও মর্যাদার তারতম্য না  
ঘটলেও এর মধ্য দিয়ে মানুষের মন-মনন, রূচিবোধ, চিন্তা-চেতনা, কর্ম প্রক্রিয়া,  
জীবনধারা ও আচার-আচরণে পার্থক্য সূচিত হয়। স্বামী-স্ত্রীকে যেহেতু পরম্পরের  
সাথে জীবনে সবচেয়ে ঘনিষ্ঠভাবে কাটাতে হয়, সেক্ষেত্রে যদি তাদের মধ্যে এসব  
দিক থেকে বিস্তর পার্থক্য থাকে তাহলে তাদের মধ্যে বোঝাপড়ায় সমস্যা হয়ে দাঁড়ায়  
এবং তা মনোমালিন্য, ঝগড়া-ফাসাদ, এমনকি বিচ্ছেদের কারণ হয়ে দাঁড়াতে পারে।  
তাই উল্লিখিত বিষয়গুলোতে পাত্র-পাত্রীর মধ্যে একটা সমতা রক্ষা করে চলাই উত্তম।

[৩৫] আহমাদ, আন-নাসা’ই এবং আল-হাকিম হাদিসটি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে  
সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে’, হাদিস নং ৩২৯৮ এবং আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১৮৩৪)।

হ্যাঁ, তবে যদি কেউ এসব পার্থক্য সত্ত্বেও মানিয়ে চলতে পারে তাতে কোনো সমস্যা নেই। এই বিষয়টির দিকে দৃষ্টি আকর্ষণ করে রাসূল ﷺ বলেছেন:

“তোমরা তোমাদের প্রজননকোষের ব্যাপারে উত্তম সিদ্ধান্ত নাও; সামঞ্জস্য দেখে বিয়ে করো; আর সামঞ্জস্য দেখে (তোমাদের মেয়েদের) বিয়ে দাও।”

তবে খেয়াল রাখতে হবে যে, এসব বিবেচনা অবশ্যই বিয়ের ক্ষেত্রে মুখ্য নয়। প্রধানতম বিষয় হলো দ্বীন এবং চরিত্র। এসব পার্থক্য যদি এমন বড় হয় যা বিবাহের মূল উদ্দেশ্যকেই ব্যাহত করে দেয় তাহলে তা বিবেচনা করতে হবে। তবে এসব বিষয়কে বিবেচনা করতে গিয়ে কখনও দ্বীন ও উত্তম চরিত্রকে অবমূল্যায়ন করা যাবে না।

## আদর্শ পাত্রের বৈশিষ্ট্য

### ধার্মিকতা

পাত্রী পছন্দের ক্ষেত্রে যেমন কিছু বৈশিষ্ট্য খুঁজতে বলা হয়েছে, তেমনি পাত্রের বেলাও এর ব্যতিক্রম নয়। তবে পাত্রের ক্ষেত্রে প্রধানতম বৈশিষ্ট্য হলো তার দ্বিন্দারী ও চরিত্র।

নবী ﷺ দ্বিন্দার এবং উত্তম চরিত্রের অধিকারী পুরুষের সাথে তাদের মেয়েদের বিয়ে দেওয়ার জন্য অবিভাবকদের নির্দেশ দিয়েছেন। সৎকর্মশীলতা এবং উত্তম চরিত্রের জন্য প্রশংসিত কোনো পুরুষ কোনো নারীকে বিয়ে করতে চাইলে তার প্রস্তাব গুরুত্বের সাথে বিবেচনা করতে হবে। আবু হুরায়রা, ইবনে ‘উমর এবং আবু হাতিম আল-মুয়ানি ﷺ বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

“যদি কোনো পুরুষ বিয়ের প্রস্তাব নিয়ে তোমার কাছে আসে এবং তুমি তার দ্বীন এবং চরিত্রের ব্যাপারে সন্তুষ্ট হও, তাহলে তাকে বিয়ে করো - যাতে করে পৃথিবীতে ফির্না এবং বড় ধরনের বিপর্যয় ছড়িয়ে না পড়ে।”<sup>[৩৬]</sup>

### উত্তম চরিত্র

কোনো নারী যখন একজন দ্বিন্দার এবং উত্তম চরিত্রের কোনো পুরুষকে বিয়ে করে, তখন তার হারানোর কিছুই থাকে না— সে তাকে স্ত্রী হিসেবে রাখলে, উত্তম আচরণের সাথেই তাকে রাখবে; আর সে যদি তাকে তালাক দিতে চায়, তাহলে স্টোও সে

[৩৬] আত-তিরমিয়ি, ইবনু মাজাহ এবং অন্যান্যরা হাদীসটি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে), হাদীস নং ২৭০ এবং আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ১০২২)।

## স্বামী-স্ত্রী নির্বাচন পর্ব

উত্তম আচারগের সাথেই করবে। অধিকন্ত, স্বামী দ্বীনদার এবং উত্তম চরিত্রের হলে তা শ্রী এসৎ সম্মান-সন্তুতি সকলের জন্যই কল্যাণকর। এতে তারা দ্বীনের জ্ঞানার্জন এবং আরও ভালোভাবে দ্বীন পালনের ক্ষেত্রে পরম্পর পরম্পরকে সহায়তা করতে পারবে।

কোনো পুরুষের যদি এই বৈশিষ্ট্যগুলো না থাকে, তাহলে একজন নারীর উচিত হলে সে পুরুষকে স্বামী হিসেবে গ্রহণ না করা। বিশেষ করে যদি সে সালাত আদায়ের ন্যায়ে অবহেলা করে, মদ্যপানে আসক্ত হয়, ব্যভিচারে কিংবা এই ধরনের অন্যান্য মুক্ত পাপে লিপ্ত থাকে। স্বামী নির্বাচনের ক্ষেত্রে অর্থসম্পদ এবং সামাজিক পদমর্যাদা মেন কথনোই একজন নারীর সিদ্ধান্ত গ্রহণের মাপকাঠি না হয়।

### আর্থিক অবস্থা

দুঃখের বিষয় যে, বিয়ের জন্য ছেলে খোঁজার সময় মেয়ের পরিবার বা অভিভাবক ছেলের ঈমান-আকীদা এবং তাকওয়ার দিকে ভ্রক্ষেপ না করে প্রথমেই তার অর্থসম্পদের দিকে নজর দেয়। অধিকন্ত, আজকের দিনের অধিকাংশ মুসলিম নারীরাও অন্যেসলামী মতাদর্শের দ্বারা প্রভাবিত হয়ে পড়েছে। অর্থ তাকওয়া, উত্তম চরিত্রই কেবল টেকসই ও প্রেমময় দাম্পত্য সম্পর্কের নিশ্চয়তা দেয়। কিন্তু অধুনা মুসলিম নারীরা এ ধরনের স্বামী এখন আর খোঁজে না। তারা স্বামী হিসেবে এমন পুরুষকে খুঁজে বেড়ায় যে ঐশ্বর্যশালী, যার বয়েছে উচ্চ পদমর্যাদা কিংবা যে উচ্চশিক্ষায় শিক্ষিত কোনো বিশেষ ডিগ্রীধারী। আর এমনটি করতে গিয়ে তারা দ্বীন-ধর্ম, নৈতিকতা এবং সর্বোপরি সুখ পর্যন্ত বিকিয়ে দিচ্ছে।

আমরা অবশ্যই মুসলিমদেরকে দারিদ্র্যের মাঝে জীবন কাটানোর আহান জানাচ্ছি না। তবে আমরা দৃঢ়তার সাথে বলছি যে, অর্থসম্পদ এমন একটি গৌণ বিষয় যেটাকে কখনোই দ্বীন এবং উত্তম চরিত্রের সমকক্ষ মনে করা উচিত নয়। তাছাড়া দারিদ্র্য কিংবা সচ্ছলতা কোনো স্থায়ী বিষয় নয়। বিত্তশালী কোনো ব্যক্তি অল্প দিনের মধ্যেই দরিদ্র হয়ে যেতে পারে, আবার দরিদ্র কোনো ব্যক্তি অল্প সময়ের মধ্যেই সচ্ছল হয়ে যেতে পারে।

### আচার-ব্যবহার ও সৌজন্যবোধ

অনেক সময় মানুষের সাধারণ দ্বীনদারী, সালাত, সিয়াম, চরিত্র ঠিক থাকলেও আচার-ব্যবহার ভালো থাকে না। অনেকের ক্ষেত্রে আবার দেখা যায়, বাইরের মানুষদের

সাথে বেশ অমায়িক ব্যবহার করলেও ঘরের মানুষদের সাথে দুর্ব্যবহার করে থাকে। এ স্বভাবের কারণে নিজেদেরদের সম্পর্কগুলো একেবারে ভেঙে না দিলেও সম্পর্কের মাধুর্য নষ্ট করে দেয়।

ইসলামে যে উত্তম চরিত্রের কথা বলা হয়েছে সেটা কেবলই অশ্লীলতা ও যিনা-ব্যভিচার থেকে দূরে থাকার কথা বোঝায় না; বরং আচার-ব্যবহারও এর মধ্যে শামিল। কোনো পাত্রের ব্যাপারে খোঁজ-খবর নেওয়ার সময় খেয়াল করুন তার আচার-ব্যবহার কেমন; সে তার পরিবার-পরিজন, অফিস কলিগদের সাথে কিভাবে মেশে; ড্রাইভার, দারোয়ান কিংবা কাজের লোকদের সাথে কেমন আচরণ করে। মুখে হাসি রেখে কথা বলে, নাকি সারাক্ষণ বদমেজাজি হয়ে থাকে।

## চেহারা

পুরুষদেরকে আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা'আলা সৃষ্টি করেছেন কঠোর কঠিন ও দুর্কহ কাজগুলো সম্পাদন করার জন্য। মাথার ঘাম পায়ে ফেলে কৃষি কাজ করা, বিশাল ভারী বোঝা বহন করা, হাজার ফুট মাটির গভীরে খনিতে নেমে খনিজ দ্রব্য উত্তোলন করা, সমুদ্র যাত্রার মতো দুঃসাহসিক কাজ, উঁচু উঁচু ইমারত নির্মাণসহ যত রকম কঠিন কার্যক পরিশ্রমের কাজ আছে এগুলো করা পুরুষের দায়িত্ব। তাই পুরুষের সাধারণ শারীরিক কাঠামোর মধ্যে নারীর মতো কোমলতা, সৌন্দর্য, কমনীয়তা নেই। আল্লাহই পুরুষকে এভাবে সৃষ্টি করেছেন। পুরুষের সৌন্দর্য তার পৌরুষসুলভ কর্মকাণ্ডের মধ্যে নিহিত। তাই তার চেহারা নিয়ে খুব বেশি চিন্তিত হওয়ার প্রয়োজন নেই। তবে পুরুষের চেহারার সৌন্দর্য তার দাঢ়ির মধ্যে পাওয়া যায়। বলা হয়ে থাকে 'Beard for a man is like mane for a lion.' অর্থাৎ 'পুরুষের দাঢ়ি হলো সিংহের কেশরসম'।

মুখে দাঢ়ি না থাকা একটি নারী সুলভ বৈশিষ্ট্য। দাঢ়িবিহীন একজন সুস্থ সবল সুগঠিত চেহারার যুবককে কোমলমতি একজন নারীর সাথেই সামঞ্জস্য আনা যায়। এজন্য অনেক বিদ্বান লোকেরা দাঢ়িবিহীন লোকদের দিকে তাকানোকে কিছুটা নারীদের দিকে তাকানোর সাথে তুলনা করেছেন। তাই পাত্রের চেহারা দেখার ক্ষেত্রে দেখুন তার দাঢ়ি আছে কি না।

## বিয়ের প্রস্তাব

বিয়ের ক্ষেত্রে উন্নম চরিত্র এবং গুণাবলীর কোনো নারীর খোঁজ পাওয়া গেলে পুরুষের দ্বিতীয় পদক্ষেপ হবে তার অভিভাবকের নিকট বিয়ের প্রস্তাব পাঠানো। এই কাজটিকে আমরা 'Proposal' বা 'প্রস্তাব' বা 'খিতবাহ' বলি। এই পদ্ধতির মধ্য দিয়েই পছন্দের নারীকে বিয়ে করার চেষ্টা করতে হয়। পরিস্থিতি অনুযায়ী, আগ্রহী পুরুষ তার পছন্দনীয় নারীর অভিভাবকে সরাসরি প্রস্তাব করতে পারে। অথবা তার কোনো আত্মীয় বা বন্ধুর মাধ্যমেও প্রস্তাব পাঠাতে পারে। পুরুষের প্রস্তাব গ্রহণ করা হলে নারীকে তখন পুরুষের 'বাগ্দান' বিবেচনা করা হয়। এই 'বাগ্দান' আইনগতভাবে কার্যকর কোনো সম্ভব্য নয়। এটি পূর্ণ এবং আইনসিদ্ধ বৈবাহিক বন্ধন প্রতিষ্ঠিত হওয়ার পূর্বে একটি সম্মতি মাত্র।

যদিও প্রস্তাবে সম্মত হলেই তা বাস্তবায়ন করতে কোনো পক্ষই আইনগতভাবে বাধ্য থাকে না, তবে প্রস্তাবে রাজি হওয়ার মধ্য দিয়ে উভয়পক্ষের মাঝে একটি পারম্পরিক প্রতিশ্রুতি বা অঙ্গীকার প্রতিষ্ঠিত হয়; এবং কোনো বৈধ কারণ ছাড়াই এই প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করা এক ধরনের অনৈতিক প্রতারণা।

পাত্রিপক্ষ যদি পাত্রের এমন কোনো মারাত্মক সমস্যার কথা জানতে পারে যেটা প্রস্তাবে রাজি হওয়ার সময় তাদের জানা ছিলো না, তাহলে পাত্রিপক্ষ প্রস্তাবের সিদ্ধান্ত বাতিল করতে পারে। একইভাবে, পাত্র যদি পাত্রীর এমন কোনো সমস্যার কথা জানতে পারে যা বিয়ের প্রস্তাব পাঠানোর সময় তাদের জানা ছিলো না, তাহলে তারাও সে বিয়ের প্রস্তাব বাতিল করতে পারে। পাত্রের জন্য নিয়ম হলো সে পাত্রীর পিতার নিকট কিংবা পিতা না থাকলে তার নিকটতম অভিভাবকের নিকট বিয়ের প্রস্তাব নিয়ে যাবে।

কোনো কোনো অঞ্চলে এমন একটি বিদ 'আতী প্রথা রয়েছে যে, কোনো পুরুষ কোনো নারীকে বিয়ের জন্য প্রস্তাব করলে নারীর পরিবার যদি প্রস্তাবে রাজি হয়,

তাহলে সকলেই দু'হাত তুলে ফাতিহা পাঠ করে। এটি একটি বিদ‘আত, কারণ সুন্নাহতে এর কোনো ভিত্তি নেই; আবার সালাফদের রীতি থেকেও এটা প্রমাণিত নয়।

### পাত্রী দেখা

কোনো পুরুষ কোনো নারীকে বিয়ে করার মনস্ত করলে আনুষ্ঠানিকভাবে বিয়ের প্রস্তাব পাঠানোর পূর্বেই নারীকে দেখার অনুমতি আছে; বরং দেখে নিতে উৎসাহিত করা হয়েছে। তবে ততটুকুই দেখা যাবে যতটুকু স্বাভাবিকভাবে দেখা সন্তুষ। এটা পুরুষকে সঠিক সিদ্ধান্ত প্রহণে সাহায্য করবে। ফলে সে নিশ্চিত হতে পারবে যে, সে তার ভবিষ্যৎ স্ত্রীর চেহারা-সৌন্দর্য নিয়ে সন্তুষ্ট এবং তাকে স্ত্রী হিসেবে পেতে উদ্গ্ৰীব কি না।

মুগীরাহ ইবন শু’বাহ رض বর্ণনা করেন যে, তিনি একবার এক নারীকে বিয়ে করতে মনস্ত করেন। আল্লাহর রাসূল ﷺ তা শুনে তাকে বলেন:

“তুমি গিয়ে তাকে দেখে এসো, এটা তোমাদের মধ্যে হৃদ্যতা সৃষ্টি করতে সহায়তা করবে।”

এরপর তিনি পাত্রীর বাড়িতে গিয়ে হাজির হয়ে পাত্রীর পিতা-মাতাকে বলেন, “আল্লাহর রাসূল ﷺ আমাকে বলেছেন তাকে দেখতে।” তারা তো তার কথা শুনে হতভস্ত। মেয়েটি তখন ভেতরবাড়িতে ছিল। সেখান থেকে সে বলে, “আমি স্পষ্ট ভাষায় বলছি, আল্লাহর রাসূল ﷺ যদি সত্যই আপনাকে আমায় দেখতে বলে থাকেন তাহলে এই যে আমি, দেখে নিন; আর যদি তিনি না বলে থাকেন তাহলে আপনি কিছুতেই আমার দিকে তাকাবেন না।” তিনি তখন তার দিকে তাকান এবং তাকে বিয়ে করেন। মুগীরা رض পরবর্তীতে বলেন, “(ভালোবাসার দিক থেকে) তার অবস্থান আর কেউই অর্জন করতে পারেনি, যদিও আমি সন্তুরের অধিক নারীকে বিয়ে করেছি।”<sup>[৩৭]</sup>

মুহাম্মাদ ইবনু মাসলামাহ رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“যদি কোনো ব্যক্তির মনে কোনো নারীকে বিয়ের প্রস্তাব করার ইচ্ছে হয়, তাহলে তার জন্য সে নারীকে দেখার মধ্যে কোনো অসুবিধা নেই।”<sup>[৩৮]</sup>

জাবির ইবন আবুল্লাহ বর্ণনা করেন যে, তিনি রাসূলুল্লাহ ﷺ-কে বলতে শুনেছেন:

[৩৭] মুসনাদ আহমাদ, মুসতাদরাক হাকিম। আলবানী সাহীহ সাব্যস্ত করেছেন, আস সাহীহাহ হাদীস নং ৯৬

[৩৮] ইবনু মাজাহ এবং আহমাদসহ অন্যান্যরা হাদীসাটি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসাটিকে সাহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদীস ৯৮)।

## বিয়ের প্রস্তাব

“তোমাদের কেউ যখন কোনো নারীকে বিয়ের প্রস্তাব দাও, তখন তার উচিত তাকে দেখে নিতে চেষ্টা করা; যেন তা তাকে বিয়ে করতে আরও আগ্রহী করে তোলে এবং সে বিয়ে করে ফেলে।”

জাবির ইবন আব্দুল্লাহ বলেন, “এরপর আমি একবার এক নারীকে বিয়ে করার আগ্রহ পোষণ করলাম। আমি লুকিয়ে লুকিয়ে তাকে দেখতে থাকলাম, এক পর্যায়ে এটা আমাকে বিয়ের দিকে নিয়ে গেল।”<sup>[৩৯]</sup>

আবু উমায়েদ আস সা’দী বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ ﷺ বলেন:

“তোমরা যখন কোনো নারীকে বিয়ের জন্য প্রস্তাব দাও, তখন তার দিকে তাকানোতে কোনো গুনাহ নেই; যদি সত্যি সে বিয়ে করার ইচ্ছে পোষণ করে—এমনকি যদি সে (নারী) বিষয়টি না-ও জানে।”<sup>[৪০]</sup>

ঠিক যেমন একজন পুরুষ তার ভবিষ্যৎ স্ত্রীকে দেখতে পারবে, একজন নারীও তার ভবিষ্যৎ স্বামীকে দেখতে পারবে এবং তার ক্ষেত্রেও উল্লিখিত শর্তগুলো প্রযোজ্য। এক্ষেত্রে লক্ষণীয় যে, পুরুষের আওরাহ হলো তার নাভি থেকে হাঁটু পর্যন্ত। অবশ্য, পুরুষের মতো না হয়ে, নারীর দৃষ্টিতে যেন তার সলজ্জ সংকোচ ফুটে ওঠে। কারণ তা হলো স্বাভাবিক নারীসুলভ আচরণের পরিচায়ক।

কোনো নারীর দিকে একাগ্রচিত্তে দৃষ্টি দেওয়া পুরুষের জন্য নিষিদ্ধ যদি না সে নারী সেই পুরুষের মাহুরাম কেউ হয়। তবে বিয়ের উদ্দেশ্য নিয়ে কোনো নারীর দিকে তাকালে সেটি হবে এই ছক্কুমের সুস্পষ্ট ব্যক্তিক্রম এবং এক্ষেত্রে অনিবার্যভাবেই কিছু শর্ত পূরণ করতে হবে:

- ✿ নারীর দিকে যে কেউ এমনিতেই তাকায় আর যে পুরুষ বিয়ের উদ্দেশ্যে তাকায় এদের মধ্যে পার্থক্য হলো— দ্বিতীয়জনের তাকানো বৈধ এবং সে পুনরায় তাকাতে পারে, কিন্তু প্রথমজনের তাকানো বৈধ নয়।
- ✿ এই তাকানো হতে হবে সত্যিকারে বিয়ে করার উদ্দেশ্যে; নিজের কামনা-বাসনাকে চরিতার্থ করার জন্য নয়।
- ✿ বিয়ের প্রস্তাব পাঠালে নারীর পরিবার সে প্রস্তাবে রাজি হলে পরে-একথা জেনেই কেবল বিয়ের উদ্দেশ্যে সে নারীর দিকে তাকানো যাবে।

[৩৯] সুনান আবু দাউদ, মুসনাদ আহমাদ। আলবানী সাহীহ সাব্যস্ত করেছেন।

[৪০] মুসনাদ আহমাদ ও মু'জাম কাবীর। আলবানী সাহীহ সাব্যস্ত করেছেন।

## ভালোবাসার চাদর

- ✿ কোনো রকম স্পর্শ করা বা খাল্লওয়াহ (নারীর সাথে নির্জনে সাক্ষাৎ করা) ব্যতিরেকে কেবল দেখা বা তাকানো যাবে।
- ✿ শরীরের সে অংশগুলোই কেবল দেখা যাবে যেগুলো একজন নারীর জন্য কোনো অপরিচিতের সম্মুখে খোলা রাখা বৈধ। অর্থাৎ, তার মুখমণ্ডল এবং কঙ্গি পর্যন্ত দু'হাত।
- ✿ রাস্তাঘাটে চলাফেরার সময় জানা অজানা নির্বিশেষে সকল নারীদের প্রতি বিয়ের ইচ্ছেকে ঢাল হিসেবে ব্যবহার করে তাকানো বৈধ নয়।

কোনো কোনো বিশেষজ্ঞ আমাদের উল্লিখিত সর্বনিয় পরিসীমার বাইরেও পুরুষকে পাত্রী দেখার অনুমতি দেন। আমরা অনেকগুলো কারণে এই মতকে সমর্থন করি না। তবে সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ যে কারণটি তা হলো— অন্তরে যাদের ব্যাধি আছে সেসব পুরুষদের জন্য এটা একটা মওকা। ফলে খুব সহজেই তারা এই সুযোগকে কাজে লাগিয়ে নিজেদের কামনা চরিতার্থ করার মাধ্যমে সরল ও কোমলমতি নারীদের সর্বনাশ ডেকে আনতে পারে।

পাত্র যদি মনে করে, তার পছন্দের পাত্রীকে ভালোমতো দেখা হয়নি এবং পাত্রী সম্পর্কে তার ধারণা স্বচ্ছ নয়; তাহলে পাত্রীকে ভালোভাবে দেখার জন্য সে তার কোনো নারী আত্মীয়কে পাঠাতে পারে এবং সে আত্মীয় তাকে পাত্রী সম্পর্কে অবগত করাতে পারে।

## ছবি আদান-প্রদান

আলোকচিত্রের ব্যাপক ছড়াছড়ির এই যুগে প্রায়ই জিজ্ঞেস করা হয়— বিবাহে আগ্রহী নারী-পুরুষ তাদের ছবি আদান-প্রদান করতে পারবে কি না? এই প্রশ্নের উত্তর দেওয়ার আগে আমাদের কয়েকটি গুরুত্বপূর্ণ বিষয় উল্লেখ করা প্রয়োজন:

- ✿ জীবিত প্রাণীর আলোকচিত্র বা ছবি ইসলামে এমনিতেই নিষিদ্ধ। কোনো বিশেষ পরিস্থিতিতে বিশেষ কোনো মাসলাহাহ (উপকার) পাওয়া গেলেই এবং ভিন্ন কোনো উপায়ে ঐ উদ্দেশ্য পূরণ না হলেই কেবল মুসলিমদের জন্য ছবি তোলার হ্রকুম রয়েছে।
- ✿ এমনকি যদিও কোনো বিশেষ পরিস্থিতিতে ছবি তোলা অনুমোদিত হয়, তারপরও ছবিতে নিষিদ্ধ কিছুকে দেখানো যাবে না। যেমন, পূর্ণ পর্দা না করা কোনো নারীর ছবি।

## বিয়ের প্রস্তাব

১. বিয়ের পাত্র যখন পছন্দের পাত্রীর দিকে তাকায়, তখন কিন্তু পাত্রী বা তার গোপনীয়তা লঙ্ঘিত না হয় বা কোনো রকম সীমালঙ্ঘন না হয়। কিন্তু, ছবির দিকে পাত্র চাইলে যতক্ষণ খুশি তাকিয়ে থাকতে পারে। যাদের দেখার কথা না, তাদেরকেও দেখাতে পারে। কিংবা বিয়ে না হলেও সেই ছবি নিজের কাছে রেখে দিতে পারে। এতে সেই নারীটির বিরাট ক্ষতি হয়ে যায়। যে কেউ চাইলেই তখন তার ছবিটি দেখতে পারবে।

উল্লিখিত বিষয়গুলোর কারণেই ছবি আদান-প্রদান করা বৈধ বা অনুমোদিত নান। তবে পরিস্থিতি যদি এমন হয় যে, পাত্রীর কোনো মাহৱাম পাত্রকে ছবিটি দেখায়, তাহলে তা করা যেতে পারে। তবে পাত্রীর ছবি পাত্রের কাছে রেখে দেওয়া যাবে না।

## কথা বলা এবং যোগাযোগ রাখা

বিয়ের জন্য পাত্রীকে একান্তভাবে নির্বাচিত করলে পাত্র-পাত্রীর মধ্যে কথা বলা এবং যোগাযোগ রাখার অনুমতি রয়েছে। তবে এটি হতে হবে নিয়ন্ত্রিত পরিবেশের অধীনে অর্থাৎ পাত্রীর অভিভাবক অথবা পাত্রের প্রতিনিধির উপস্থিতি ও নজরদারিতে। নির্জনে সাক্ষাৎ করা কিংবা একান্তে একাকী কথা বলা যাবে না, কোনো রকম স্পর্শ বা সীমালঙ্ঘন করা যাবে না। কথাবার্তা এবং যোগাযোগ কেবল সেই পর্যন্ত সীমাবদ্ধ থাকবে যা পাত্র-পাত্রীকে সিদ্ধান্ত নিতে সাহায্য করবে।

## ইন্টারনেটে পাত্রী খোঁজা

বর্তমান যুগে যোগাযোগের সর্বাধুনিক এবং সবচেয়ে শক্তিশালী একটি মাধ্যম হলো ইন্টারনেট। প্রয়োজনীয় তথ্য খোঁজা, পড়াশোনা, লেখালেখি, জ্ঞানার্জন, চ্যাট করা, কেনাকাটা ইত্যাদির উদ্দেশ্যে একজন সাধারণ মানুষ ইন্টারনেট ঘেঁটে অনেক সময় ব্যয় করে থাকে। ফলে, অনেকেই ইন্টারনেটের বিচিত্র এই দুনিয়ায় পাত্র বা পাত্রীও খোঁজেন! এখানে নারী-পুরুষের মধ্যে 'আলাপ' চলে, ই-মেইল বিনিময় হয়, এমনকি ডিজিটাল ছবিও তারা আদান-প্রদান করে!

যাই হোক, অধিকাংশ ক্ষেত্রেই ইন্টারনেটে প্রস্তাব দিয়ে বিয়ে করার রয়েছে নেতৃত্বাচক পরিণাম। এই প্রক্রিয়ায় অনেক মিথ্যাচার, আপত্তিকর ও নিষিদ্ধ আচরণ

সংঘটিত হয়— ইসলামের দৃষ্টিতে যেগুলো নির্জলা পাপ। এগুলোর মধ্যে উল্লেখযোগ্য কয়েকটি হলো:

- ✿ প্রত্যেকেই বিপরীত পক্ষকে প্রভাবিত করার জন্য নিজেদের সম্পর্কে এক মিথ্যা চিত্র তুলে ধরে। নিজে যেমনটি হলে ভালো হয় সেভাবেই একজন আরেকজনের কাছে নিজেকে উপস্থাপন করে। বাস্তবে কে কেমন তা কেউ উপস্থাপন করে না। একটি কীবোর্ড আর একটি মনিটর নিয়ে ঘরের মধ্যে একাকী হওয়ায় নিজের সম্পর্কে মিথ্যা বর্ণনা দেওয়ার সুযোগ থাকে। সে কারণেই এই ধরনের যোগাযোগে মিথ্যাচার এবং প্রতারণার সন্তাবনা অনেক বেশি।
- ✿ পাত্রের পরিবার, তার বন্ধুবন্ধন, আচার-আচরণ, তার আর্থিক অবস্থা ইত্যাদি বিষয়ে খোঁজ-খবর নেয়ার দায়িত্ব সাধারণত নারীর অভিভাবকের। কিন্তু ব্যাপারটি ইন্টারনেটে ঘটলে সেক্ষেত্রে নারী উল্লিখিত বিষয়গুলো বর্জন করে নিজেই নিজের চূড়ান্ত কর্তাব্যক্তি হয়ে যায়। ফলে নিজের আবেগ, অদূরদর্শিতা আর পাত্রের চাতুর্য মিলে তৈরি হয় পুরো জিন্দেগীর এক অন্যতম ভুল সিদ্ধান্ত!
- ✿ অধিকাংশ ক্ষেত্রেই ডিজিটাল ছবির আদান-প্রদান হয়ে থাকে। এটা নিষিদ্ধ; পর্দার খেলাপ; পাপ। কারণ, ডিজিটাল ছবি খুব সহজেই এবং স্থায়ীভাবে কম্পিউটারে সংরক্ষণ করা যায় এবং 'আগ্রহী'-দের মাঝে হাতবদল হতে পারে। উল্লিখিত কারণগুলোসহ আরও অনেক কারণেই ইন্টারনেটের মাধ্যমে বিয়ের চেষ্টা করা একটি বিপদ্জনক পন্থা যা সৎকর্মশীল মুসলিমদের জন্য অবশ্যই বর্জনীয়।

### সিদ্ধান্ত গ্রহণে ইস্তেখারাহ্ করা

ইস্তেখারাহ্ বলতে আল্লাহর প্রতি নিজের পূর্ণ আস্থা স্থাপনের মাধ্যমে কল্যাণ এবং মঙ্গল অন্বেষণ করাকে বোঝায়। একজন মু'মিনের উচিত যেকোনো গুরুত্বপূর্ণ উদ্যোগ নেয়ার পূর্বে ইস্তেখারাহ্ সালাত আদায় করা। যেহেতু বিয়ের সিদ্ধান্তটা একজন মানুষের জীবনে এক অন্যতম গুরুত্বপূর্ণ সিদ্ধান্ত, তাই বিয়ের বন্ধনে আবদ্ধ হওয়ার ব্যাপারে পাকা কথা দেওয়ার পূর্বে নারী-পুরুষ উভয়ের জন্যই ইস্তেখারাহ্ সালাত আদায় করা সমীচীন। তবে ইস্তেখারাহ্ সম্পর্কে মানুষের মাঝে এমন কিছু ভুল ধারণা রয়েছে যেগুলো থেকে সচেতন থাকা প্রয়োজন, যেমন:

- ইন্দ্রিয়ারাহ্ম সম্পর্কে একটি ভুল ধারণা হলো— যদি কেউ দুই বা ততোধিক বিকল্প পছাড়ার মধ্যে কোনটি গ্রহণ করলে উত্তম হবে সে বিষয়ে অনিশ্চয়তায় ভোগে, তাহলে এই সালাত আদায় করা হয়। অথচ হাদিস থেকে এটি স্পষ্ট যে, ব্যক্তি বিকল্প পছাড়গুলোর কোনটি গ্রহণ করবে তা সিদ্ধান্ত নেয়ার পরেই কেবল এই সালাত আদায় করতে হবে।
- অনেকে মনে করেন যে, ইন্দ্রিয়ারাহ্ম সালাতের অন্যতম গুরুত্বপূর্ণ শর্ত হলো এই সালাত ঘুমোতে যাওয়ার ঠিক পূর্বে আদায় করতে হবে এবং কী করলে ভালো হবে সে ব্যাপারে স্বপ্নের মাধ্যমে ইঙ্গিত পাওয়া যাবে।
- অনেকে আবার মনে করেন যে, ইন্দ্রিয়ারাহ্ম সালাত সঠিক সিদ্ধান্তের প্রতি অন্তরে টান সৃষ্টি করবে।  
এই ধরনের অনুমান ভিত্তিক কথাবার্তার কোনোই ভিত্তি নেই এবং এগুলোর কোনোটিই হাদিস দ্বারা সমর্থিত নয়।

### পরামর্শ করা

ইন্দ্রিয়ারাহ্ম করা ছাড়াও কোনো গুরুত্বপূর্ণ বিষয়ে সিদ্ধান্ত নেয়ার পূর্বে প্রবীণ ও জ্ঞানসম্পন্ন ব্যক্তিদের সাথে পরামর্শ করার ব্যাপারে উৎসাহিত করা হয়েছে। বিয়ের ক্ষেত্রে নারী এবং পুরুষের জন্য তাদের সন্তান্য জীবনসঙ্গী বা সঙ্গনীর ব্যাপারে খোঁজখবর নেয়াকে উৎসাহিত করা হয়েছে যাতে নিশ্চিত হওয়া যায় যে, পাত্র এবং পাত্রীর মধ্যে প্রয়োজনীয় সদ্গুণগুলো রয়েছে কি না।

বিয়ে কিংবা ব্যবসায়িক অংশীদার হিসেবে বিবেচনা করা হচ্ছে এমন কারো সম্পর্কে কোনো ব্যক্তির কাছে তথ্য, উপদেশ বা পরামর্শ চাওয়া হলে, সেই ব্যক্তির উচিত তার সম্পর্কে সত্য বলা এবং সদুপদেশ প্রদান করা। যে ব্যাপারে জানতে চাওয়া হয়েছে কেবল ঐ ব্যাপারেই তথ্য-পরামর্শ সীমাবদ্ধ রাখতে হবে। অপ্রাসঙ্গিক কোনো কথা বলা যাবে না; কারণ তা পরচর্চার মতো নিষিদ্ধ কাজ বলে গণ্য হবে।

### সত্য জানানো

বিয়ের উভয় পক্ষের সম্বন্ধে পরম্পরাকে সঠিক তথ্য প্রদান করা জরুরী। তথ্য সেসব ব্যাপারেই সীমাবদ্ধ থাকা উচিত যে ব্যাপারগুলো বিয়ের জন্য প্রয়োজন বলে মনে হয়। সংশ্লিষ্ট দুই পক্ষ যেমন: পাত্র-পাত্রী, তাদের প্রতিনিধিগণ এবং এমন কেউ

যাদের কাছে পরামর্শ চাওয়া হয়, তাদের সকলের কাছ থেকেই পুরোপুরি সঠিক তথ্য পাওয়াটা উচিত। কেউ কোনো সমস্যার কথা গোপন করলে ইসলামের দৃষ্টিতে তা হবে সত্যকে গোপন করার মতো পাপ কাজ যা ভবিষ্যতে পাত্র-পাত্রী উভয়ের জন্যই সমস্যার কারণ হতে পারে।

উদাহরণস্বরূপ, বিয়ের কথাবার্তা চলছে এমন পাত্র-পাত্রীর কারও যদি কোনো শারীরিক সমস্যা থাকে, তাহলে তা অবশ্যই জানিয়ে দিতে হবে। যদি পাত্র বা পাত্রী দু'জনের কারও কোনো শারীরিক অক্ষমতা যেমন: ধ্বজভঙ্গ, ঘৌন রোগ-ব্যাধি ইত্যাদি থাকে, তাহলে চূড়ান্ত বাগ্দানের পূর্বেই তা অপর পক্ষকে অবহিত করতে হবে। তবে এক্ষেত্রে একজন অপরজনের কোনো সমস্যার কথা জানতে পারলে, সেই সমস্যার কথা গোপন রাখা হবে একজন ঈমানদার সৎকর্মশীল লোকের কাজ; কোনোভাবেই তা মানুষের মাঝে প্রচার বা প্রকাশ করা তার জন্য বৈধ নয়।

## নিষিদ্ধ প্রস্তাব

### বিবাহিতা নারীকে প্রস্তাব না দেওয়া

বিবাহিতা কোনো নারীকে বিয়ের প্রস্তাব দেওয়া সম্পূর্ণ নিষিদ্ধ। ঐ নারীর ক্ষেত্রেও একই হ্রুম প্রযোজ্য যার স্বামী তাকে প্রথম বা দ্বিতীয় তালাক (চূড়ান্ত নয়) দিয়েছে এবং সে এখনও ইদতের মধ্যে রয়েছে। কারণ হলো, এক্ষেত্রে নারীকে তার স্বামীর কর্তৃত্বাধীন বলে বিবেচনা করা হয় এবং অন্য কোনো পুরুষ উক্ত স্বামীর এই অভিভাবকত্বের ব্যাপারে প্রশ্ন তুলতে পারে না।

### কারও প্রস্তাবের ওপর প্রস্তাব না দেওয়া

ইতিপূর্বে কোনো মুসলিম পুরুষ কোনো মুসলিম নারীকে বিয়ের প্রস্তাব দিয়েছে, এমতাবস্থায় অন্য কোনো মুসলিমের জন্য সেই নারীকে বিয়ের প্রস্তাব দেওয়া বৈধ নয়। প্রথম প্রস্তাব গ্রহণ করা হোক আর প্রত্যাখ্যান করাই হোক— যতক্ষণ পর্যন্ত নারীর পক্ষ থেকে প্রথম প্রস্তাবের ব্যাপারে কোনো সুস্পষ্ট মতামত না আসে, ততক্ষণ পর্যন্ত অন্যদেরকে অপেক্ষা করতে হবে। পূর্বজনের প্রস্তাব নাকচ করা হলে পরে অন্যরা প্রস্তাব নিয়ে যেতে পারবে। আবু হুরায়রা رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

## বিয়ের প্রস্তাব

“যে নারীকে তোমার (কোনো মুসলিম) ভাই (বিয়ের) প্রস্তাব করেছে, তোমাদের কেউ যেন তাকে প্রস্তাব না করে। অপেক্ষা করো যতক্ষণ না সে বিয়ে করে ফেলে অথবা প্রস্তাব প্রত্যাহার করে।”<sup>[৪১]</sup>

## অন্যান্য নিষিদ্ধ বিষয়সমূহ

বিয়ের প্রস্তাব করার ক্ষেত্রে নিম্নোক্ত কাজগুলোও নিষিদ্ধ:

- ✿ কোনো ব্যক্তির চারজন স্ত্রী থাকলে সে আর কোনো নারীকে বিয়ের প্রস্তাব করতে পারে না; যতক্ষণ না স্ত্রীদের এক বা একাধিক জনকে সে তালাক প্রদান করে।
- ✿ পুরুষ এমন কোনো নারীকে বিয়ের প্রস্তাব করতে পারে না যাকে বর্তমান স্ত্রীর সাথে একত্রে বিয়ে করা হারাম। যেমন: বর্তমান স্ত্রীর বোন, খালা, ফুপু ইত্যাদি।
- ✿ কোনো ব্যক্তি যদি তার স্ত্রীকে তিন তালাক দিয়ে বিছেদে চলে যায়, সেক্ষেত্রে সেই ব্যক্তি তার এই প্রাক্তন স্ত্রীকে আর বিয়ের প্রস্তাব দিতে পারবে না। তবে যদি তার সেই প্রাক্তন স্ত্রীর অন্য কোথাও বিয়ে হয় এবং সেখান থেকে পুনরায় তালাকপ্রাপ্তা কিংবা বিধবা হয় তারপর আবার প্রস্তাব দিতে পারবে।
- ✿ স্বামীর মৃত্যু কিংবা চূড়ান্ত তালাক<sup>[৪২]</sup> প্রাপ্তির পর যে নারী ইন্দিতের মধ্যে রয়েছে, তার ইন্দিত সম্পূর্ণ না হওয়া পর্যন্ত তার কাছে সরাসরি বিয়ের প্রস্তাব নিয়ে যাওয়া অনুচিত। তবে তাকে আকার- ইঙ্গিতের মাধ্যমে আভাস দেওয়া যেতে পারে।

## অধীনস্ত নারীর জন্য বিয়ের প্রস্তাব প্রদান

নিজ কন্যা কিংবা অভিভাবকছের অধীন কোনো নারীর বিয়ের জন্য কাউকে প্রস্তাব দেওয়া বৈধ। আব্দুল্লাহ ইবন ‘উমার বর্ণনা করেন যে, তার বোন হাফসার স্বামী খুনায়স ইবন ল্যাফাহ আশ শামী মারা যাওয়ার পর ‘উমার উসমানকে প্রস্তাব দেন হাফসাকে বিয়ের জন্য। কয়েক দিন পর ‘উসমান অপারগতা জানিয়ে বলেন যে, ‘আমি এই মুহূর্তে বিয়ের কথা ভাবছি না।’ ‘উমার তারপর গিয়ে আবু বাকরকে প্রস্তাব দেন, কিন্তু তিনি

[৪১] আন-নাসা’ঈ হাদিসটি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া’ আল-গালীল, হাদিস ১০৩০)।

[৪২] তৃতীয় এবং চূড়ান্ত তালাক অথবা খুল’ (নারীর অনুরোধ) বা ফাস্থ (বিচারকের আদেশ) এর মাধ্যমে বিবাহ বিছেদ এর অন্তর্ভুক্ত।

কোনো জবাবই দিলেন না। এতে ‘উমার বেশ মনোকষ্ট পান। তারপর রাসূলুল্লাহ ﷺ তাকে এই বলে সাস্ত্রনা দেন যে, “হাফসা উসমানের চেয়ে উত্তম কারণ সাথে বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ হবে এবং ‘উসমান হাফসার চেয়ে উত্তম কাউকে বিয়ে করবে।” এর মাত্র ক’দিন পর আল্লাহর রাসূল ﷺ নিজে হাফসাকে বিয়ের প্রস্তাব দেন এবং ‘উমার তা সন্তুষ্টিপ্রদ গ্রহণ করে নেন। পরে আবু বাকৃর উমারের সাথে দেখা করে বলেন, ‘আপনি হাফসার বিয়ের প্রস্তাব দিলে আমি কোনো জবাব না দেওয়ায় সন্তুষ্ট আপনি কষ্ট পেয়েছেন।’ ‘উমার বলেন ‘হ্যাঁ। আবু বাকৃর ﷺ তার কারণ ব্যাখ্যা করে তখন বলেন, ‘আমি আপনার প্রস্তাবের কোনো জবাব না দেওয়ার কারণ ছিল— আমি আল্লাহর রাসূল ﷺ-কে তার কথা উল্লেখ করতে শুনেছি; আর আমি চাচ্ছিলাম না আল্লাহর রাসূলের গোপনীয়তা প্রকাশ করে দিতে। তিনি যদি তাকে বিয়ে না করতেন তবে আমি অবশ্যই প্রস্তাব গ্রহণ করতাম।’<sup>[৪৩]</sup>

আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা'আলা আমাদেরকে কুরআনে আরও এক নেক্কার বান্দার ঘটনা শুনিয়েছেন যেখানে তিনি তার দুই কন্যার এক কন্যাকে নবী মুসা (আ.)-এর সাথে বিয়ের প্রস্তাব দিয়েছেন। এ ঘটনা উল্লেখ করে আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা'আলা বলেন:

« সে (মুসাকে) বললো, আমি তোমার কাছে আমার এই দুই মেয়ের একজনকে এই শর্তে বিয়ের প্রস্তাব করছি যে, (এর বিনিময়ে) আট বছর তুমি আমাকে মজুর (শ্রম) দেবে; আর তুমি যদি দশ বছর পূর্ণ করো সেটা তোমার ব্যাপার। তবে আমি তোমার ওপর কোনো বোঝা চাপিয়ে দিতে চাচ্ছি না। তুমি আমাকে ইনশা-আল্লাহ সৎকর্মশীলদের দলভুক্ত পাবে। »<sup>[৪৪]</sup>

### বাগ্দানের আংটি ও স্বর্ণালঙ্কার

বাগ্দান্তা যুগলদের মাঝে প্রায়ই ‘বাগ্দানের আংটি’ বদল হয় এবং পাত্র বিয়ের কথাবার্তা চলার সময় পাত্রীকে স্বর্ণালঙ্কারসহ নানা ধরনের উপহার সামগ্রী দিয়ে থাকে। এমনটি করা ইসলামের পরিপন্থী। কারণ এই মূহূর্ত পর্যন্ত তাদের মাঝে কোনো ধরনের সম্পত্তি বা উপহার সামগ্রী বিনিময়ের কোনো বৈধ কারণ নেই- যতক্ষণ না তারা শার’ঈ বিধান মতে বিয়ে বন্ধনে আবদ্ধ হয়। অনেক ক্ষেত্রে এই ধরনের অপরিণামদর্শী কর্মকাণ্ড

[৪৩] সাহীহ আল বুখারী, সুনান আন নাসাই।

[৪৪] সূরা কাসাস, ২৮:২৭।

## বিয়ের প্রস্তাব

উভয়ের মাঝে মারাত্মক বিবাদের কারণ হয় যদি কোনো কারণে বাগ্দান ভেঙ্গে যায়।

অধিকস্ত, ইসলামে এই বাগ্দান আংটি বদলের কোনো ভিত্তি নেই। এই চর্চার উভয় হয়েছে এক প্রাচীন খ্রিস্টীয় প্রথা থেকে যা মুসলিমদের অনুকরণ করা উচিত নয়।

### বাগ্দান পার্টি

অনেক মুসলিম সমাজে বাগ্দান পর্বটিকে বেশ ধূমধাম করে অতিথি অভ্যর্থনার মধ্য দিয়ে উদ্যাপন করা হয়। এখানে বিভিন্ন ধরনের নিষিদ্ধ পানীয় পরিবেশন করা হয়; গান-বাজনার ব্যবস্থা করা হয়; পাত্র পাত্রীকে চুম্বন করে; একসাথে ছবি তোলে। এগুলোর সবকিছুই সুন্নাহ্ ও ইসলামী আদর্শের সম্পূর্ণ পরিপন্থী। অতএব, এগুলো পুরোপুরি বর্জনীয়।

অধিকস্ত, বাগ্দানের এই পর্বটি লোকজনের অগোচরে হওয়া উচিত। কারণ শার‘ঈদ দৃষ্টিকোণ থেকে এই ধরনের আয়োজনের কোনো তাৎপর্য নেই। বাগ্দানের বিষয়টি লোক জানাজানি হয়ে যাওয়ার পর যদি কোনো কারণে তা বিয়ে পর্যন্ত না গড়ায়, তাহলে এর পরিণতি হতে পারে বেশ লজ্জাকর, যা বিশেষ করে পাত্রীর সুনাম ক্ষুণ্ণ করতে পারে।

### বাগ্দান্তা দম্পত্তির নির্জন অন্তরঙ্গতা

কিছু মুসলিম বিয়ের প্রস্তাবের আনুষ্ঠানিকতার মাঝে অনেক অন্যসামাজিক বিষয় চালু রয়েছে। এগুলোর অধিকাংশের উভয় ঘটেছে বিজাতীয় সংস্কৃতির অঙ্গ অনুকরণ থেকে। পরবর্তী অংশে এমনই কিছু বিষয় আমরা উল্লেখ করবো।

বাগ্দানের পরে এবং বিয়ের পূর্বে, নারীর পরিবার নারীকে তার 'বাগ্দান্তা'র সাথে বাইরে ঘুরতে যাওয়ার, নির্জনে দেখা করার, এমনকি চুম্বন-আলিঙ্গন করারও অনুমতি দিয়ে দেয়। অনেকেই বাগ্দানকে গাড়ী কেনার আগেই তা 'চালিয়ে দেখা'র পর্ব বলে ভেবে থাকে। জীবনের দীর্ঘ একটা সময় একসাথে কাটানো যাবে কি না বুঝে ওঠার জন্য তারা এই সময়টাতে নিজের সঙ্গী বা সঙ্গিনীকে পূর্ণমাত্রায় বাজিয়ে দেখে। এমনটি করতে গিয়ে তারা যিনা-ব্যভিচারসহ ছোট বড় অনেক পাপে লিপ্ত হয়। আর মজার ব্যাপার হলো, এই ধরনের অনেক বাগ্দান ভেঙ্গে যেতে দেখা যায় এবং বিয়ের আগেই ছাড়াছাড়ি হয়ে যায়!

## ভালোবাসার চাদর

কোনো কোনো পরিবার বাগ্দানের পর এবং বিয়ের আগের সময়টাকে কয়েক মাস এমনকি কয়েক বছর পর্যন্ত দীর্ঘায়িত করে থাকে। ফলে বাগ্দান্তা যুগলের পাপে লিপ্ত হওয়ার পরিমাণ আরও বেড়ে যায়।

## আক্ষ অনুষ্ঠান

একটি আদর্শ পরিবার গঠনের লক্ষ্যে একজন নারী ও একজন পুরুষের মাঝে বিয়ের (নিকাহ) চুক্তিনামা সম্পাদিত হয়। বিয়ের চুক্তিনামা হলো সেই আনুষ্ঠানিক বন্ধন যার মাধ্যমে দু'জন অপরিচিত মানুষ একে অপরের স্বামী-স্ত্রী'তে পরিণত হয়। এই চুক্তি সম্পন্ন হওয়ার মধ্য দিয়ে অনেক দায়িত্ব এবং কর্তব্য পরম্পরের প্রতি অপরিহার্য হয়ে যায় এবং তা থেকে অনেক সুফল প্রত্যাশা করা হয়।

অনেক মানুষের কাছে বিয়ের এই চুক্তিটি তাদের জীবনের অন্যান্য অনেক চুক্তির চেয়ে অধিক গুরুত্বপূর্ণ। কারণ, প্রতিটি বৈবাহিক চুক্তিরই রয়েছে সুদূরপ্রসারী প্রভাব। তাদের এই চুক্তির মাধ্যমে তাদের থেকেই আগামী দিনে পৃথিবীতে আগমন করে ভবিষ্যৎ প্রজন্ম। বিয়ের এই চুক্তিনামার এহেন গুরুত্বপূর্ণ এবং সুগভীর তাৎপর্যের কারণে ইসলাম এ ব্যাপারে বেশকিছু নীতিমালা নির্ধারণ করে দিয়েছে যেগুলো অবশ্য পালনীয়। এই নীতিমালাসমূহই হচ্ছে এ অধ্যায়ের আলোচনার বিষয়বস্তু।

বিয়ে একটি অতীব গুরুত্বপূর্ণ বিষয় এবং এটিকে গুরুত্বের সাথেই বিবেচনা করতে হবে। প্রথমে বিয়ে করে পরে বলবে যে, আসলে সেই অর্থে বিয়ে করিনি বা শুধু মজা করার জন্য করেছিলাম— এই জাতীয় কাজ পুরুষের জন্য বৈধ নয়। আবু হুরায়রা <sup>رض</sup> বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“তিনটি বিষয় আছে যেগুলোকে গুরুত্বপূর্ণ এবং অগুরুত্বপূর্ণ উভয় আলোচনাতেই গুরুত্বপূর্ণ বিবেচনা করা হয়— বিয়ে, তালাক এবং প্রত্যাবর্তন (সেই স্ত্রীকে যাকে চূড়ান্ত তালাক দেওয়া হয়নি)।”<sup>[৪৫]</sup>

[৪৫] হাদিসটি আবু দাউদ এবং আত-তিরমিয়ি সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৮২৬ এবং সহীহুল জামে', হাদিস নং ৩০২৭)।

ইসলামিক বিয়ের চুক্তিনামায় থাকে ছয়টি শর্ত, দুটি স্তন্ত, একটি ওয়াজিব এবং একটি ঐচ্ছিক বিষয়। এর কোনো একটি শর্ত বা স্তন্ত বাদ পড়লে চুক্তি বাতিল হয়ে যাবে। ইচ্ছাকৃতভাবে ওয়াজিব ত্যাগ করলে পাপ হবে।

### শর্তসমূহ:

- ✿ পাত্রের উপযুক্ততা
- ✿ পাত্রীর উপযুক্ততা
- ✿ পাত্রের সম্মতি
- ✿ পাত্রীর সম্মতি কিংবা অনুমতি
- ✿ ওয়ালীর অনুমোদন
- ✿ দু'জন সাক্ষীর উপস্থিতি।

### স্তন্তসমূহ:

- ✿ ওয়ালীর কন্যা সমর্পণ (ইজাব)
- ✿ পাত্রের স্ত্রী কবুল (কবুল)

ওয়াজিব: মোহূর

ঐচ্ছিক বিষয়: আরোপিত শর্তসমূহ।

### পাত্রের উপযুক্ততা

বিয়ের জন্য উপযুক্ত বিবেচিত হতে হলে পাত্রকে নিম্নোক্ত শর্তসমূহ পূরণ করতে হবে:

- ✿ পাত্রকে অবশ্যই মুসলিম পুরুষ হতে হবে।
- ✿ অবৈধ যৌনাচার থেকে মুক্ত হতে হবে; অর্থাৎ ব্যভিচারী হতে পারবে না।  
তবে যদি কেউ সেই পথ থেকে তাওবা করে ফিরে আসে তাহলে তাকে বিয়ে করতে কোনো সমস্যা নেই।
- ✿ সুস্থ মস্তিষ্কের হতে হবে; অর্থাৎ পাগল কিংবা অপ্রকৃতিস্থ হতে পারবে না।
- ✿ সাবালক হতে হবে; অর্থাৎ নাবালক হতে পারবে না। ইসলামে ছেলেদের সাবালকত্ব নির্ধারিত হয় তিনটি আলামতের যেকোনো একটি প্রকাশিত হওয়ার দ্বারা। (ক) যৌন উত্তেজনার সাথে বীর্যপাত হওয়া, (খ) লজ্জাস্থানের পাশে লোম গজানো, (গ) পনের বছরে পা দেওয়া।

- ✿ রক্ত, দুধ কিংবা বৈবাহিক সম্পর্কের দিক থেকে পাত্র-পাত্রীর সাথে এমন কোনো সম্পর্ক না থাকা যাব কারণে তাদের মধ্যে বিয়ে স্থায়ীভাবে নিষিদ্ধ হয়।
- ✿ বৈবাহিক সম্পর্কের কারণে পাত্রীকে বিয়ে করা সাময়িকভাবে নিষিদ্ধ হয়ে যায় এমন কোনো পরিস্থিতির অধীনে না থাকা। যেমন এক বোন স্ত্রী হিসেবে থাকা অবস্থায় তার অন্য বোনের সাথে বিয়ে নিষিদ্ধ। কিন্তু যদি সে মারা যায় কিংবা তার সাথে বিবাহ বিচ্ছেদ হয়ে যায়, তাহলে অন্য বোনকে বিয়ে করা বৈধ।
- ✿ অবশ্যই কোনো রকম চাপে না পড়ে, স্বেচ্ছায় চুক্তিনামা সম্পাদন করা।

### পাত্রীর উপযুক্তি

বিয়ের জন্য উপযুক্তি বিবেচিত হতে হলে পাত্রীকে নিম্নোক্ত শর্তসমূহ পূরণ করতে হবে:

- ✿ পাত্রীকে অবশ্যই মুসলিম হতে হবে; তবে সতী-সাধী খ্রিস্টান বা ইহুদি হলেও চলবে।
- ✿ অবৈধ যৌনাচার থেকে মুক্ত হতে হবে; অর্থাৎ ব্যভিচারিণী হতে পারবে না। তবে যদি কেউ সেই পথ থেকে তাওবা করে ফিরে আসে তাহলে তাকে বিয়ে করতে কোনো সমস্যা নেই।
- ✿ সুস্থ মস্তিষ্কের হতে হবে; পাগলিনী বা অপ্রকৃতিস্থ হতে পারবে না।
- ✿ বর্তমানে কারও সাথে বৈবাহিক সম্পর্কে আবদ্ধ না থাকা কিংবা স্বামীর মৃত্যু কিংবা তালাকজনিত কারণে ইন্দুরের মধ্যে না থাকা।
- ✿ প্রস্তাবদাতা পাত্রের সাথে রক্ত, দুধ কিংবা বৈবাহিক কোনো সম্পর্কের কারণে বিয়ে নিষিদ্ধ না হওয়া।
- ✿ বৈবাহিক সম্পর্কের কারণে প্রস্তাবদাতা পাত্রের সাথে বিয়ে করা সাময়িকভাবে নিষিদ্ধ না হওয়া।
- ✿ অবশ্যই কোনো রকম চাপে না পড়ে, স্বেচ্ছায় চুক্তিনামা সম্পাদন করা।

### পাত্রীর অনুমতি

যাদের মধ্যে বিয়ের চুক্তিনামা সম্পন্ন হয় সেই দু'জনের একজন হলো পাত্রী। যে পাত্রের সাথে সে এক সুদীর্ঘ বন্ধনে আবদ্ধ হবে সেই ব্যক্তিটি সম্পর্কে তার কিছু জানার ও বলার থাকতে পারে। বিয়ের চুক্তিনামায় পাত্রীর অনুমতি একটি অত্যাবশ্যকীয়। তার সন্মতি ছাড়া চুক্তিনামা হয় বাতিল, না হয় পাত্রীর ইচ্ছের ভিত্তিতে ইসলামী কর্তৃপক্ষের

মধ্যস্থতায় তা বাতিল হয়ে যেতে পারে।

পরিস্থিতি অনুযায়ী পাত্রীর সম্মতি প্রকাশের ধরন বিভিন্ন রকম হতে পারে। সে মৌখিক উচ্চারণের মাধ্যমে তার সম্মতির কথা জানাতে পারে; আবার নীরব থেকে ওয়ালীর সিদ্ধান্তের প্রতিও তার সম্মতি জ্ঞাপন করতে পারে।

কুমারী পাত্রী হলো সেই নারী যার সাথে কোনো পুরুষের কখনো দৈহিক মিলন হয়নি। এ থেকে স্বাভাবিকভাবে বোঝা যায় যে তার কৌমার্য অক্ষত; তবে এটি কোনো চূড়ান্ত শর্ত নয়। কারণ অসুস্থতার কারণে অথবা দুর্ঘটনাবশত অনেক কুমারী মেয়ের সতীচ্ছেদ হয়ে যায়।

কুমারী মেয়েরা সাধারণত সরলমতি হয়। পৃথিবীর কৃত বাস্তবতা সম্পর্কে তাদের জ্ঞান থাকে অপ্রতুল। পৃথিবীর মানুষ সম্পর্কেও এরা থাকে অনভিজ্ঞ। পুরুষদের ব্যাপারে তাদের যথেষ্ট জ্ঞান না থাকায় ভবিষ্যৎ জীবন সঙ্গীকে মূল্যায়নের ক্ষেত্রে তারা হয় অনভিজ্ঞ। কাজেই এ ব্যাপারে সুস্পষ্ট কোনো সিদ্ধান্ত নেয়া একজন কুমারীর পক্ষে সন্তুষ্ট হয় না; তাই সিদ্ধান্ত নেয়ার ব্যাপারটি তার ওয়ালীর উপরেই ছেড়ে দেওয়া হয়। ওয়ালী হিসেবে সাধারণত পাত্রীর পিতা তার কন্যার পক্ষ থেকে সিদ্ধান্ত নিয়ে থাকে। ওয়ালী সিদ্ধান্ত নিলেও বিয়ের চুক্তিনামা সম্পাদনের পূর্বে ওয়ালীকে অবশ্যই পাত্রীর সাথে পরামর্শ করে তার সম্মতি নিতে হবে।

কুমারী যদি অতি সন্ত্রম ও লাজুক প্রকৃতির হয়, যা ছিল আগের দিনের মুসলিম কুমারীদের বৈশিষ্ট্য, তাহলে সে পাত্রের ব্যাপারে মুখ ফুটে কিছু বলতে বেশ জড়তা বোধ করতে পারে। এমন ক্ষেত্রে তার মৌন সম্মতিই যথেষ্ট। পাত্রীর নীরবতা, সম্মতিসূচক মাথা নাড়া, কিংবা কোনো অঙ্গভঙ্গির মাধ্যমে যদি ইঙ্গিত পাওয়া যায় যে, বিবাহে তার কোনো আপত্তি নেই; তাহলেই সেটি তার সম্মতি হিসেবে ধরে নেয়া হয়। অন্যথায়, বিয়ের ব্যাপারে তার আপত্তি থাকলে, তাকে অবশ্যই তা কথা বা কাজের মাধ্যমে স্পষ্ট করে জানিয়ে দিতে হবে।

পাত্রীর মৌন সম্মতিটুকু হলো বিয়ের জন্য সর্বনিম্ন শর্ত। কারণ, লোক-লজ্জার কারণে অধিকাংশ ক্ষেত্রে 'হ্যাঁ, আমি তাকে বিয়ে করতে চাই'-এই জাতীয় কথা বলে খোলাখুলিভাবে নিজের মতামত প্রকাশ করা অধিকাংশ পাত্রীর পক্ষে সন্তুষ্ট হয়ে ওঠে না। ইবনু 'আববাস <sup>৩</sup> বর্ণনা করেন:

## আক্ষদ অনুষ্ঠান

“এক কুমারী নারী নবী (সা)-এর কাছে এসে বলল যে, তার পিতা তার ইচ্ছার বিরুদ্ধে তাকে বিয়ে দিয়েছে। নবী (সা) তাকে (বিয়ে বহাল রাখার অথবা বিয়ে ভেঙ্গে দেওয়ার) অনুমতি দিলেন।”<sup>[৪৬]</sup>

অকুমারী পাত্রী হলো সেই নারী যে স্বাভাবিক বিয়ের মাধ্যমে হোক আর যেনার মাধ্যমেই হোক, কোনো পুরুষের সাথে কমপক্ষে একবার যৌনমিলনে লিপ্ত হয়েছে।

সাধারণত একজন অকুমারী নারী জীবন সম্পর্কে অধিক অভিজ্ঞতা রাখে এবং সিদ্ধান্ত গ্রহণের ক্ষেত্রে একজন কুমারীর তুলনায় অধিক সক্ষম। সুতরাং তাকে তার মৌখিক মতামত প্রকাশের এবং নিজের ব্যাপারে সিদ্ধান্ত গ্রহণের সুযোগ দিতে হবে। এক্ষেত্রে তার ওয়ালী অবশ্যই তার সিদ্ধান্তকে সম্মান দেখাবে যা উল্লিখিত হাদিসে সুস্পষ্টভাবে বলা আছে।

‘আল-খানসা’ ইবনু খিসাম আল-আনসারিয়্যাহ رض বর্ণনা করেন যে, তার পিতা (তার অনুমতি না নিয়েই) তার বিয়ে দিয়েছিল। সে সময় তিনি অকুমারী ছিলেন। ঐ বিয়ে তার পছন্দ হয়নি এবং তিনি নবী ص-এর নিকট যেয়ে এ বিষয়ে অভিযোগ করলে তিনি বিয়ের চুক্তিটি বাতিল করে দেন।<sup>[৪৭]</sup>

পারিবারিক আইনের পরিভাষায় ইয়াতীম মেয়ে হলো সেই কুমারী যার পিতা মারা গেছে। বিয়ের জন্য অনুমতির ক্ষেত্রে, এ ধরনের ইয়াতীম কুমারীকে অন্যান্য সাধারণ কুমারীদের থেকে মতামত প্রকাশের বেশী অধিকার দেওয়া হয়।

‘আবদুল্লাহ ইবনু ‘উমার رض বর্ণনা করেন যে:

‘উসমান ইবনু মা’য়ুন رض তার স্ত্রী খুওয়াইলাহ ইবনু হাকিম رض-এর পেটের একটি কন্যা সন্তান রেখে মারা যান। ‘উসমান رض ইষ্টিপত্রে তার ভাই কুদামাহ ইবনু মায়ু’নকে তার কন্যার জন্য অভিভাবক নিযুক্ত করে যান। ইবনু ‘উমার সেই ইয়াতীম মেয়েটিকে বিয়ে করার জন্য কুদামাহকে (কুদামাহ সম্পর্কে ইবনু ‘উমারের মামা) প্রস্তাব করেন এবং কুদামাহ তার সাথে বিয়ে দিতে রাজি হন। মুগিরা ইবনু শু’বাহ ঐ মেয়েকে বিয়ে করার জন্য মেয়ের মায়ের কাছে প্রস্তাব নিয়ে যান এবং অর্থের বিনিয়মে তাকে রাজি করান। ফলে মেয়ের মা তার প্রস্তাবে মত দেয় এবং মেয়েও তার মায়ের ইচ্ছাকে প্রাথান্য দিয়ে ইবনু ‘উমারকে বিয়ে করতে অস্বীকৃতি জানায়। তারা পরম্পর বিরোধে লিপ্ত হন এবং বিষয়টি নিয়ে নবী ص-এর সামনে হাজির হন। কুদামাহ رض বললেন:

[৪৬] হাদিসটি ইবনু মাজাহ সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহ ইবনু মাজাহ, হাদিস নং ১৫২০)।

[৪৭] আল-বুখারি এবং আহমাদ সহ অন্যান্যরা হাদিসটি সংকলন করেছেন।

“হে আল্লাহর রাসূল! সে আমার ভাইয়ের মেয়ে। তিনি (আমার ভাই) আমাকে তার (মেয়ের) অভিভাবক নিযুক্ত করে গেছেন এবং আমি ‘আবদুল্লাহ ইবনু ‘উমারের দ্বিন্দারিত্ব এবং সমকক্ষতা বিবেচনা করেই তার সাথে ভাতিজীর বিয়ের কথা দিয়েছিলাম। যাই হোক, সে তো শুধু একজন নারী, আর এখন সে তার মায়ের ইচ্ছাকে প্রাধান্য দিচ্ছে।”

আল্লাহর রাসূল ﷺ উত্তরে বললেন:

“সে একজন অনাথ এবং তার অনুমতি ছাড়া তার বিয়ে দেওয়া যাবে না।”

ইবনু ‘উমার বললেন:

“আল্লাহর কসম! এভাবেই তাকে আমার থেকে নিয়ে নেওয়া হলো এমনকি যদিও (বিয়ের মাধ্যমে) আমি তার অভিভাবক হয়ে গিয়েছিলাম এবং আল-মুগিরাহ ইবনু শু‘বাহর সাথে বিয়ে দেওয়া হলো।”<sup>[৪৮]</sup>

যদি বিবাহিত স্বামী-স্ত্রীর উভয়েই ক্রীতদাস ও ক্রীতদাসী হয়, এবং প্রথমে নারী ক্রীতদাসীকে মুক্ত করা হয়; তাহলে স্বামীর সাথে থাকার বা স্বামীকে ত্যাগ করার সুযোগ রয়েছে তার। যদি সে প্রথমটি বেছে নেয়, তাহলে সে তার স্বামীর বিবাহিতা স্ত্রী হিসেবেই রয়ে যায় এবং সেক্ষেত্রে তার জন্য আর অন্যকিছু করার সুযোগ থাকে না।

### নারীর জন্য অভিভাবকের অপরিহার্যতা

কোনো নারী নিজেই নিজের বিয়ে করতে পারে না। এক্ষেত্রে তার ওয়ালী তার প্রতিনিধি হিসেবে কাজ করে। সে কুমারী হয়ে থাকলে ওয়ালী তার সম্মতির কথা জেনে নেবে। আবু মুসা আল-আশ‘আরি, ‘আবদুল্লাহ ইবনু ‘আববাস, জাবির ইবনু ‘আবদুল্লাহ এবং আবু হুরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “ওয়ালী ছাড়া বিয়ে বাতিল।”<sup>[৪৯]</sup>

অতএব, বিয়ের চুক্তিনামা সম্পাদনের সময় এটি বৈধ হওয়ার জন্য নারীর একজন ওয়ালীর উপস্থিত থাকাটা একটি শর্ত।

নিয়মানুযায়ী, নারীর ওয়ালী হলো তার পিতা। যদি কোনো কারণে পিতা তার ওয়ালী হতে না পারে, তাহলে তার ওয়ালী হবে তার পরবর্তী নিকটতম মাহ্রামদের

[৪৮] হাদিসটি আহমাদ এবং আদ্-দারাকুতনি সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৮৩৫)।

[৪৯] হাদিসটি আবু দাউদ এবং আত-তিরমিয়ি সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৮৩৯)।

## আকৃদ অনুষ্ঠান

(যেমন: দাদা, নিজের ছেলে, ভাই, চাচা প্রমুখদের) মধ্য থেকে কেউ নারীর নিকটতম আত্মীয়রা অমুসলিম হলে, শার'ই দৃষ্টিকোণ থেকে তারা কেউ নারীর অভিভাবক হতে পারে না।

পাত্রীর রক্তসম্পর্কের কোনো মুসলিম আত্মীয় না থাকলে, ইসলামী শাসক বা কাজীর তত্ত্বাবধানে সংশ্লিষ্ট কর্তৃপক্ষ তার জন্য ওয়ালী নিযুক্ত করবে। অনেক অমুসলিম দেশে মুসলিম জনগোষ্ঠীর স্থানীয় ইমাম ইসলামী কাজীর সাধারণ দায়িত্বসমূহ পালন করেন এবং নারীর কোনো ওয়ালী না থাকলে তিনিই সেই নারীর ওয়ালী হন।

অনেক অমুসলিম দেশে একটি প্রচলিত রীতি হলো, নারীর কোনো মুসলিম মাহুরাম ওয়ালী না থাকলে নারী নিজেই নিজের জন্য ওয়ালী নিযুক্ত করে। এটি অন্যায় এবং এমনটি করার কোনো অধিকার তার নেই। যেমনটি উপরে দেখেছি যে, এই কাজটি করার অধিকার রয়েছে মুসলিম কাজী বা ইমামের। এই ভাস্ত রীতি অনেক অশুভ পরিণতির জন্ম দিয়েছে যার কয়েকটি নিম্নরূপ:

- ✿ নিযুক্ত ওয়ালীর প্রতি যে অগাধ বিশ্বাস স্থাপন করা হয়, অনেক ক্ষেত্রেই ওয়ালীকে সেই বিশ্বাসের অর্মাদা করতে দেখা যায় এবং নিয়োগকারীর স্বার্থ রক্ষার দায়িত্ব সঠিকভাবে পালন করতে ব্যর্থ হয়।
- ✿ কোনো কোনো নারী তার ওয়ালীর সাথে আলাপ-আলোচনা করার সুযোগ গ্রহণ করে থাকে। তারা তার সাথে অন্তরঙ্গ বন্ধু বা আত্মীয়ের মতো আচরণ করে। অনেক সময় তার সাথে পুরোপুরি নির্জনে সাক্ষাৎ (খুল্লওয়াহ) করে এবং নিজের ব্যক্তিগত গোপনীয় বিষয়ে কথা বলে। এ ধরনের আচরণ অধিকাংশ ক্ষেত্রেই বড় রকমের পাপের পথ খুলে দেয়।
- ✿ কোনো কোনো নারী তার ওয়ালীর পক্ষ থেকে এমন কিছু প্রত্যাশা করে যা তার কর্তব্যসীমার বাইরে। তার একমাত্র কর্তব্য হলো নারীর প্রতিনিধিত্ব করা এবং আলাপ-আলোচনার মাধ্যমে বিয়ের চুক্তি সম্পাদনের সময় নারীর স্বার্থ রক্ষার জন্য কাজ করা। এই কাজটুকু হয়ে গেলেই তার দায়িত্ব শেষ হয়ে যায় এবং সে আর নারীর ওয়ালী থাকে না। তবে কোনো কোনো নারী মনে করে, ওয়ালীর সন্মান ও পদ হলো স্থায়ী এবং জীবনের ছোট-বড় সকল ব্যাপারে তাকে ডাকতে হবে। এই ব্যাপারগুলোই এক সময় অন্তরঙ্গ সম্পর্কের জন্ম দেয় এবং বড় ধরনের গর্হিত পাপাচারের পথকে উন্মুক্ত করে।

উপরের আলোচনা থেকে আমাদের শেখা হলো, বিয়ের চুক্তিনামা বৈধ হওয়ার জন্য ওয়ালীর (বা ওয়ালীর প্রতিনিধি) উপস্থিত থাকা একটি অত্যাবশ্যকীয় শর্ত। অতএব, ওয়ালীর সম্মতি এবং অনুমোদন ছাড়া কোনো বিয়ে সংঘটিত হলে সেই বিয়ে বাতিল বলে গণ্য। ‘আইশাহ ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“ওয়ালীর অনুমতি ছাড়া যে নারীই বিয়ে করুক, তার বিয়ে বাতিল, তার বিয়ে বাতিল। তবে (ওয়ালিহীন বিয়ের পর) যদি সে (স্বামী) তার সাথে যৌন মিলনে লিপ্ত হয়, তাহলে মোহর পাওয়া নারীর অধিকার; কারণ সে তার লজ্জাস্থানে গমন করেছিল। যদি তারা বিবাদে লিপ্ত হয়— তাহলে যার ওয়ালী নেই, তার ওয়ালী হবে দেশের শাসক।” [৫০]

## ওয়ালীর দায়িত্ব ও কর্তব্য

ওয়ালী স্বাভাবিক নিয়মানুযায়ী হউন অথবা তাকে নিযুক্ত করা হোক, অধীনস্থের প্রতি আল্লাহর পক্ষ থেকে তার ওপর অনেক বিশাল দায়িত্ব রয়েছে। তিনিই তার অধীনস্থের পক্ষ থেকে প্রতিনিধিত্ব করবেন এবং সর্বোত্তম পন্থায় অধীনস্থের কল্যাণের দিকে নজর রাখবেন। তিনি খোঁজখবর নিয়ে নিশ্চিত হবেন যে, বিয়ের প্রস্তাবকারী পুরুষ নারীর যোগ্য এবং উপযুক্ত কি না। এক্ষেত্রে তার যোগ্যতার মাপকাঠি হবে তা-ই যা আল্লাহকে সন্তুষ্ট করে। এক্ষেত্রে সামাজিক পদব্যাদা, ধনসম্পদ কিংবা অন্য কোনো পার্থিব অর্জন তার কাছে পাত্র যাচাইয়ের মাপকাঠি হওয়া উচিত নয়।

‘আইশাহ ﷺ কর্তৃক বর্ণিত উল্লিখিত হাদিস থেকে আমরা দেখতে পাই যে, ওয়ালী যদি নিয়োগকারী নারীর জন্য কোনো উটকো ঝামেলার সৃষ্টি করে বা নারীকে এমন কোনো কিছু করা থেকে বাধা প্রদান করে যা করার অনুমতি আল্লাহ নারীকে দিয়েছেন, তাহলে সে নারী এ ব্যাপারে প্রতিবাদ করতে পারে এবং ইসলামী কর্তৃপক্ষের সামনে নিজের পক্ষে যুক্তিত্ব উপস্থাপন করতে পারে। এক্ষেত্রে নারীর অভিযোগসমূহ সত্য বলে প্রমাণিত হলে, ইসলামী কাজী ওয়ালীকে তার কর্মপন্থা বদলানোর আদেশ করতে পারেন, কিংবা অন্য কোনো ব্যক্তির ওপর তার অভিভাবকত্ব অর্পণ করতে পারেন, অথবা নারীর পরিস্থিতি বুঝে অন্য কোনো উপযুক্ত সিদ্ধান্ত নিতে পারেন।

যদি দেখা যায় যে, অভিভাবক তার দায়িত্ব পালনে অযোগ্য, তাহলে পূর্বোল্লিখিত নিয়মে তিনি তার অভিভাবকত্ব (ওয়ালীর পদ) হারাবেন।

[৫০] হাদিসটি আহমাদ এবং আবু দাউদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৮৪০)।

## সাক্ষীর গুরুত্ব

বিয়ের চুক্তিনামা সম্পাদনের সময় দু'জন বিশ্বস্ত মুসলিম পুরুষ সাক্ষীর উপস্থিত থাকা বিয়ের বৈধতার জন্য আবেকটি শর্ত। ‘আইশাহ, ইমরান ইবনু হাসাইন এবং আবু মুসা আল আশ‘আরি বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

| “একজন ওয়ালী এবং দু’জন বিশ্বাসযোগ্য সাক্ষী ছাড়া কোনো বিয়ে বৈধ নয়।” [৫১]

পাত্রী তার ওয়ালীকে অনুমতি দিয়েছে কি না সাক্ষীগণকে তা শুনতে হবে এবং চুক্তিনামায় উল্লিখিত সকল বিষয় পুঞ্জানুপুঞ্জভাবে দেখে নিতে হবে।

## মোহর

ইসলামে দেনমোহর হলো একটি বাধ্যতামূলক আর্থিক সুবিধা যা বিয়ের সময় স্বামী তার স্ত্রীকে দিতে বাধ্য। আরবিতে একে 'মাহর' বা 'সাদাক' বলা হয়। আল্লাহর আদেশ হলো:

« (বিয়ের সময়) নারীদেরকে উপহার হিসেবে তার মোহর দিয়ে দাও। [৫২] »

স্ত্রীকে দেনমোহর প্রদান করা স্বামীর জন্য বাধ্যতামূলক হলেও, বিয়ের বৈধতার জন্য একে শর্ত বানানোর পক্ষে কোনো দলিল বা প্রমাণ নেই। মোহরের নির্দিষ্ট পরিমাণ উল্লেখ না করেই বিয়ের চুক্তিনামা সম্পন্ন করা যেতে পারে। তবে স্বাভাবিকভাবে এমনটি না করাই উচিত। কারণ এটি ভবিষ্যতে জটিলতা এবং বিরোধের জন্ম দিতে পারে।

মোহর হলো একমাত্র স্ত্রীর প্রাপ্য অধিকার যা অন্য কেউ তার অনুমতি ছাড়া নিতে পারে না; এমনকি তার মাতা-পিতাও না। মোহর হলো এমন প্রতিদান যা স্ত্রী নিজের সর্বস্ব তার স্বামীর কাছে উন্মুক্ত করার বিনিময় হিসেবে গ্রহণ করে। এ কারণেই আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা‘আলা মোহরের সম্পূর্ণ অধিকারটুকু নারীকে প্রদান করেছেন; এমনকি তালাকের সময়েও নারী এই মোহরের মালিক থাকবে যদি না স্বামী তাকে তার কোনো অপরাধ বা সীমালঙ্ঘনের কারণে তালাক দেয়।

[৫১] হাদিসটি আহমাদ এবং হিকানসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৮৩৯, ১৮৫৮, ১৮৬০)।

[৫২] আন-নিসা; ৪:৪

অতএব, স্ত্রী চাইলে মোহরের পুরোটাই নিজের জন্য রেখে দিতে পারে, এর কিছু অংশ তার পিতা-মাতাকে দিয়ে দিতে পারে, অথবা চাইলে এর কিছু অংশ তার স্বামীকে ফিরিয়েও দিতে পারে— সবই তার ইচ্ছার ওপর নির্ভরশীল।<sup>[৩]</sup>

মোহর হতে পারে নগদ অর্থ, স্বর্গালঙ্কার, আসবাব সামগ্রী, জায়গা-জমি অথবা অন্য যেকোনো কিছু। অবস্তবাচক কোনো উপহারও মোহর হতে পারে।

মোহরের পরিমাণ হতে হবে স্বামীর আর্থিক সামর্থ্য এবং স্ত্রীর সামাজিক অবস্থার সাথে যুক্তিযুক্ত ও সঙ্গতিপূর্ণ। সাধারণত পাত্র এবং পাত্রীর (বা তার ওয়ালীর) মধ্যে বোঝাপড়ার মাধ্যমেই মোহর নির্ধারিত হয়ে থাকে।

সাধারণত মোহর হিসেবে নির্ধারিত নগদ অর্থ ছাড়াও কিছু সমাজে পাত্রের পক্ষ থেকে পাত্রীর জন্য অন্যান্য আর্থিক প্রতিশ্রুতি পূরণ করতে হয়। যেমন: পাত্রীর (স্ত্রী হিসেবে আইনগত অধিকারসীমার চেয়ে বেশী দেওয়া) পোশাক-আশাক, স্বর্গালঙ্কার, ইত্যাদি। ইসলামী বিধান মতে, এগুলোর সবকিছুই মোহরের অংশ বলে গণ্য হতে পারে এবং ভবিষ্যৎ ঝামেলা এড়ানোর জন্য উত্তম হলো এগুলোর সবকিছু স্পষ্ট করে বিয়ের চুক্তিনামায় লিখে রাখা।

### মোহর নির্ধারণে পরিমিতবোধ

ইসলাম মোহরের কোনো সর্বোচ্চ সীমা নির্ধারণ করে না। তবে এটি স্বামীর জন্য হালকা এবং সহজ করাকে উৎসাহিত করা হয়েছে। মোহরের বোঝা ভারী হলে মানুষ বিবাহে নির্ণসাহিত হতে পারে; অনেক ক্ষেত্রে তা দুর্বিষহ ও বৈরী দাম্পত্যের এক অশুভ পূর্বাভাস হতে পারে।

অনেক মুসলিম দেশে, পাত্রীর বাবা-মা অত্যধিক বিশাল অংকের মোহরের জন্য আবেদন করে থাকে। এতে অনেক যুবক বিয়ে এড়িয়ে যায়, অথবা অনেক বছর ধরে বিয়ে করে না। যার ফলে যুবক-যুবতীদের মাঝে ব্যভিচারসহ অন্যান্য পাপ ছড়িয়ে পড়ে। অতএব, এ বিষয়ে সুবিবেচক হওয়ার পাশাপাশি বাবা-মার উপলক্ষ্মি করা উচিত যে, পাত্রের কাছে অনেক কিছু দাবী করা তাদের মেয়ের জন্য এবং সর্বোপরি পুরো মুসলিম জনগোষ্ঠীর জন্য ক্ষতি বয়ে আনতে পারে।

[৩] লক্ষণীয় যে, কোনো নারী তার ধন-সম্পত্তি থেকে কীভাবে খরচ করবে সেটাও স্বামীর অনুমতি সাপেক্ষ। এ বিষয়ে লেখকের ধারাবাহিক পর্বের তৃতীয় অধ্যায় 'দি ফ্র্যাজাইল ভেসেল্স' এ আরও আলোচনা করা হয়েছে।

## আক্রম অনুষ্ঠান

‘উক্তবাহু ইবনু ‘আমির বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:  
| “সর্বোত্তম বিয়ে (বা মোহর) হলো সেগুলো যেগুলো সবচেয়ে সহজ।”<sup>[৪৪]</sup>  
যামির জন্য মোহর হালকা হলে তা স্ত্রীর জন্য বারাকাহ ও কল্যাণের লক্ষণ।  
‘আইশাহ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:  
| “নিশ্চয়ই একজন নারীর জন্য কল্যাণের লক্ষণ হলো তার বাগ্দান, সাদাক, এবং গর্ভ  
(সন্তান প্রসব) সবকিছুই সহজ হয়ে যায়।”<sup>[৪৫]</sup>

## অনির্ধারিত মোহর

বিয়ের চুক্তিনামা সম্পাদনের সময় মোহর নির্ধারিত না হলেও, স্ত্রী তার মোহর পাওয়ার অধিকার হারায় না।

‘উক্তবাহু ইবনু ‘আমির বর্ণনা করেন যে,

নবী এক ব্যক্তিকে বললেন, “অমুক মহিলার সাথে আমি তোমার বিয়ে করালে তুমি কি রাজি আছো?” সে উত্তর দিলো, ‘হ্যাঁ।’ তারপর নবী সেই মহিলাকে জিজ্ঞেস করলেন, “অমুক ব্যক্তির সাথে আমি তোমার বিয়ে করালে তুমি কি রাজি আছো?” সে উত্তর দিলো, ‘হ্যাঁ।’ সুতরাং, মোহরের কথা উল্লেখ না করে বা পাত্রিকে কোনোকিছু না দিয়ে, তিনি দু’জনের বিয়ে দিয়ে দিলেন। লোকটি ছিল ছদ্মবিয়াহুর সন্ধির সাক্ষীদের একজন এবং খাইবার যুদ্ধের গনিমতের মালের একটা অংশ সে পেয়েছিল।

তার মৃত্যু নিকটবর্তী হলে, লোকটি বলেছিল:

“নিশ্চয়ই আল্লাহর রাসূল অমুকের সাথে আমার বিয়ে দিয়েছিল। কিন্তু, আমি তাকে কিছুই দেইনি। তোমরা আমার সাক্ষী থেকো, এখন আমি তাকে মোহর হিসেবে খাইবার থেকে পাওয়া অংশটুকু দিচ্ছি।”

এরপর, মহিলা সে অংশটি গ্রহণ করলো এবং তা এক শ হাজারের বিনিময়ে বিক্রয় করলো।<sup>[৪৬]</sup>

[৪৪] হাদিসটি আবু দাউদ এবং ইবনু মাজাহ সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সাহীহল জামে), হাদিস নং ৩২৭৯, ৩৩০০; আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১৮৪২ এবং ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৯২৪)।

[৪৫] হাদিসটি আহমাদ এবং আল-হাকিম সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সাহীহল জামে), হাদিস নং ২২৩৫, এবং ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৯২৮)।

[৪৬] হাদিসটি আবু দাউদ এবং ইবনু ইবান সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি

আলকামাহ্ বর্ণনা করেন যে,

‘আবদুল্লাহ্ ইবনু মাস‘উদ্<sup>৩</sup>-এর নিকট কিছু লোক এসে এমন একটি বিষয় সম্পর্কে জানতে চাইলো যেখানে তাদের একজন মোহর নির্ধারণ না করেই এক মহিলাকে বিয়ে করেছিল এবং মহিলার সাথে সহবাস করার আগেই লোকটি মারা গিয়েছিল। ‘আবদুল্লাহ্ বললেন, “আল্লাহর রাসূল<sup>৪</sup>-এর কাছ থেকে চলে আসার পর, আমাকে এর চেয়ে বেশী কঠিন কোনো প্রশ্ন করা হয়নি। অন্য কারও কাছে গিয়ে জিজ্ঞেস করো।” তার কাছ থেকে একটা উত্তর পাওয়ার জন্য তারা একমাস চেষ্টা চালানো পর অবশেষে বললো, “আপনাকে জিজ্ঞেস না করে আমরা অন্য আর কাকে জিজ্ঞেস করবো, যেখানে আপনি হলেন এই দেশে মুহাম্মাদ<sup>৫</sup>-এর সবচেয়ে প্রখ্যাত সাহাবী এবং অন্য কাউকে খুঁজে পাই নায়?” তিনি বললেন, “আমি তোমাদেরকে তার (মহিলার) ব্যাপারে আমার সর্বোত্তম মতামত দেওয়ার চেষ্টা করবো। যদি তা সঠিক হয়, তাহলে তা শুধুমাত্র আল্লাহর পক্ষ থেকে যার কোনো শরীক নেই। আর যদি তা ভুল হয়, তাহলে তা আমার ও শয়তানের পক্ষ থেকে আর আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল<sup>৬</sup> তা থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত থাকবেন।”

অতঃপর তিনি বললেন:

“(তার নিজ পরিবারের অন্যান্য) নারীদের মতোই, কোনো কম বা বৃদ্ধি না করে, তাকে মোহর দিতে হবে এবং সে (চারমাস দশদিন) ইদত পালন করবে এবং তাকে তার উত্তরাধিকারের অংশ দিতে হবে।”

ঐ সময় সেখানে আশ্জা’ঈ গোত্রের কিছু লোক উপস্থিত ছিল এবং তাদের মধ্য থেকে মা’কিল ইবনু সিনান আল-আশ্জা’ঈ নামের একজন উঠে দাঁড়িয়ে বললো:

“আমি সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আল্লাহর রাসূল<sup>৭</sup> বারওয়া বিনতু ওয়াশিক নামে আমাদেরই এক মহিলার ব্যাপারে যে রায় দিয়েছিলেন, আপনার রায় তার অনুরূপ।”

একথা শোনার পর আবদুল্লাহ্ ইবনু মাস‘উদকে এতো খুশি দেখাচ্ছিল যে, তার ইসলাম গ্রহণের পর থেকে তাকে এতোটা খুশি আর কখনো দেখা যায়নি।<sup>[৮]</sup>

উপরের বর্ণনাসমূহ থেকে আমরা এই সিদ্ধান্তে উপনীত হই যে— যদি বিয়ের সময় কোনো মহিলার মোহর নির্ধারণ না করা হয়, অথবা যদি স্বামীর আর্থিক অবস্থা এবং সমর্যাদার অন্যান্য মহিলাদেরকে সাধারণত যে পরিমাণ মোহর দেওয়া হয় সে তুলনায় তার মোহর অনেক কম হয়, সেক্ষেত্রে সে তার ন্যায্য পরিমাণ মোহর

হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৯২৪)।

[৫] হাদিসটি আবু দাউদ এবং আন নাসা’ঈ সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৯৩৯)।

## আকুদ অনুষ্ঠান

পাওয়ার অধিকার হারায় না। এ ব্যাপারে মহিলা ইসলামী কর্তৃপক্ষের নিকট অভিযোগ দায়ের করতে পারে।

অতএব, বিয়ের সময় পাত্রীকে ন্যায্য পরিমাণ মোহর দেওয়া হচ্ছে কি না তা নিশ্চিত করার জন্য তার ওয়ালীকে অত্যন্ত সচেতন হতে হবে। এরপর যদি স্ত্রী মোহরের কিছু অংশ বা এর পুরোটাই তার স্বামীকে দিয়ে দিতে চায়, তাহলে তাকে তা করতে হবে স্বেচ্ছায় এবং স্বজ্ঞানে।

এখানে একটি দুর্বল বর্ণনার ব্যাপারে সতর্ক করে দেওয়াটা খুবই জরুরী। এই ঘটনাটি ‘উমার এবং এক মহিলার মধ্যে সংঘটিত হয়েছিল বলে দাবী করা হয়। এমনকি লক্ষণীয় যে, বর্ণনার দুর্বলতার কথা উপলব্ধি না করেই অনেকে এই ঘটনাকে উদ্ধৃত করেন।

একবার ‘উমার একটি বক্তৃতা দেন যাতে তিনি মাত্রাতিরিক্ত মোহর নির্ধারণের ব্যাপারে ঝঁশিয়ার করে দিয়ে বলেন, “নবী ﷺ-এর পত্নী এবং কন্যাগণের মোহরের চেয়ে অধিক মোহর নির্ধারণে আমি অনুমতি দেবো না।” এতে এক মহিলা প্রতিবাদ করে বলল:

হে আমীরুল মুমিনীন! আপনি এইমাত্র লোকদেরকে অতিরিক্ত মোহরের ব্যাপারে নিষেধ করে দিলেন। আপনি কেন আমাদেরকে তা পেতে বাধা দেবেন যা সুমহান আল্লাহ আমাদেরকে দিয়েছেন?”

তারপর সে পাঠ করলো:

» وَإِنْ أَرَدْتُمُ اسْتِبْدَالَ رَزْقِ مَّكَانٍ رَّزْقٌ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ  
شَيْئًا أَنْ تُخْدِنُهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا »

« তোমরা এক স্ত্রীর জায়গায় অন্য স্ত্রী গ্রহণ করতে চাইলে এবং তাকে যদি বিপুল পরিমাণ স্বর্ণ (মোহরানা হিসেবে) দাও, তাহলে তা থেকে কিছুই ফেরত নেবে না। তোমরা কি অপবাদ দিয়ে আর স্পষ্ট পাপ করে তা ফেরত নিতে চাচ্ছ? [৫৮] »

একথা শুনে ‘উমার (দুই অথবা তিনবার) বললো, “সকলেই ‘উমারের চেয়ে অধিক বোঝার ক্ষমতা রাখে। নিশ্চয়ই একজন মহিলা সঠিক আর ‘উমার ভুল!’” অতঃপর তিনি মিস্বরে ফিরে গেলেন এবং লোকদের উদ্দেশ্যে বললেন:

[৫৮] আন-নিসা; ৪:২০।

## ভালোবাসার চাদর

“নিশ্চয়ই আমি তোমাদেরকে নারীদের অধিক মোহর নির্ধারণের ব্যাপারে নিষেধ করেছিলাম।  
কিন্তু এখন আমি বলছি, প্রত্যেক পুরুষ যেভাবে খুশি তার সম্পদ খরচ করুক।”<sup>[৫৯]</sup>

বর্ণনাটিতে দুর্বলতার কথা উল্লেখ করার পর, আল-আলবানি বলেছেন:

“তাছাড়া, এখানে মহিলার এই আয়াতের উদ্ধৃতি অপ্রাসঙ্গিক। আয়াতটিতে আসলে বিনা  
কারণে যে নারীকে তালাক দেওয়া হয় তার ব্যাপারে বলা হয়েছে। এখানে বোঝানো  
হয়েছে, স্পষ্ট কোনো পাপ না থাকার পরও তোমরা অনেকে আগের স্ত্রীকে অপছন্দ  
করছো। তার সাথে সদয় আচরণের আর কোনো ধৈর্য নেই তোমাদের। তোমরা এখন  
তার বদলে নতুন স্ত্রী গ্রহণ করতে চাচ্ছো। এখন তাকে যদি আগেই বড় কোনো অক্ষের  
অর্থ মোহরানা দিয়ে থাকো, সেটা সে পুরো পাক বা না পাক, কিংবা যদি শপথও করে  
থাকো, তবুও তা থেকে বিন্দু পরিমাণ ফেরত নিয়ো না। পুরোটাই ন্যায্য মালিককে দিয়ে  
দাও। তোমরা কেবল কামনা ও উপভোগের জন্য তার জায়গায় অন্য একজনকে বিয়ে  
করতে চাচ্ছো। যদি শার‘ঈ কারণে হতো তাহলে কিছু অংশ ফেরত নেওয়ার অনুমতি  
পেতে, যেমন: তার নিজের পক্ষ থেকে তালাক চাওয়া বা তোমাদেরকে আঘাত করে  
তালাক দিতে বাধ্য করা।

যদি সে এ ধরনের কোনো কিছু না করে থাকে, তাহলে তোমরা কি করে তার অর্থ থেকে  
কিছু নিতে পারো?”<sup>[৬০]</sup>

সাধারণত বক্তব্য এবং লেখকেরা এই ঘটনার উদ্ধৃতি দিয়ে থাকেন এবং এর মাধ্যমে  
বেশকিছু বিষয় প্রমাণ করার চেষ্টা করেন যেগুলোর কয়েকটি পুরোপুরি ভুল। এই ভুল  
অনুসিদ্ধান্তগুলোর কয়েকটি নিম্নরূপ:

- ✿ অতিরিক্ত মোহর দাবি করার অনুমতি আছে;
- ✿ মহিলাদের মাসজিদের মধ্যে উঠে দাঁড়ানো এবং ইমাম বা কোনো বক্তাকে  
শুধরে দেওয়ায় কোনো সমস্যা নেই;
- ✿ মহিলারা নারী-পুরুষের সমন্বিত সমাবেশে ভাষণ দিতে পারে;
- ✿ ইসলামের কোনো বিদ্বানই খুব বেশী সম্মানের পাত্র নন। কারণ একজন  
সাধারণ মহিলাও খুব সহজেই তার ভুলভাস্তি প্রকাশ করে দিতে পারে;

[৫৯] আবু ইয়া’লা, আল বাযহাকী এবং আব্দুর রায়হাক সন্মিলিতভাবে বর্ণনাটি সংকলন করেছেন। আল-  
আলবানি বর্ণনাটিকে অত্যন্ত দুর্বল বলে আখ্যায়িত করেছেন (ইরওয়া আল-গালীল, হাদীস নং ১৯২৭  
এবং রাফিউল মালাম, পৃষ্ঠা ৩৩-৩৪)।

[৬০] রাফিউল মালাম ‘আনিল আ’ইম্মাতিল আ’লাম (পৃষ্ঠা ৩৪-৩৫) এর ব্যাখ্যা।

- ০ মহিলারা বিভিন্ন ধর্মীয় পরিষদ, যেমন: ইসলামী সংঘ ও সংগঠনের উপদেষ্টা পরিষদের সদস্য, এমনকি প্রধান হিসেবেও কাজ করতে পারবে।

### বাকি মোহর

বিয়ের চুক্তিনামা সম্পাদনের ঠিক পরপরই পাত্রীকে তার মোহর দিয়ে দেওয়ার জন্য জোরালোভাবে উৎসাহিত করা হয়েছে।

অথচ আমাদের সমাজে প্রচলিত একটা ভ্রান্ত রীতি হলো— মোহরকে দু'ভাগে ভাগ করে প্রথম অংশ বিয়ের চুক্তি সম্পাদনের সময় (উসুল লিখে) প্রদান করা এবং অন্য অংশটি স্বামী বা স্ত্রীর মৃত্যু বা তালাকের সময় প্রদান করার জন্য বাকি রাখা।

মোহর বাকি রাখার এই নব প্রচলিত কুপ্রথাটি সুন্নাহর আদর্শ অনুসরণের বিচ্যুতি। এতে মোহরের প্রকৃত উদ্দেশ্যই ব্যর্থ হয়ে যায়, যা স্ত্রীর সাথে ঘনিষ্ঠ হওয়ার পূর্বেই তাকে প্রদান করতে হবে। বাকি মোহরের বিশাল অংকের ঝণ স্বামীর জন্যও বোঝা যা পরিশোধ করার জন্য সে অনিদিষ্টকাল পর্যন্ত দায়বদ্ধ থাকে।

অমুসলিম দেশে বসবাসকারী মুসলিমদের জন্য এখানে একটি বিষয় উল্লেখ করা জরুরি। বাড়ি কিংবা অন্যান্য বিষয়সামগ্রী স্বামী বা স্ত্রী যে-ই কিনুক না কেন, যুক্তরাষ্ট্রের মতো দেশগুলোতে ঐ কেনা জিনিসের ওপর স্বামী এবং স্ত্রীর উভয়েরই সমান মালিকানা আরোপিত হয়। এটি ন্যায়সঙ্গত নয় এবং কেউ কোনো কিছুর মালিক না হলে তার জন্য সেটা নিজের বলে গ্রহণ করা নিষিদ্ধ।

কাজেই, স্বামীর মৃত্যুতে স্ত্রীকে যদি অর্ধেক সম্পত্তি দিয়ে দেওয়া হয় অথবা স্বামী যদি তাকে তালাক দেয়, তাহলে স্ত্রীর ভাবা উচিত হবে না যে, সেই সম্পত্তির প্রতি তার অধিকার আছে। বরং ইসলামী বিধান মোতাবেক সে তার ন্যায্য অংশটুকু চাইবে এবং তার বাইরে সবকিছুর অধিকার সে ছেড়ে দেবে। তাকে অবশ্যই মনে রাখতে হবে যে, বিচারের দিনে তাকে আল্লাহর সামনে দাঁড়াতে হবে; তিনি সেদিন সীমালঙ্ঘনকারী এবং যাদের বিরুদ্ধে সীমালঙ্ঘন করা হয়েছিল, তাদের মধ্যে ন্যায় বিচার করবেন।

### নারীর কাছ থেকে তার মোহর নিয়ে নেয়ার কঠিন শাস্তি

পুরুষের কাঁধে নারীর মোহর অনেক বড় ঝণের বোঝা। সেই কারণে নারীর সন্মতি ছাড়া তার থেকে মোহর নিয়ে নেয়া গুনাহ কাবীরাহ বা গুরুতর অপরাধ। ইবনু ‘উমার বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“নিশ্চয়ই আল্লাহর নিকট সবচেয়ে বড় পাপগুলোর একটি হলো ঐ ব্যক্তির (পাপ) যে কোনো নারীকে বিয়ে করে, এবং তার সাথে নিজের প্রয়োজন মিটিয়ে নেওয়ার পর সে তাকে তালাক দিয়ে দেয় এবং তার মোহর ফিরিয়ে নেয়; এবং সেই ব্যক্তির পাপ যে কাজের জন্য কাউকে নিয়োগ দিয়ে কাজ করিয়ে তাকে তার প্রাপ্য পারিশ্রমিক দেয় না; এবং সেই ব্যক্তির পাপ যে অকারণে পশ্চ হত্যা করে।”<sup>[৬১]</sup>

পাশ্চাত্যের কোনো কোনো দেশে বিরাজমান একটি পরিস্থিতির কথাও এই হাদীসে উল্লেখ করা হয়েছে। অন্য দেশ থেকে আগত কিছু মুসলিম পুরুষ হালকা মোহরের বিনিময়ে পাশ্চাত্যের মুসলিম নারীদেরকে বিয়ে করে, যার নাম তারা দিয়েছে Contract marriage। এর সুবাদে তারা একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্য তাদেরকে উপভোগ করে এবং প্রায়ই স্ত্রীদের বদৌলতে ঐসব দেশের নাগরিকত্ব লাভ করে। স্ত্রীদের মাধ্যমে নিজেদের স্বার্থসিদ্ধি হয়ে গেলেই তারা দ্বিধাহীন চিন্তে তাদেরকে তালাক দিয়ে দেয়! এভাবেই তারা স্ত্রীদের কাছ থেকে সুবিধা ভোগ করে। তার চেয়েও বড় কথা হলো, তারা তাদেরকে ন্যায্য মোহর থেকেও বঞ্চিত করে। তাদের উচিত আল্লাহকে ভয় করা এবং মনে রাখা যে, এসব কাজ করে তারা দুনিয়ার জীবনে পার পেয়ে গেলেও বিচারের দিনে সুমহান আল্লাহ-এর কাছ থেকে তারা ছাড়া পাবে না।

### বাড়তি শর্ত আরোপের বিধান

বিয়ের চুক্তিনামা সম্পাদনের সময়, চাইলে উভয় পক্ষই কিছু শর্ত দিতে পারে যেগুলো ভঙ্গ করলে চুক্তিনামা বাতিল বলে গণ্য হবে। ইসলামী মূলনীতির কোনোরূপ লঙ্ঘন না হলে, এই ধরনের শর্তারূপ করা বৈধ এবং গ্রহণযোগ্য। এই ধরনের শর্তারূপ সাধারণত স্ত্রীর পক্ষ থেকে করা হয়। কারণ স্বামী তালাক প্রদানের মাধ্যমে বিয়ে-বিচ্ছেদ ঘটাতে পারে এবং এ কাজকে সহজ করার জন্য স্বামীর নিজের কোনো শর্তের প্রয়োজন নেই। ‘উক্বাহ ইবনু ‘আমির আল-জুহানি ﷺ বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

“যেসব শর্তের মাধ্যমে তোমরা নারীদের লজ্জাস্থানসমূহে গমনের অধিকার লাভ করো সেগুলো সবচেয়ে বেশি পরিপূর্ণ হওয়ার যোগ্য।”<sup>[৬২]</sup>

[৬১] হাদীসটি আল-হাকিম এবং আল-বায়হাকি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সাহীহুল জামে’, হাদীস নং ১৫৬৭, এবং আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ১৯৯)।

[৬২] আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যেরা হাদীসটি সংকলন করেছেন।

## আকৃত অনুষ্ঠান

শর্তসমূহ যদি ইসলামের দৃষ্টিতে গ্রহণযোগ্য হয়, তাহলে সেগুলো অবশ্যই পূরণ  
করতে হবে এবং সেগুলো ভঙ্গ করা হলে স্ত্রী বিয়ে-বিচ্ছেদ ঘটাতে পারবে। কারণ এই  
ধরনের শর্ত পূর্ণ না করা স্ত্রীর পক্ষ থেকে বিয়ে বিচ্ছেদের জন্য কারণ হিসেবে যথেষ্ট।

অপর পক্ষে, স্ত্রী ক্ষমা এবং ঔদার্যবশত তার কোনো দাবি ত্যাগ করতে পারে।  
এছাড়া কাজী ইসলামী মূলনীতির সাথে সাংঘর্ষিক এমন যেকোনো শর্তও স্থগিত  
করতে পারে।

শর্তসমূহের কোনোটি যদি ইসলামের মূলনীতির পরিপন্থী হয়, তাহলে তা নিজে  
থেকেই বাতিল বলে গণ্য হবে। ‘আইশাহ এবং ইবনু ‘আববাস ﷺ বর্ণনা করেন যে,  
আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “যে শর্ত আল্লাহর কিতাব অনুযায়ী নয় তা বাতিল, এমনকি তা একশোটি শর্ত হলেও।” [৬৩]

## চুক্তিনামা সম্পাদন প্রক্রিয়া

### খুৎবাহ

বিয়ের আনুষ্ঠানিকতা পরিচালনাকারী ব্যক্তিকে ‘খুৎবাতুল হাজাহ’-এর মাধ্যমে তার  
কার্য শুরু করার জন্য জোরালোভাবে উৎসাহিত করা হয়েছে এবং ইবনু মাস‘উদ এবং  
জাবির ﷺ এ সম্পর্কিত হাদিস বর্ণনা করেছেন। [৬৪]

### ইজাব ও কবুল

ইজাব এবং কবুল (কন্যা সমর্পণ এবং স্ত্রী গ্রহণ) হলো চুক্তিনামার দুটি প্রধান এবং  
প্রকৃত স্তুতি। এর মাধ্যমে উভয় পক্ষের বিয়ে-বন্ধনে আবদ্ধ হওয়ার ব্যাপারে তাদের  
পারস্পরিক সম্মতি ও একে অপরকে গ্রহণ করার বিষয়টি প্রতিষ্ঠিত হয়। অবশ্যই  
সুস্পষ্ট বাক্য ও উচ্চারণের মাধ্যমে দু'জন সাক্ষীর উপস্থিতিতে একই বৈঠকে ইজাব  
এবং কবুল পাঠ করতে হবে।

অনুষ্ঠান পরিচালনাকারী ব্যক্তি পাত্র এবং পাত্রী উভয়কে নিম্নোক্ত কথাগুলো  
(অথবা একই মর্মে অনুরূপ কিছু) বলতে সাহায্য করতে পারেন:

[৬৩] আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা হাদিসটি সংকলন করেছেন।

[৬৪] সম্পূর্ণ খুৎবাহটি এই বইয়ের শুরুতে ভূমিকায় উদ্ধৃত করা হয়েছে।

### ক. ওয়ালীর ক্ষেত্রে

“আমি আমার দায়িত্বাধীন (অমুক) নারীকে আল্লাহর বিধান এবং তাঁর রাসূল (সা)-এর সুন্নাহ অনুযায়ী আমরা যে মোহর এবং শর্তসমূহে সম্মত হয়েছি, তার বিনিময়ে আপনার কাছে সমর্পণ করছি।”

### খ. পাত্রের ক্ষেত্রে

“আমি আপনার দায়িত্বাধীন (অমুক) নারীকে আল্লাহর বিধান এবং তাঁর রাসূল (সা)-এর সুন্নাহ অনুযায়ী আমরা যে মোহর এবং শর্তসমূহে সম্মত হয়েছি, তার বিনিময়ে বিয়ে করছি।”

অবশ্যই ইজাব এবং কবুলের বক্তব্যের তথ্য একই রকম হতে হবে। দুই বিবৃতির মধ্যে যেকোনো তথ্যগত অসামঞ্জস্য থাকলে চুক্তিনামা বাতিল হয়ে যাবে। উদাহরণস্মরণ: যদি ওয়ালী বলেন, “এক হাজার মোহরের বিনিময়ে অমুককে আমি তোমার হাতে তুলে দিচ্ছি,” আর পাত্র যদি উত্তরে বলেন, “আমি আটশত মোহরের বিনিময়ে অমুককে গ্রহণ করলাম,” —তাহলে চুক্তিনামা তাৎক্ষণিকভাবেই বাতিল হয়ে যাবে।

### চুক্তিনামা লিখে রাখা

বৈধতার জন্য বিয়ের চুক্তিনামা লিখে রাখা বা দলিল তৈরি করা কোনো শর্ত নয়। তবে স্বামী-স্ত্রীর অধিকার সংরক্ষণ এবং ভবিষ্যতের জন্য প্রমাণ হিসেবে এটি লিখে রাখা জরুরী।

বিয়ের চুক্তিনামা সম্পন্ন হয়ে গেলেই, স্ত্রীকে স্বামীর আগাম মোহর প্রদান করার দায়িত্বসহ, স্বামী এবং স্ত্রীর পারস্পরিক সমস্ত দায়-দায়িত্ব তাৎক্ষণিকভাবেই কার্যকর হয়ে যায়।

## বিয়ের অনুষ্ঠান

### বিয়ের সংবাদ লোকজনের মাঝে প্রচার করা

বিয়ের চুক্তিনামার মাধ্যমে একজন নারী এবং একজন পুরুষের মাঝে একটি নতুন সম্পর্কের সূত্রপাত হয়। যেখানে কয়েকদিন আগেও তারা ছিল পরস্পরের অপরিচিত, সেখানে তাদেরকে এখন থেকে প্রকাশ্যে একসাথে চলতে-ফিরতে দেখা যেতে পারে। কাজেই বিয়ের খবর যদি লোকজনকে না জানানো হয়, তাহলে অনেকে তাদের সম্পর্কে মন্দ ধারণা পোষণ করতে পারে। সে কারণেই কোনো রকম অতিরঞ্জন এবং অপব্যয় না করে, যতদূর সম্ভব বিয়ের খবর লোকজনকে জানিয়ে দেওয়া জরুরী। আবদুল্লাহ্ ইবনু আয়-যুবায়ের ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “বিয়েকে প্রচার করে দাও।” [৬৫]

এবং আস সা‘ইব ইবনু ইয়াযিদ ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “বিয়ে সম্পর্কে লোকজনকে জানিয়ে দাও এবং তা প্রচার করো।” [৬৬]

সাধারণত বিয়ের অনুষ্ঠানের মাধ্যমে বিয়ের খবর লোকজনকে জানানো হয়। এর মধ্যে থাকে নানা ধরনের উদ্যাপন কর্মকাণ্ড, যেমন: গান গাওয়া, বাদ্য বাজানো, মহিলাদের আনন্দ করা সহ 'ওয়ালীমাহ' নামক ভোজের আয়োজন। এই অধ্যায়ে আমরা বিয়ের অনুষ্ঠানে যেসব উদ্যাপন কর্মকাণ্ড ইসলামে অনুমোদিত সেগুলো নিয়ে আলোচনা করবো। পাশাপাশি ঐসব কর্মকাণ্ডের ব্যাপারেও সতর্ক করবো যেগুলো

[৬৫] হাদিসটি আহমাদ এবং ইবনু হিবানসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আদাবুয় ফিকাফ, পৃষ্ঠা ১৮৩)।

[৬৬] হাদিসটি (আল-কাবির প্রস্তুত) আত-তাবারানি সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে', হাদিস নং ১০১০, ১০১১; আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১৪৬৩)।

ইসলামে অনুমোদিত নয়। তবে ওয়ালীমাহ বিষয়ক আলোচনা আমরা পরবর্তী অধ্যায়ে করবো।

### দু'আ করা

বিবাহিত দম্পতির কল্যাণ ও সমৃদ্ধি কামনা করে দু'আ করাকে জোরালোভাবে উৎসাহিত করা হয়েছে। আবু উরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ নববিবাহিত দম্পতির উদ্দেশ্যে বলতেন:

“আল্লাহ তোমাকে বরকত দান করুন, তোমাদের উভয়ের প্রতি বরকত প্রেরণ করুন এবং তোমাদের উভয়ের মধ্যে যা কিছু হয় তার মধ্যে কল্যাণ দান করুন।” [৬৭]

‘আকিল ইবনু আবি তালিব ﷺ বর্ণনা করেন যে, রাসূল ﷺ সাহাবাদেরকে (নববিবাহিতদের জন্য) এই দু'আ করার শিক্ষা দিতেন:

“আল্লাহ তোমাদের (বিয়েকে) বরকতময় করুন এবং তোমাদেরকে বরকত দান করুন।” [৬৮]

### গান-বাজনা নিষিদ্ধ হওয়া

সাধারণ নিয়মানুযায়ী, ইসলামে গান-বাজনা হারাম। একথা সহীহ হাদীস এবং চার ইমামসহ ইসলামের স্বর্ণযুগের সকল ‘আলিমদের সর্বসম্মত ঐকমত্যের দ্বারা সমর্থিত। আবু মালিক আল-আশ'আরি ﷺ বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

“আমার উম্মতের মধ্য হতে একদল লোক এমন হবে যারা হির [৬৯], রেশমি বস্ত্র [৭০], মদ এবং বাদ্যযন্ত্রকে হালাল মনে করবে। তাদের মধ্য থেকে কিছু লোক একটি পাহাড় পাদদেশে তাবু টাঙ্গাবে। সন্ধ্যাবেলায় এক দরিদ্র মেষ-পালক রাখাল তার মেষগুলো নিয়ে তাদের কাছে আসবে এবং তাদের কাছে (আর্থিক সাহায্য) চাইবে। তারা (সাহায্য না করার অজুহাতে) বলবে, ‘ফিরে যাও, আগামীকাল এসো।’ এরপর, রাতের বেলায় আল্লাহ

[৬৭] হাদীসটি আবু দাউদ এবং আত-তিরমিযিসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আদাবুয় ফিফাফ, পৃষ্ঠা ১৭৫)।

[৬৮] হাদীসটি আন নাসা'ঈ এবং ইবনু মাজাহ সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আদাবুয় ফিফাফ, পৃষ্ঠা ১৭৫-১৭৭)।

[৬৯] বিবাহিত ব্যক্তির স্বামী বা স্ত্রী ব্যতীত অন্য কারও সঙ্গে ব্যভিচার এবং অবিবাহিত পুরুষ ও অবিবাহিতা নারীর মধ্যে ব্যভিচার।

[৭০] যে কোনো রেশমবস্ত্র পরিধান করা পুরুষের জন্য সম্পূর্ণরূপে নিষিদ্ধ।

## বিয়ের অনুষ্ঠান

তাদের ওপর পাহাড় ধসিয়ে তাদের অধিকাংশকেই ধ্বংস করে দেবেন এবং বাকিদেরকে তিনি শেষ বিচারের দিন পর্যন্ত বানর ও শূকরে পরিণত করে রেখে দেবেন।”<sup>[৭১]</sup>

এবং আনাস ও ‘ইমরানসহ অন্যান্যরা বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

“এই উম্মাতের কিছু লোককে ভূমিধস, পাথর বৃষ্টি এবং আকৃতি পরিবর্তন করে দেওয়ার মাধ্যমে শাস্তি দেওয়া হবে। এটি ঘটবে যখন তারা মদপান করবে, গায়িকা রাখবে এবং বাদ্যযন্ত্র বাজাবে।”<sup>[৭২]</sup>

### ‘দফ’- বাজনার ক্ষেত্রে ব্যতিক্রম

বাদ্যযন্ত্রের ব্যাপারে নিষেধাজ্ঞা থেকে একটি যন্ত্র ব্যতিক্রম— তা হলো ‘দফ’। এটি দেখতে অনেকটা খঞ্জনীর মতো। তবে এতে কোনো ঘট্টা বা ধাতব আংটা থাকে না। এই ব্যতিক্রম শুধুমাত্র তিনটি উপলক্ষে প্রযোজ্য:

- ✿ ‘ঈদ উদ্যাপনে।
- ✿ বিয়ে অনুষ্ঠানে— নিম্নে এব্যাপারে আলোচনা করা হয়েছে।
- ✿ কোনো মানত পূর্ণ করার সময়।

এ ব্যাপারটি নবী ﷺ-এর জীবদ্দশায় একটি বিশেষ ঘটনা থেকে উৎপত্তি হয়েছে যা আমাদের বর্তমান আলোচনার ক্ষেত্রে অপ্রাসঙ্গিক। অধিকস্ত, দফ সম্পর্কিত সকল বর্ণনা থেকে ইঙ্গিত পাওয়া যায় যে, শুধুমাত্র নারী ও শিশুরাই দফ বাজাবে। সুতরাং, আজকের দিনের বিয়ের অনুষ্ঠানে পুরুষদের গান, বাদ্য এবং নৃত্য করার যে প্রচলন তা সুন্নাহ্র পরিপন্থী।

অতএব, আমাদের সিদ্ধান্ত হলো

- ✿ যে বাদ্যযন্ত্র ব্যবহার করা যেতে পারে: দফ
- ✿ যে সকল উপলক্ষে ব্যবহার করা যেতে পারে: দুই ‘ঈদ এবং বিয়ের অনুষ্ঠান
- ✿ যারা বাজাতে পারবে:: নারী ও শিশুরা

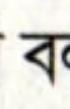
[৭১] হাদিসটি আল-বুখারি (ফাত’হুল বারী, হাদিস নং ৫৫৯০) এবং ইবনু ইবান সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে’, হাদিস নং ৫৪৬৬; আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১১)।

[৭২] হাদিসটি আহমাদ এবং আত-তিরমিয়সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে’, হাদিস নং ৫৪৬৭; আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ২২০৩)।

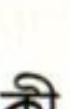
## বিয়ের অনুষ্ঠানে দফ্ত বাজানো এবং গাওয়া

বিয়ে অনুষ্ঠান উপলক্ষে দফ্ত বাজিয়ে তার সাথে সাথে গান গাওয়া শুধুমাত্র মহিলাদের জন্য অনুমোদিত একটি রীতি। আইশাহ  বর্ণনা করেন যে, একজন আনসার পুরুষের সাথে বিয়ের জন্য একজন পাত্রীকে তিনি সাজিয়ে দিলেন। আল্লাহর রাসূল  বললেন:

“হে ‘আইশাহ! তোমাদের কি লাহুওয়া (গান ও নৃত্য)-এর ব্যবস্থা ছিল না? আনসাররা সত্যিই লাহুওয়া পছন্দ করে।”<sup>[৭৩]</sup>

যা গাওয়া হবে তা সরল ও নিষ্পাপ শব্দের হতে হবে। জৈবিক ও মানসিক উদ্দীপনা জাগায়, পাপাচার এবং আল্লাহর বিরুদ্ধাচরণে কুমন্ত্রণা দেয় এমন কিছু বর্জনীয়। খেয়াল রাখা জরুরী যে, তখনকার দিনে গাওয়া বলতে কেবল কবিতা আবৃত্তির সাথে মাঝে মাঝে দফ্ত বাজানোকেই বোঝাতো। এতে কোনো স্বরলিপি অনুসরণ করা হতো না। কামোদীপক এবং কুরুচিপূর্ণ কোনো শব্দ বা ঘোন সুড়সুড়িদায়ক কোনো অঙ্গভঙ্গি থাকতো না। আইশাহ  থেকে বর্ণিত অন্য এক হাদিসে নবী  বলেছেন:

“কনের সাথে ছোট্ট একটা মেয়েকে পাঠানো কি উচিত ছিল না, যে দফ্ত বাজাতো এবং গাইতো।”

আইশাহ  জিজ্ঞেস করলেন, “সে কী গাইবে?” তিনি  বললেন:

বলবে,

“আমরা এসেছি তোমাদের কাছে, আমরা এসেছি তোমাদের কাছে।  
তাই তো আমাদেরকে স্বাগত জানাও, আর আমরাও তোমাদেরকে সন্তান জানাবো।  
যদি লাল স্বর্ণ না হতো  
তাহলে তোমাদের মরুভূমিগুলো নির্জনই পড়ে থাকতো  
আর যদি গাঢ় ফসল না থাকতো  
তাহলে কুমারী মেয়েগুলো স্বাস্থ্যহীন থাকতো।”<sup>[৭৪]</sup>

[৭৩] আল-বুখারিসহ অন্যান্যরা হাদিসটি সংকলন করেছেন।

[৭৪] হাদিসটি আত-তাবারানি সহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (ইরওয়া’ আল-গালীল, হাদিস নং ১৯৯৫, আদাবুয় ফিফাফ, পৃষ্ঠা ১৮১)।

বিয়ের অনুষ্ঠান

## নৃত্য করা

আমরা ওপরে দেখলাম যে, নবী ﷺ বিয়ে অনুষ্ঠান উপলক্ষে লাহুওয়া-এর ব্যাপারে মহিলাদের অনুমতি দিয়েছেন। লাহুওয়া হলো দফ বাজিয়ে গান গাওয়া। নৃত্যকেও এর অন্তর্ভুক্ত করা যায়। তবে এই নৃত্য শুধু দফের শব্দের সাথে তাল মিলিয়ে মণ্ড এবং নিষ্কলুষ দেহভঙ্গ মাত্র। এই নৃত্য কথনেই ঐ কামোদীপক এবং যৌন সুড়সুড়ি জাগানিয়া নাচানাচি নয় যা আজকাল বিয়ের অনুষ্ঠানগুলোতে করা হয়ে থাকে।

## উপহার দেওয়ার সঠিক নিয়ম

সব উপলক্ষেই উপহার দেওয়াটা একটি উত্তম চর্চা। আবু উরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহ রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “উপহার বিনিময় করো— এটি তোমাদের মধ্যে ভালোবাসার সঞ্চার করবে।” [৭৫]

নিম্নোক্ত বিষয়গুলোকে বিবেচনায় রেখে, নববিবাহিত দম্পতিকেও উপহার দেওয়া যেতে পারে:

বিয়ের অনুষ্ঠানে এই ধরনের উপহার দেওয়াকে বাধ্যতামূলক রীতি হিসেবে বিবেচনা করা যাবে না, যেমন: উপহারসামগ্রী গ্রহণের লক্ষ্যে ঘটা করে কোনো আয়োজন করা, যাতে আমন্ত্রিত অতিথিরা পাত্রীর জন্য উপহার নিয়ে আসে।

উপহার এমন হতে হবে যেগুলো ইসলামে বৈধ। কোনো ধরনের মূর্তি বা ভাস্কর্য, কোনো বাদ্যযন্ত্র, বাঁশী বা এই জাতীয় কোনো নিষিদ্ধ সামগ্রী উপহারের মধ্যে থাকবে না।

এই নির্দেশনাগুলো মাথায় রেখে সুচিপ্রতি পছন্দের মাধ্যমে উপহার সামগ্রী প্রদান করলে নববিবাহিত দম্পতির নতুন সংসার সাজাতে সেগুলো খুবই সহায়ক হতে পারে।

## পাপে ভরা বিয়ে অনুষ্ঠান

আজকাল বিয়ের অনুষ্ঠানে মুসলিমরা প্রায়ই সুমহান আল্লাহ-এর বিরুদ্ধাচরণ করাসহ নানা পাপে লিপ্ত হয়। অনেকে ধরে নেয় যে, বিয়ের অনুষ্ঠান এমন একটি উপলক্ষ যেখানে কিছু ইসলামী নিয়ম-নীতি লঙ্ঘন করা যায়। এই অংশে আমরা এমনই কিছু

[৭৫] হাদিসটি আবা ইয়া‘লা, আল-বায়হাকি এবং আল-বুখারি (আল-আদাবুল মুফরাদ গ্রন্থে) সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (আরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৬০১)।

বিরুদ্ধাচরণের ওপর আলোকপাত করবো। সেই সাথে মুসলিমদেরকে আহ্বান জানাবো তারা যেন নিজেদের বিয়ের অনুষ্ঠানে এসব কাজ দৃঢ়ভাবে পরিহার করেন এবং যেসব অনুষ্ঠানে এমনটি হয় সেগুলোকেও দৃঢ়ভাবে পরিহার করেন।

আমরা বিশেষভাবে নবদম্পতি এবং তাদের পরিবারগুলোকে স্মরণ করিয়ে দিচ্ছি যে, বিয়ের মধ্য দিয়ে দু'জন মানুষের একটি নতুন জীবনের সূচনা হয়। অতএব, এই জীবনে পদার্পণটা যেন সর্বোত্তম পস্থায় হয়, সেজন্য সবরকমের পদক্ষেপ নিতে হবে, তাদের প্রতিপালকের অনুগত থেকে তাঁর ক্ষমা ও অনুগ্রহের আশান্বিত হতে হবে। তাদের পাপাচার থেকে বাঁচার সর্বোচ্চ চেষ্টা করতে হবে, যাতে আল্লাহর অনুগ্রহ থেকে বঞ্চিত হয়ে কঠিন শাস্তির মধ্যে পড়তে না হয়।

### বিয়েতে অন্যেসলামী বেশ-ভূষা

বিয়ের অনুষ্ঠানে বেশ-ভূষা এবং সাজসজ্জার ব্যাপারে মুসলিমদেরকে নিম্নোক্ত নির্দেশনাগুলো সবসময় বিবেচনায় রাখতে হবে:

শরীরের যেসব লোম রেখে দেওয়ার হৃকুম, সেগুলো না ফেলা। নারীদের জ্ঞ তুলে ফেলা এবং পুরুষদের দাঢ়ি চেঁছে ফেলা বা একেবারে ছেট করে কাটা।

তাদের উচিত অমুসলিম এবং পথভ্রষ্টদের রীতিনীতি অনুসরণ না করা। যেমন: নায়িকা, গায়িকা, মডেল, নর্তকীদের মতো বিচিত্র ঢঙে চুল ছেঁটে তাদের সাদৃশ পোশাক-পরিচ্ছদ ধারণ করা।

মহিলারা সুগন্ধি লাগাতে পারবে যদি কেবল তারা অন্যান্য মহিলাদের সাথে বা তাদের কোনো মাহ্রামের সাথে থাকে। গায়ের মাহ্রামদের উপস্থিতিতে সুগন্ধি লাগালে তাতে বড় ধরনের পাপ হবে। আবু মুসা আল-আশ'আরি [৭৬] বর্ণনা করেন, নবী ﷺ বলেছেন:

“যে নারী সুগন্ধি মেখে পুরুষদের পাশ দিয়ে যাওয়ার সময় তারা তার সুগন্ধ পায়, সে নারী ব্যভিচারিণী।” [৭৬]

মহিলাদের এমন কোনো রূপচর্চা করা উচিত নয় যা তাদের প্রকৃত চেহারার পরিবর্তন ঘটায়। যেমন হাত-পা-এর নখ বড় করা, এগুলোতে নেইল পলিশ দেওয়া,

[৭৬] হাদীসটি আবু দাউদ এবং আত-তিরমিযিসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে', হাদীস নং ২৭০১; আল-মিশকাত, হাদীস নং ১০২৩)।

## বিয়ের অনুষ্ঠান

জ্ঞাতোলা, চোখের মণির বর্ণ পরিবর্তন করা, শরীরের কোথাও ট্যাটু বা উক্ষি আঁকা, অথবা এমন কোনো মেকআপ দেওয়া যা শরীরের ভক্তের রং পরিবর্তিত করে। এগুলো ভক্তের শক্তি সাধন করে এবং এর মাধ্যমে আল্লাহর সৃষ্টিতে পরিবর্তন পরিলক্ষিত হয়।

তবে চোখের রেখা আঁকার জন্য প্রাকৃতিক কুহ্ল (সুরমা) ব্যবহার করার অনুমতি আছে। সাহাবাগণ এমনটি করে থাকতেন এবং ‘আলী’<sup>৭৭</sup> বর্ণনা করেন যে, নবী<sup>৭৮</sup> বলেছেন:

“তোমরা সুরমা লাগাও; এটি চোখের পাঁপড়ি গজাতে সাহায্য করে, চোখের অশুদ্ধতা দূর করে এবং দৃষ্টিকে স্বচ্ছ করে।”<sup>[৭৭]</sup>

মেহেদি ব্যবহার করার অনুমতি আছে। মেহেদি হলো লালচে কমলা রঙের এক ধরনের প্রসাধন যা মেহেদি গাছের পাতা এবং কাণ্ড থেকে পাওয়া যায়। নবীর<sup>৭৯</sup> গৃহ পরিচারিকা সালমা বর্ণনা করেন:

“চোট পেলে, কাঁটা ফুটলে নবিজি<sup>৮০</sup> প্রতিটি ক্ষেত্রে মেহেদি লাগাতেন।”<sup>[৭৮]</sup>

মুসলিমদেরকে উক্ষি আঁকা এবং শরীর ছিদ্র করা বর্জন করতে হবে। ইসলামে এসব কঠিনভাবে নিষিদ্ধ। এগুলো স্পষ্টতই শয়তানের কুপ্রোচনা থেকে ঘটে যা কেবল সাম্প্রতিককালে পথভ্রষ্ট এবং বিকৃত রুচির মানুষদের কাছে জনপ্রিয়তা লাভ করেছে।

মুসলিমদের আভিজাত্য এবং মিতব্যয়িতার মাঝে ভারসাম্য রক্ষা করতে হবে। ফলে কখনোই এমন কোনো পোশাক এবং সাজসজ্জা গ্রহণ করা যাবে না যা অপব্যয় বা বাড়াবাড়ির পর্যায়ে পড়ে। তাদের স্মরণে থাকা উচিত যে, তারা এক রাতের একটি পোশাক বা একজোড়া জুতোর জন্য যে টাকা খরচ করবে, সেই টাকাটি পৃথিবীর অন্যকোনো প্রান্তের না-খেয়ে থাকা মুসলিমের জীবন বাঁচানোর জন্য যথেষ্ট হতে পারে।

অহংকার প্রকাশ করার জন্য এবং লোক দেখানোর জন্য কোনো পোশাক পরা এবং সাজসজ্জা করা তাদের উচিত নয়।

তাদের পোশাক এমন হতে হবে যা সম্পূর্ণ ‘আওরাহ আচ্ছাদিত করবে এবং দেহ কাঠামোকে গোপন রাখবে। নিম্নের ছকে আওরাহ’র পরিসীমা দেওয়া হলো:

সংশ্লিষ্ট ব্যক্তি

আওরাহ’র পরিসীমা

[৭৭] হাদীসটি আত-তাবারানি এবং আবু নুয়া‘ইমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ২৭০১)।

[৭৮] হাদীসটি আত-তিরমিয় এবং ইবনু মাজাহ সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে হাসান বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ২০৫৯; আল-মিশকাত, হাদীস নং ৪৪৬৭)।

| পুরুষ বা নারীদের উপস্থিতিতে পুরুষ                    | নাভি থেকে হাঁটু পর্যন্ত  |
|--|--|
| গায়ের মাহ্রাম বা অমুসলিম নারীদের<br>উপস্থিতিতে নারী | দু'হাত (কঙ্গি পর্যন্ত) এবং মুখমণ্ডল<br>ব্যতীত পুরো শরীর            |
| মাহ্রাম বা মুসলিম নারীদের<br>উপস্থিতিতে মুসলিম নারী  | মাথা, ঘাড়, কনুই পর্যন্ত দু'হাত এবং<br>জঙ্ঘাস্তি ব্যতীত পুরো শরীর। |

আওরাহ্ আবৃত রাখার নিয়মের লঙ্ঘন হয় এমন কিছু উদাহরণ হলো— পুরুষদের হাফপ্যান্ট বা আঁটসাঁট প্যান্ট পরা; নারীদের গায়ের মাহ্রামদের সামনে মাথা, কনুই পর্যন্ত বাছ উন্মুক্ত রাখা অথবা আঁটসাঁট (স্কিন টাইট), স্বচ্ছ (যে কাপড়ের ভেতর দিয়ে শরীর দেখা যায়) কিংবা এমন কোনো রগরগে পোশাক পরা যা অন্যের দৃষ্টি আকর্ষণ করে; উরু, বগল কিংবা বক্ষদেশের অংশ বিশেষ উন্মোচিত রাখা, পায়ের টাখনুর নীচ থেকে উপরিভাগের বেশ কিছু অংশ উন্মোচিত রাখা ইত্যাদি।

মুসলিমরা বিপরীত লিঙ্গের পোশাক পরিধান করবে না। যেমন: নারীদের পুরুষদের মতো পোশাক পরিধান করা কিংবা পুরুষের রেশমবস্ত্র, স্বর্ণালঙ্কার, গলার হার বা মালা, কানের দুল, হাতের চুড়ি, মাথার চুলের বেল্ট ইত্যাদি পরিধান করা। এদের প্রতি রয়েছে নবী ﷺ-এর সুম্পত্তি অভিসম্পাত।

### বিয়েতে অন্তেসলামী কার্যকলাপ

মুসলিমদেরকে তাদের বিয়ের অনুষ্ঠানে আরও অনেক অন্তেসলামী ক্রিয়াকলাপ থেকে বিরত থাকবে হবে। বিশেষভাবে নিম্নোক্ত ক্রিয়াকলাপ থেকে:

পরম্পরের মাহ্রাম নয় এমন নারী-পুরুষের মেলামেশা পরিহার করতে হবে। কারণ এর মাধ্যমে অনেক পাপ সংঘটিত হয়ে থাকে। যেমন—

- ✿ একে অন্যকে স্পর্শ করা, আলিঙ্গন করা বা করমদ্রন করা।
- ✿ পরম্পরের সাথে ঠাট্টা-তামাশা, খোশগল্ল বা কোনো রকম মাখামাখি করা।
- ✿ একে অন্যের সাথে দৃষ্টি বিনিময় করা বা অপলক দৃষ্টিতে তাকিয়ে থাকা।
- ✿ বরযাত্রীসহ পাত্রকে বিয়ের অনুষ্ঠানে নারীদের জন্য নির্ধারিত স্থানে প্রবেশ করতে দেওয়া।
- ✿ বর-কনেকে সাজিয়ে উন্মুক্ত স্থানে খোলা মধ্যে সকলের প্রদর্শনীর জন্য উপস্থাপন করা।

## বিয়ের অনুষ্ঠান

- মুসলিমদের উচিত অপব্যয় না করা বা বিয়ের অনুষ্ঠানকে কোনো লোক দেখানোর প্রদর্শনী বানিয়ে না ফেলা; যেখানে সমস্ত টাকা-পয়সা এমন খাতে ব্যয় করা হয় যার মধ্যে মুসলিমদের জন্য কোনো কল্যাণ নেই। যেমন:
- কোনো ব্যবহৃত হোটেল, কমিউনিটি সেন্টার, কনভেনশন হল কিংবা নাচঘরে বিয়ের অনুষ্ঠানের আয়োজন করা, যেখানে চোখ ধাঁধানো আলোক সজ্জা করা হয়, অতেল পরিমাণে খাবার-দাবার পরিবেশন করা হয় এবং ইসলাম পরিপন্থী ক্রিয়াকলাপ সংঘটিত হয়।
- আমন্ত্রিতদের মাঝে চড়ান্মের মোড়ক ভর্তি মিষ্টান্ন বিতরণ করা অথবা তাদের মাঝে রৌপ্য বা স্বর্ণের মুদ্রা ছড়ানো যাতে 'সৌভাগ্যবানরা' সেগুলো লুক্ষণ নিতে পারে।
- পাত্রীর অত্যন্ত উচ্চমূল্যের বিয়ের বিশেষ পোশাক পরিধান করা যাতে তার 'আওরাহ'র অধিকাংশই প্রকাশিত বা উন্মুক্ত হয়ে পড়ে।

মুসলিমদেরকে সেইসব পাপ কাজগুলোও বর্জন করতে হবে যেগুলো অমুসলিমদের বিয়ের অনুষ্ঠানের বৈশিষ্ট্য। যেমন:

- অনুষ্ঠানে খাদ্য পরিবেশন ও সেবাদানের জন্য অন্যসলামী পোশাক পরিহিতা নারীদের উপস্থিত রাখা।
- গান-বাজনা বা লাইভ কনসার্টের পাশাপাশি অশালীন ইঙ্গিতপূর্ণ ও কামোদীপক নৃত্য করা।
- মদ ও মদ জাতীয় পানীয় পরিবেশন করা।
- নববিবাহিত দম্পতির উভয়ে তাদের নতুন 'বিয়ে চিহ্ন' হিসেবে বিয়ের আংটি পরিধান করে থাকা। ইসলামে উল্লিখিত ধরনের চর্চার কোনো রকম অনুমোদন নেই।

বিয়ের নামে ইসলামের কোনো ফরয ছুকুমকে তারা লঙ্ঘন করতে পারবে না।

যেমন:

- সালাত কায়া করা কিংবা 'জামা' আতে সালাত আদায় করা থেকে বিরত থাকা।
- অনেক রাত পর্যন্ত বিয়ের অনুষ্ঠান চালু রাখা; যার কারণে আমন্ত্রিত অতিথিদের ফজরের সালাত কায়া হয়ে যেতে পারে।

## ছবি তোলা থেকে বিরত থাকা

জরুরি প্রয়োজন ছাড়া একজন মুসলিমের ছবি তোলা, ভিডিও করা, লাইভ টেলিকাস্ট করা উচিত নয়। আইশাহ বর্ণনা করেন যে, নবী একবার তার ঘরে ছবিযুক্ত একটি পর্দা দেখলেন। এতে তাঁকে বেশ রাগান্বিত দেখা গেল এবং তিনি বললেন:

“নিশ্চয়ই যারা এই ধরনের ছবি তৈরি করে, তাদেরকে কিয়ামতের দিন যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রদান করা হবে এবং বলা হবে, ‘যা তৈরি করেছো তাতে জীবন দান করো।’”

তাই তিনি পর্দাটি সরিয়ে নিলেন এবং কেটে তা দিয়ে কিছু বালিশ বানালেন।<sup>[৭৯]</sup>

ইবনে মাস‘উদ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:

“নিশ্চয়ই কিয়ামতের দিন যেসব লোকেরা সবচেয়ে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি পাবে তারা হলো ছবি প্রস্তুতকারী।”<sup>[৮০]</sup>

আবু তালহা এবং ‘আলীসহ অন্যান্যরা বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:

“নিশ্চয়ই যে বাড়িতে কোনো কুকুর বা জীবের ছবি থাকে সেই বাড়িতে (রহমতের) ফেরেশতাগণ প্রবেশ করেন না।”<sup>[৮১]</sup>

উল্লিখিত হাদীসগুলো সবধরনের ছবির ক্ষেত্রে প্রযোজ্য যাদের জীবন আছে। এমনকি সেগুলো কাঙ্গালিক হলেও। এগুলো হতে পারে দ্বিমাত্রিক কিংবা ত্রিমাত্রিক, হতে পারে আলোকচিত্র অথবা হাতে আঁকা কোনো চিত্রকর্ম।

একটি অতি প্রাচলিত আধুনিক রীতি হলো বিয়ের উৎসবের সময় নববিবাহিত দম্পতিসহ তাদের বন্ধুবন্ধন এবং আত্মীয়-স্বজন মিলে অসংখ্য ছবি তোলা এবং এগুলোর ভিডিও-চিত্র ধারণ করা। এই ছবিগুলোতে থাকে সুমহান আল্লাহ-এর হৃকুমের বিরুদ্ধাচরণমূলক ক্রিয়াকলাপ দৃশ্য। যেমন: নারীরা তাদের মাথার চুলসহ শরীরের অন্যান্য অংশ উন্মোচিত রেখে বিভিন্ন অঙ্গভঙ্গি করে এমন সব পুরুষদের সাথে ছবি তোলে, যারা তাদের মাহুরাম নয়। কাজেই, এক দিকে যেমন কোনো রকম প্রয়োজন ছাড়াই এসব ছবি তোলা হচ্ছে, তার ওপর ছবির দৃশ্যের মাধ্যমে স্পষ্ট পাপাচার এবং আল্লাহর হৃকুমের বিরুদ্ধাচরণ প্রতিফলিত হচ্ছে। ভবিষ্যতে বছরের

[৭৯] হাদীসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[৮০] হাদীসটি মুসলিম এবং আহমাদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[৮১] হাদীসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

### বিয়ের অনুষ্ঠান

পরা বছর ধরে নিজেসহ অন্যরা দেখার জন্য মানুষের পাপাচারকে তারা ‘স্মৃতির  
ক্ষেত্রে বাঁধিয়ে রাখে’। এতে করে বিচারের দিন পর্যন্ত তাদের হিসাবের খাতায় পাপ  
গুরু হতে থাকে।

## একসাথে পথচলা

স্বামী-স্ত্রীর পারম্পরিক অংশীদারিত্বপূর্ণ কিছু দায়িত্ব এবং কর্তব্যের ভিত্তিতে প্রতিষ্ঠিত একটি চুক্তির নাম 'বিয়ে'। বিয়ে তাদের মাঝে একটি অংশীদারিত্বপূর্ণ সম্পর্কের সৃষ্টি করে যে সম্পর্কটিতে উভয়কেই নিজ নিজ সক্রিয় ভূমিকা পালন করতে হয়। এভাবেই হাতে হাত রেখে জীবনপথের সকল বাধা-বিপত্তি কাটিয়ে মিলেমিশে সামনে এগিয়ে যেতে হয়।

পুরুষ হলো সংসারের প্রধান কর্তা। নারী তার সহযোগী। আপন ভূবনে দায়িত্ব ও কর্তব্য পালনে পারঙ্গম নারীকে সংসারের অনেক কাজই সামলাতে হয়, যা পুরুষের পক্ষে সন্তুষ্ট নয়। আবার পশ্চিমা ভাবাদর্শে প্রভাবিত হয়ে কিছু নারী পুরুষকে ডিঙিয়ে পরিবারের কর্তা হতে চায়— এটাও উচিত নয়। এরকম অস্বাভাবিক ও নিয়মবিরুদ্ধ চর্চার অনিবার্য পরিণতি হিসেবে এসব পরিবারে দেখা দেয় চরম বিশৃঙ্খল ও নৈরাজ্যকর পরিস্থিতি।

স্বামী ও স্ত্রী প্রত্যেকের রয়েছে নিজ নিজ দায়িত্ব ও কর্তব্য। একটি সুখী ও সার্থক দাম্পত্য জীবনের নিশ্চয়তা স্বামী-স্ত্রীর পারম্পরিক কর্তব্য পালন, তাদের পারম্পরিক অধিকার সংরক্ষণ ও পরম্পরার প্রতি আস্থা-বিশ্বাসের মাঝেই নিহিত। এসবের কোনোরূপ লঙ্ঘন পরিবারের নিশ্চিত বিপর্যয় ও ব্যর্থতার পথকে উন্মুক্ত করে দেয়।

### যৌথ দায়িত্ব, যৌথ প্রতিদান

এমন কিছু দায়িত্ব এবং কর্তব্য রয়েছে যেগুলো নারী এবং পুরুষ উভয়ের জন্যই সমানভাবে প্রযোজ্য। উদাহরণস্বরূপ, আল্লাহর প্রতি ঈমান আনা এবং তাঁর হৃকুম-আহ্কাম পালন করার যে দায়িত্ব, তা উভয়ের জন্য সমান। অনুরূপভাবে, তাদের প্রত্যেকেই নিজ নিজ কর্মের জন্য দায়ী এবং নিজেদের কর্মের ব্যাপারে প্রত্যেককেই আলাদা আলাদাভাবে জবাবদিহি করতে হবে। দ্বিনের সঠিক জ্ঞানার্জন করা, আল্লাহর

## ভালোবাসার চাদর

ইবাদত করা এবং মানুষকে ইসলামের দিকে আহ্বান করা উভয়ের জন্যই সমানভাবে গুরুত্বপূর্ণ। নৈতিকতার মানদণ্ডও উভয়ের জন্য একই। অন্য মানুষদের সাথে চলাফেরা এবং আচার-আচরণের ক্ষেত্রেও অনেক নিয়ম-কানুন তাদের উভয়কেই একইভাবে অনুসরণ করতে হয়।

আল্লাহর আনুগত্য করলে নারী-পুরুষ উভয়ের জন্যই রয়েছে একই পুরস্কার। পক্ষান্তরে, তাঁর বিরুদ্ধাচরণ কিংবা পাপ করলে উভয়ের জন্যই রয়েছে একই শাস্তি। আল্লাহ তা‘আলা বলেন:

»مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُخْبِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِإِحْسَانٍ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ«

« যে নেক ‘আমল করবে, পুরুষ হোক বা নারী, যদি সে ঈমানদার হয়, তবে আমি তাকে পবিত্র জীবন দান করবো এবং তারা যা করতো তার তুলনায় অবশ্যই আমি তাদেরকে উত্তম প্রতিদান দেবো। [৮২] »

এরপর আল্লাহ তা‘আলা বলেন:

»فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيقُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنثَى بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ«

« তাদের রব তাদের ডাকে সাড়া দিলেন যে, নিশ্চয়ই আমি তোমাদের কোনো পুরুষ অথবা মহিলা ‘আমলকারীর ‘আমল নষ্ট করবো না। তোমরা একে অপরের অংশ। [৮৩] »

যেহেতু নারী-পুরুষ উভয়েই বাড়ির কর্তা ও কর্তী; তাই পরিবার গঠন ও তার প্রতিপালনে তাদের উভয়কেই দায়িত্ব পালন করতে হয়। যেহেতু তারা উভয়েই তাদের স্ব স্ব কর্তব্যের ধারক ও বাহক, তাই তাদের উভয়কেই নিজেদের দায়িত্ব সম্পর্কে আল্লাহর নিকট জবাবদিহি করতে হবে। ইবনু ‘উমার বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

”তোমাদের প্রত্যেকেই দায়িত্বশীল এবং তোমাদের প্রত্যেকেই তার দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে। শাসক (তার প্রজার ওপরে) দায়িত্বশীল এবং সে তার দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে। স্বামী তার পরিবারের ওপরে দায়িত্বশীল এবং সে তার দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে। স্ত্রী তার স্বামী-সংসারের ওপর দায়িত্বশীল এবং সে তার দায়িত্ব সম্পর্কে

[৮২] আন-নাহল, ১৬:৯৭।

[৮৩] আলে-ইমরান, ৩:১৯৫।

জিজ্ঞাসিত হবে। চাকর তার মালিকের ধন-সম্পদের ওপর দায়িত্বশীল এবং সে তার দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে। পুত্র তার পিতার ধন-সম্পদের ওপর দায়িত্বশীল এবং সে তার দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে। এভাবেই তোমাদের প্রত্যেকেরই দায়িত্ব রয়েছে এবং প্রত্যেকেই তার দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে।”<sup>[৮৪]</sup>

নারী-পুরুষের কার কাঁধে কোন দায়িত্ব অর্পণ করা হয়েছে সে ব্যাপারে তাদের একটি সচ্ছ এবং সুস্পষ্ট ধারণা থাকা অতীব জরুরী। এই ধারণা তাদেরকে কঠোর সচেতন ও পরিশ্রমী করে তুলবে এবং তাদের লক্ষ্য পূরণে পরম্পরাকে সহযোগিতা করতে উদ্ব�ৃদ্ধ করবে, যাতে তারা বিচার দিবসে দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হলে প্রশ্নের উত্তর দিতে সমর্থ হয়।

### সাম্য ও সমতার সমীকরণ

নারী ও পুরুষের মাঝে তুলনা করার সময় আমাদের উপলব্ধি করা উচিত যে, সৃষ্টিগতভাবে যেহেতু তারা একই প্রকৃতি ও বৈশিষ্ট্যের অধিকারী নয়, তাই ইসলাম তাদেরকে কখনোই সমান বলে স্বীকৃতি দেয় না। এমন অনেক বিষয় রয়েছে যেগুলোতে পুরুষকে নারীর ওপর অগ্রাধিকার দেওয়া হয়েছে। আবার অনেক ক্ষেত্রেই তার উল্টোটাও ঘটেছে। কর্ম সম্পাদনের ক্ষেত্রে তাদের আপন আপন সামর্থ্য থেকেই এসব অগ্রাধিকারের উৎপত্তি হয়েছে। অতএব, যারা কখনোই সমান নয়, তাদেরকে সমান বলে প্রতিষ্ঠিত না করে বরং আমাদের উচিত হবে নারী ও পুরুষের মাঝে সাম্যের বিষয়ে মনোযোগ দেওয়া।

### উত্তম আচরণ ও তার বৈশিষ্ট্য

নারী-পুরুষ উভয়ের ওপর অর্পিত দায়িত্বের একটি বড় অংশ হলো— তারা বাড়িতে উত্তম আচরণ প্রদর্শন করবে এবং উত্তম আচরণসহ জীবন যাপন করবে। দ্বীন ইসলামের অনন্য বৈশিষ্ট্যই হলো উত্তম আচরণ। আবু উরায়রা<sup>ؑ</sup> বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“উত্তম চরিত্রের পূর্ণতা দানের জন্যই আমাকে প্রেরণ করা হয়েছে।”<sup>[৮৫]</sup>

[৮৪] হাদিসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[৮৫] হাদিসটি ইবনু সা‘আদ এবং আল-হকিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল্ল জামে‘, হাদিস নং ২৩৪৯ এবং আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ৪৫)।

লক্ষণীয় যে, ইসলামে 'উত্তম আচরণ' কেবল সত্যবাদিতা, দয়া, উদারতাসহ অন্যান্য সাধারণ কিছু চারিত্রিক গুণাবলীর মধ্যেই সীমাবদ্ধ নয়। বরং সত্যিকার অর্থে আল্লাহকে বিশ্বাস করা এবং তাঁর হৃকুম পালনের মাধ্যমে তাঁর সাথে উত্তম আচরণ করা, নবী ﷺ-কে অনুসরণের মাধ্যমে তাঁর সাথে উত্তম আচরণ করা এবং সর্বোপরি অন্য সকল মানুষের সাথে উত্তম আচরণ করাও 'উত্তম আচরণের' অন্তর্ভুক্ত। নবী ﷺ-এর পরে সর্বোত্তম মানুষ হলেন তারাই যাদের আচরণ উত্তম। আব্দুল্লাহ ইবনু 'আমর বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

| “নিশ্চয়ই তোমাদের মধ্যে সর্বোত্তম হলো তারাই যারা সর্বোত্তম আচরণের অধিকারী।” [৮৬]

এছাড়া আব্দুল্লাহ ইবনু ‘আমর বর্ণনা করেন যে, নবী ﷺ বলেছেন:

| “মু’মিনদের মধ্য থেকে সর্বোত্তম হলো তারাই যারা সর্বোত্তম আচরণের অধিকারী।” [৮৭]

জীবনে সর্বক্ষেত্রেই একজন মুসলিমকে উত্তম আচরণ প্রদর্শন করতে হবে। তার এই বৈশিষ্ট্য তাকে অন্য সব মুসলিমদের মাঝে সর্বোচ্চ সম্মানের আসনে আসীন করবে। উত্তম আচরণের কারণে একজন মু’মিন রাসূল ﷺ-এর প্রিয়পাত্র হওয়ার যোগ্যতা লাভ করেন এবং তার ও জান্মাতের মাঝের দূরত্বও কমে আসে। আবু হুরায়রা رضي الله عنه বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

| “বিশেষভাবে যে বিষয়গুলো মানুষকে জান্মাতে প্রবেশ করাবে তা হলো আল্লাহর তাকওয়া এবং উত্তম আচরণ। আর বিশেষভাবে যে বিষয়গুলো মানুষকে আগ্নে প্রবেশ করাবে তা হলো মুখ এবং লজ্জাস্থানসমূহ।” [৮৮]

দূরসম্পর্কের লোকজনের সাথে ব্যবহারের ক্ষেত্রেই কেবল উত্তম আচরণ করাকে সীমাবদ্ধ রাখা উচিত নয়। বরং নিকটান্তীয়দের সাথেও উত্তম আচরণের সর্বোত্তম বাস্তবায়ন ঘটাতে হবে। এর চেয়েও গুরুত্বের বিষয় হলো— স্বামী-স্ত্রী তাদের পারম্পরিক আচার-ব্যবহারে উত্তম আচরণের সর্বোচ্চ মান বজায় রাখবে। পরিবারের মধ্যেই একজন মানুষের মুখোশহীন সত্যিকার চরিত্রের বহিঃপ্রকাশ ঘটে। কারণ একজন

[৮৬] হাদীসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[৮৭] হাদীসটি ইবনু মাজাহ এবং আল-হাকিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহল জামে’, হাদীস নং ১১২৮ এবং আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ১৩৭৪)।

[৮৮] হাদীসটি আত-তিরমিয়ি, আহমাদ এবং ইবনু মাজাহ সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটি হাসান বলে মত দিয়েছেন (সহীহল জামে’, হাদীস নং ৯৭৭)।

## একসাথে পথচলা

মানুষ অন্য মানুষের সামনে যে আচার-ব্যবহার ও আনুষ্ঠানিকতা বজায় রেখে চলে, তা পরিবারের মধ্যে বজায় রেখে চলে না।

কাজেই উত্তম আচরণ পাওয়া যেমন স্বামী-স্ত্রীর পারম্পরিক অধিকার, তেমনি পরিবারের প্রতি উত্তম আচরণ করাও তাদের পারম্পরিক দায়িত্ব। স্বামী-স্ত্রীর মাঝে নিশ্চিহ্ন সম্পর্কের মধ্য দিয়ে বিষয়টি প্রতিফলিত হয়। এটি তাদের মাঝে একটি কল্যাণময় সম্পর্কের জন্য অত্যাবশ্যক। আবু হুরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“মু’মিনদের মধ্যে সবচেয়ে পূর্ণ ঈমানের অধিকারী তারাই যাদের চরিত্র সবচেয়ে পরিশীলিত। আর তোমাদের মধ্যে সর্বোত্তম হলো তারাই যারা তাদের স্ত্রীদের কাছে সর্বোত্তম।” [৮৯]

অতএব, নিজের স্বামী বা স্ত্রীর সাথে আচরণ করার সময় সর্বক্ষেত্রেই উত্তম আচরণ প্রদর্শন করতে হবে। এই বিষয়ে সবিস্তরে আলোচনা করতে গেলে এই বইয়ের সংক্ষিপ্ত পরিসরে তা সংকুলান করা যাবে না। তথাপি, নিম্নের অনুচ্ছেদগুলোতে কিছু সর্বাধিক গুরুত্বপূর্ণ চারিত্রিক বৈশিষ্ট্য নিয়ে আলোচনা করবো যে বৈশিষ্ট্যগুলো পারিবারিক পরিমণ্ডলে অবশ্যই মেনে চলতে হবে।

## সত্যবাদিতা

আল্লাহ তা‘আলা তাঁর কিতাবের অনেক জায়গায় সত্যবাদীদের প্রশংসা করেছেন এবং সত্যবাদিতাকে মু’মিনদের একটি বৈশিষ্ট্য হিসেবে স্বীকৃতি দিয়েছেন।<sup>[৯০]</sup> অন্যদিকে, মিথ্যাচারীদের নিন্দা করেছেন এবং মিথ্যাচারকে মুনাফিকদের বৈশিষ্ট্য বলে সাব্যস্ত করেছেন।<sup>[৯১]</sup>

অধিকন্তু, নবী ﷺ সত্যবাদিতার প্রশংসা করেছেন এবং তা জানাতে নিয়ে যায় বলে উল্লেখ করেছেন। অন্যদিকে, তিনি মিথ্যাচারকে নিন্দা করেছেন এবং তা জাহানামে নিয়ে যায় বলে উল্লেখ করেছেন।

সত্যবাদিতা স্বামী-স্ত্রীর মাঝে পারম্পরিক আস্থা ও আত্মবিশ্বাসের জন্ম দেয়। যেকোনো অংশীদারিত্বপূর্ণ সম্পর্কের সাফল্যের জন্য এটা অত্যাবশ্যক উপাদান। আর

[৮৯] হাদিসটি আত-তিরামিয়ি এবং ইবনু হিবান সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে’, হাদিস নং ১২২৩ এবং আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ২৮৪)।

[৯০] উদাহরণস্মরণ, আত-তাওবাহ, ৯:১১৯ দেখুন।

[৯১] উদাহরণস্মরণ, আল- মুনাফিকুন, ৬৩:১ দেখুন।

বিয়েও এর ব্যক্তিক্রম নয়। পক্ষান্তরে, মিথ্যাচার ও প্রতারণার ফলে তৈরি হয় এক অনিশ্চিত সম্পর্কের যা নিমেষেই ভেঙ্গে যেতে পারে। কিছু মানুষ একটি আন্ত ধারণা বয়ে বেড়ায় যে, নিজের স্বামী বা স্ত্রীর সাথে যতো-খুশি মিথ্যা বলা যায়। এই আন্ত ধারণার জন্ম হয়েছে নিম্নোক্ত হাদিসটির অপব্যাখ্যা থেকে:

উম্মু কুলসুম বিন্তে ‘উকবাহ’<sup>[১২]</sup> বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন: “আমি তাকে মিথ্যাবাদী বলে মনে করি না— যে ব্যক্তি (মতবিরোধে লিপ্ত) লোকজনের মধ্যে মধ্যস্থতা করে, যে বিরোধ মীমাংসা করার স্বার্থে কোনো (মিথ্যা) কথা বলে, যে ব্যক্তি যুদ্ধকালীন (শক্রকে) কোনো (মিথ্যা) কথা বলে, যে ব্যক্তি তার স্ত্রীর সাথে খোশগল্ল করে এবং যে নারী তার স্বামীর সাথে খোশগল্ল করে।”<sup>[১৩]</sup>

উল্লিখিত হাদিস থেকে এটি স্পষ্ট যে, স্বামী ও স্ত্রীর মাঝে মিথ্যা বলা তাদের মনোমুঞ্ছকারী খোশগল্লের মাঝেই সীমাবদ্ধ। এধরনের মিথ্যা বলার পরিস্থিতিটা এমন হতে পারে যখন স্বামী তার স্ত্রীকে বলে— ‘তোমার চেয়ে ভালো রান্না আর কেউ করতে পারে না!’ কিংবা ‘তোমার পোশাকটিই সবচেয়ে সুন্দর!’ কিংবা ‘আজ তোমায় দারুণ লাগছে!’ অথবা যখন স্ত্রী তার স্বামীকে বলে, ‘আমাকে দেওয়া তোমার উপহারটাই সবচেয়ে সুন্দর!’ কিংবা পরম্পরের মনোরঞ্জনের জন্য বানিয়ে কোনো গল্ল বলে ইত্যাদি। এমনকি এসব পরিস্থিতিতেও উত্তম হলো, সরাসরি মিথ্যা না বলে আলংকারিক প্রক্রিয়ার আশ্রয় নেওয়া অর্থাৎ উক্তিটি এমন হওয়া যেন সেটির দু'ধরনের অর্থ করা যায় এবং কম করে হলোও একটি অর্থ সত্য হয়।

### কোমল আচরণ ও মমত্ববোধ

সম্মানজনক সদয় আচরণ পাওয়া স্ত্রীর অধিকার। স্বামীর পক্ষ থেকে এটি কোনো ঐচ্ছিক অনুগ্রহ নয়। বরং স্বামীর এই আবশ্যিক কর্তব্য আসমানি নির্দেশের মাধ্যমে প্রতিষ্ঠিত। যে বিষয়ে স্বামীর কোনো নিয়ন্ত্রণ নেই (মনের ইচ্ছা), তা কোনোভাবেই যেন স্ত্রীর প্রতি তার আচরণকে প্রভাবিত না করে। আল্লাহ তা‘আলা নির্দেশ দিয়েছেন:

» وَعَاشُوا هُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكُرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا »

[১২] তিনি আব্দুর রহমান ইবনু ‘আউফের <sup>رض</sup> স্ত্রী।

[১৩] হাদিসটি আবু দাউদ সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ৫৪৫ এবং সহীহুল জামে, হাদিস নং ৭১৭০)।

## একসাথে পথচলা

“তোমরা তাদের (তোমাদের স্ত্রীদের) সাথে সভাবে বসবাস করো। আর যদি তোমরা তাদেরকে অপছন্দ করো, তবে এমনও হতে পারে যে, তোমরা কেনোকিছুকে অপছন্দ করছো অথচ আল্লাহ তাতে অনেক কল্যাণ দেখেছেন।<sup>[১৪]</sup> »

গ্রীষ্ম প্রতি মমত্ববোধ স্বামীর উত্তম চরিত্র এবং তার সৎকর্মশীল হওয়ার পরিচায়ক। গ্রীষ্ম সাথে একজন সৎকর্মশীল মু’মিনের আচরণ কেমন হওয়া উচিত তার অনুপম প্রয়োগ দেখিয়ে গেছেন নবী ﷺ। আইশাহ ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“তোমাদের মধ্যে সর্বোত্তম হলো তারাই যারা তাদের পরিবারের নিকট উত্তম, আর তোমাদের মধ্যে আমিই আমার পরিবারের নিকট সর্বোত্তম।”<sup>[১৫]</sup>

বিন্দুতা মুসলিম চরিত্রের একটি অত্যাবশ্যকীয় গুণ। এমনকি আল্লাহ তা‘আলা মু’মিনদের প্রতি ন্যূনতা দেখানোর জন্য তাঁর রাসূল ﷺ-কে নির্দেশ দিয়েছেন।<sup>[১৬]</sup> ‘আইয়াদ ইবনু হিমার ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“নিশ্চয়ই আল্লাহ আমাকে ওহীর মাধ্যমে জানিয়েছেন যে, তোমরা অবশ্যই বিন্দুতা প্রদর্শন করবে যাতে করে তোমাদের কেউ একজন আরেক জনের ওপরে দস্ত না করে এবং তোমাদের কেউ একজন আরেক জনের বিরুদ্ধে সীমালঙ্ঘন না করে।”<sup>[১৭]</sup>

বিষয়টি স্বামী-স্ত্রীদের ভালো করে বুঝতে হবে। তাদেরকে পরম্পরের প্রতি বিন্দুতা প্রদর্শন করতে হবে। ধন-সম্পদ, সামাজিক অবস্থান, বিদ্যা-বুদ্ধি, সৌন্দর্য, আত্মীয়-স্বজন, বংশের আভিজাত্য ইত্যাদি ছাড়াও আল্লাহ তা‘আলা তাদেরকে আরও যেসব অনুগ্রহ দান করেছেন সেগুলো নিয়ে তারা বড়াই করতে পারবে না। বিশেষ করে যুক্তির্কের সময় দস্ত প্রকাশ করা অজ্ঞতার ও বুদ্ধিগৃহিতের অপরিপক্ততার লক্ষণ, যা তাদের উভয়ের জন্যই নিন্দনীয় এবং পরিত্যাজ্য।

[১৪] আন-নিসা, ৪:১৯।

[১৫] হাদিসটি আত-তিরমিয় এবং ইবনু হিবানসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ২৮৫)।

[১৬] আশ-শুআরা, ২৬:২১৫

[১৭] হাদিসটি মুসলিম এবং আবু দাউদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

একে অন্যের প্রতি সর্বোচ্চ মাত্রায় সহমর্মিতা এবং মমতা প্রদর্শন করা স্বামী-স্ত্রীর অবশ্যকর্তব্য। তাদের উচিত নিজেদের ভুল-ক্রটিকে ক্ষমাসুন্দর দৃষ্টিতে দেখা এবং পরম্পরকে শুধরে দেওয়া।

দয়াশীল ব্যক্তিই আল্লাহর দয়ার যোগ্য। ‘আব্দুল্লাহ ইবনু ‘আমর বৰ্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:

“দয়ালু মানুষকে পরম দয়াময় (আল্লাহ) দয়া করেন। যারা পৃথিবীতে আছে তাদের প্রতি দয়া করো, তাহলে যিনি আসমানে আছেন তিনি তোমাদের প্রতি দয়া করবেন।” [৯৮]

অনুরূপভাবে, অসীম দয়ালু আল্লাহ দয়াকারীকে ভালোবাসেন এবং তাঁর পক্ষ থেকে দয়ার প্রতিদানও হলো অফুরন্ত। যেকোনো পরিস্থিতিতেই দয়ার প্রদর্শন ইতিবাচক এবং তা পরিস্থিতিকে মঙ্গলের দিয়ে নিয়ে যায়। আর নিষ্ঠুর আচরণের প্রভাব হয় তার উল্টোটা।

আইশাহ বৰ্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:

“হে ‘আইশাহ! নিশ্চয়ই আল্লাহ দয়াময়, এবং সবক্ষেত্রেই দয়াকে ভালোবাসেন। দয়ার জন্য তিনি এমন কিছু দান করেন যা নিষ্ঠুরতা বা অন্যকিছুর জন্য তিনি দান করেন না। হে ‘আইশাহ! আল্লাহর ভয় এবং দয়াকে কাজে লাগাও, কারণ নিশ্চয় কখনোই এমন কিছুর মধ্যে দয়া ছিল না যেটাকে তা সৌন্দর্যমণ্ডিত করেনি এবং কখনোই দয়াকে সরিয়ে নেওয়ার ফলে এমন কিছু ছিল না যার সৌন্দর্যহানী হয়নি।” [৯৯]

বস্তুত একজন নির্দয় ও নিষ্ঠুর ব্যক্তি অন্য কারও ক্ষতি করার পূর্বে নিজেই নিজের ক্ষতি বয়ে আনে। এই ধরনের মানুষ আল্লাহর দয়া এবং ক্ষমাশীলতাকে অস্বীকার করে। জারির ইবনু ‘আব্দুল্লাহ বৰ্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল বলেছেন:

“যে দয়া থেকে বঞ্চিত, সে সকল প্রকার কল্যাণ থেকে বঞ্চিত।” [১০০]

স্বামী-স্ত্রী দু'জনেরই দায়িত্ব হলো পরিবারে দয়া ও মায়ার লালন করা। নিজেদের মাঝে যেকোনো ধরনের সমস্যা এবং মতবিরোধ দেখা দিলে সেসবের নিরাময়ে প্রথমই দয়া-মায়ার প্রয়োগ করতে হবে। এতে শুধু তাদের সমস্যার সমাধানই হবে না; বরং

[৯৮] হাদীসটি আহমাদ এবং আবু দাউদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে’, হাদীস নং ৩৫২২ এবং আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ১২৫)।

[৯৯] হাদীসটি একটি সম্মিলিত বৰ্ণনা যা আল-বুখারি, মুসলিম এবং আহমাদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। (সহীহুল জামে’, হাদীস নং ৭৯২০, ৭৯২১ এবং ৭৯২৭)।

[১০০] হাদীসটি মুসলিম এবং আহমাদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

একসাথে পথচলা

তারা আল্লাহর দয়া এবং ভালোবাসার পাত্র হবে। উল্লিখিত হাদীসে এই কথাই বলা হয়েছে।

### ক্ষমাশীলতা

একজন মুসলিমের প্রতিশেধ নেওয়া বা 'সমুচিত জবাব দেওয়ার' মনোভাব থাকা উচিত নয়। এতে তাদের নিজেদের মাঝে ঘৃণার জন্ম হয় এবং তাদের মধ্য থেকে ভালোবাসা ও নিরাপত্তাবোধ বিদায় নেয়। একজন মুসলিমের সর্বদা ক্ষমা করে দেওয়ার প্রবণতা থাকা উচিত। বিশেষ করে, স্বামী-স্ত্রী এবং নিকটাত্মীয়দের প্রতি তাকে এমন মনোভাব পোষণ করা উচিত। ক্ষমাশীল ব্যক্তিই আল্লাহর ক্ষমা লাভের যোগ্য। জাবির ইবনু 'আবুল্লাহ ﷺ থেকে বর্ণিত উল্লিখিত হাদীসের অন্য একটি বর্ণনায় আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“যে দয়া করে না, তার প্রতি (আল্লাহর পক্ষ থেকে) দয়া করা হবে না। আর যে ক্ষমা করে না, তাকেও ক্ষমা করা হবে না।” [১০১]

### অন্যায় আচরণ ও অশ্লীল ভাষা বর্জন করা

স্বামী-স্ত্রীর একে অন্যের প্রতি আচরণ হওয়া উচিত সুবিবেচনাপ্রসূত, সুবিচারপূর্ণ এবং ন্যায়সঙ্গত। পরম্পরের প্রতি যেকোনো ধরনের অন্যায় আচরণ তাদের পরিহার করা উচিত। পরম্পরের অধিকারকে ক্ষুণ্ণ করা কিংবা নিজেদের অভ্যাসগত আচরণের কারণে পারম্পরিক অধিকারের অপব্যবহার করা উচিত নয়। অন্যায় আচরণ বা অবিচার করাকে আল্লাহ তা'আলা নিষিদ্ধ করেছেন। এমনকি আল্লাহর নিজের ওপর নিজে অবিচার করা নিষিদ্ধ করে নিয়েছেন! আবু যর ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেন:

“আল্লাহ বলেন, 'হে আমার বান্দারা! নিশ্চয়ই আমি যুলুম করাকে আমার নিজের ক্ষেত্রেই নিষিদ্ধ করেছি এবং তোমাদের মাঝে তা নিষিদ্ধ করেছি, তাই তোমরা একে অন্যের প্রতি যুলুম করো না।’” [১০২]

[১০১] হাদীসটি আহমাদ এবং আত-তাবারানি (আল-কাবির গ্রন্থে) সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে', হাদীস নং ৬৫৯৯ এবং ৬৬০০)।

[১০২] হাদীসটি মুসলিম সংকলন করেছেন।

## ভালোবাসার চাদর

যুলুম অবিচার অনেক বড় পাপ; এতে আল্লাহর ক্রোধের উদ্বেক হয় এবং যা উভয় জীবনেই শাস্তি বয়ে আনে। জাবির ইবনু ‘আবুল্লাহ ইবনু ‘উমার رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“তোমরা যুলুম পরিহার করো, কারণ যুলুমের ফলেই কিয়ামতের দিন ঘোর অঙ্ককারের সৃষ্টি হবে।” [১০৩]

নিজের অজান্তেই স্বামী বা স্ত্রীর মনে যেন কর্তৃত বা শ্রেষ্ঠত্ববোধ দানা বেঁধে না ওঠে। এতে একজন আরেকজনের প্রতি অন্যায় আচরণ করে ফেলবে এবং ভাববে যে, এটা করে সে অনেক বড় বিজয় অর্জন করেছে। তারা উভয়েই যেন উল্লিখিত হাদিসটি সম্পর্কে চিন্তা-ভাবনা করে এবং অত্যাচারিত ব্যক্তির হৃদয়ের নীরব অভিশাপকে ভয় করে চলে। আনাস ইবনু মালিক رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“অত্যাচারিত ব্যক্তির দু‘আকে ভয় করো, এমনকি সে যদি কাফিরও হয়; কারণ তা (তার দু‘আ) আল্লাহর নিকট পৌঁছতে কোনো বাধা নেই।” [১০৪]

অত্যাচারের কথা মানুষ কখনোই ভুলে যায় না এবং অত্যাচারীর শাস্তি প্রাপ্তি অবশ্যস্তাবি। আবু উরায়রা رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“সম্পদ বা মানসম্মান নিয়ে কেউ যদি কারও ওপর অবিচার করে, তাহলে যেদিন কোনো টাকা-পয়সা থাকবে না, সেই দিন তার কাছে তা নিয়ে নেওয়ার আগে সে যেন আজই মাফ চেয়ে নেয়। সেদিন তার যদি কোনো ভালো কাজ থাকে, তাহলে তার অত্যাচারের বদলা হিসেবে তা নিয়ে নেওয়া হবে। আর যদি ভালো কাজ না থাকে, তাহলে অত্যাচারের স্বীকার হওয়া মানুষটার অপরাধ (পাপ) তার ওপর চাপানো হবে।” [১০৫]

দাম্পত্য সম্পর্ককে সবধরনের পক্ষিলতা ও নোংরামি থেকে মুক্ত এবং পবিত্র রাখতে হবে। কথাবার্তা এবং শব্দচয়নে এই সম্পর্ক যেন স্বামী-স্ত্রীর জন্য এবং তাদের সন্তানদের জন্য অনুকরণীয় আদর্শ হয়ে যায়। তাদের কথাবার্তায় শব্দচয়ন হবে এমন যা আল্লাহ, তাঁর রাসূল ﷺ এবং সর্বোপরি মু’মিনদের কাছে পছন্দনীয়। আইশাহ رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ তাঁকে উপদেশ দিয়েছিলেন:

[১০৩] হাদিসটি মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[১০৪] হাদিসটি আহমাদ এবং আবু ইয়া‘লাসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ৭৬৭ এবং সহীহুল জামে’, হাদীস নং ১১৯)।

[১০৫] হাদিসটি আল-বুখারি এবং আহমাদ সংকলন করেছেন।

একসাথে পথচলা

“হে ‘আইশাহ! অশ্লীল হবে না। নিশ্চয়ই আল্লাহ গর্হিত আচরণের ব্যক্তিকে ভালোবাসেন না, যে অশ্লীলতায় আনন্দ পায়।” [১০৬]

### তর্ক-বিতর্ক এবং বাকবিতগ্নি বর্জন করা

কথায় কথায় তর্ক-বিতর্ক আর ঝগড়া-বিবাদ অবশ্যই বর্জন করতে হবে। কারণ বিবাহিত দম্পতির পরম্পরের সম্পর্কের বন্ধন এতে ক্রমান্বয়ে শিথিল হতে থাকে। স্বামী-স্ত্রীর প্রত্যেককে মনে রাখতে হবে— সর্বক্ষেত্রে নিজের মতটি সুপ্রতিষ্ঠিত করা এবং প্রত্যেকবার বিতর্কে নিজে বিজয়ী হওয়া অত্যাবশ্যক নয়। নিজে সঠিক হওয়ার পরও যে ব্যক্তি বিতর্ক থেকে নিজেকে সরিয়ে নেয়, আল্লাহ ঐ ব্যক্তির জন্য জানাতে একটি গৃহের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন। আবু উমামাহ رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“আমি সেই ব্যক্তির জন্য জানাতের প্রাপ্তসীমায় একটি ঘরের জিম্মাদার, যে তর্ক পরিত্যাগ করে, যদিও সে-ই সঠিক; এবং সেই ব্যক্তির জন্য জানাতের মধ্যখানে একটি ঘরের, যে মিথ্যা পরিত্যাগ করে, এমনকি ঠাট্টার ছলেও বলে না; এবং সেই ব্যক্তির জন্য জানাতের সুউচ্চ শিখরে একটি ঘরের, যার রয়েছে উত্তম আচরণ।” [১০৭]

অন্যদিকে, আল্লাহ ঐসব ব্যক্তিদেরকে ঘৃণা করেন যারা একগুঁয়ে এবং ঝগড়াটে। আইশাহ رض বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“আল্লাহর নিকট সবচেয়ে ঘৃণ্য ব্যক্তি হলো সেই ব্যক্তি, যে একগুঁয়ে এবং ঝগড়াটে।” [১০৮]

### সমস্যার শান্তিপূর্ণ সমাধান

স্বামী-স্ত্রীর মাঝে বিভিন্ন বিষয়ে ভুল বোঝাবুঝি এবং মতের অভিলের একটু-আধটু আশঙ্কা হতেই পারে। এধরনের মতবিরোধের কোনোটি হয়তো তাদের একজনকে অপরজন থেকে দূরে ঠেলে দিতে পারে। অপরিগামদশী কোনো সিদ্ধান্তে তাদের দার্শনিক সম্পর্কে ফাটল দেখা দিতে পারে। একারণেই তাদের জন্য প্রথম উপদেশ

[১০৬] হাদিসটি একটি সন্মিলিত বর্ণনা যা মুসলিম, আল-বুখারি ('আদাবুল মুফ্রাদ) এবং আবু দাউদ সংকলন করেছেন। ('সহীহুল জামে', হাদিস নং ৭৯৩৩, ৭৯২২ এবং আরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ২১৩৩)।

[১০৭] হাদিসটি আবু দাউদ এবং আদ-দিয়াউল মাক্দিসি সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটি হাসান বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১৪৬৪ এবং সহীহুল জামে', হাদিস নং ২৭৩)।

[১০৮] হাদিসটি আল-বুখারি এবং মুসলিম সংকলন করেছেন।

হলো, এসব ক্ষেত্রে তারা যেন নিজেদের মধ্যে সমঝোতার চেষ্টা করে ও ধৈর্য ধারণ করে। এই পদক্ষেপকেই আল্লাহ তা'আলা সমস্যা নিরসনের সর্বোত্তম পদ্ধা বলে ঘোষণা করেছেন:

»إِنْ أَمْرًاٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا  
صُلْحًا وَالصُّلْحُ حَيْرٌ وَأَخْضَرَتِ الْأَنفُسُ الشُّحُّ وَإِنْ تُخْسِنُوا وَتَتَقْوَافُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ  
بِمَا تَعْمَلُونَ حَبِيرًا«

«যদি কোনো স্ত্রীলোক নিজ স্বামীর অসদাচরণ ও উপেক্ষার আশঙ্কা করে, তবে তারা পরম্পর কোনো সুমীমাংসায় উপনীত হলে তাদের উভয়ের কোনো অপরাধ নেই এবং মীমাংসাই কল্যাণকর; মানুষের মনের মধ্যে সংকীর্ণতা রয়েছে; তারপরও যদি তোমরা উত্তম কাজ করো ও সংযমী হও, তবে তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ সম্যক অবগত।<sup>[১০৯]</sup>»

### স্ত্রীকে বিনোদন দেওয়া

স্ত্রীকে খেলার ছলে বিনোদন দেওয়া এবং ইসলামসম্মত পদ্ধায় বিভিন্নভাবে তাকে খুশি করা এবং তার মনে আনন্দের সৃষ্টি করার জন্য স্বামীকে উৎসাহিত করা হয়েছে। আল্লাহর রাসূল ﷺ তাঁর সহধর্মীদের সাথে এমনটি করতেন। এই মর্মে ‘আইশাহসহ অন্যান্য নবী-পত্নীদের থেকে বিস্তারিতভাবে হাদীস বর্ণিত হয়েছে।

জাবির ইবনু ‘আব্দুল্লাহ এবং জাবির ইবনু ‘উমাইর ؑ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“আল্লাহকে স্মরণ করা হয় না এমন সবকিছুই বৃথা, নিরর্থক এবং বাতিল— তিনটি কাজ ছাড়া : যখন কোনো স্বামী তার স্ত্রীকে বিনোদন দেয়, যখন কোনো ব্যক্তি তার ঘোড়াকে প্রশিক্ষণ দেয়, যখন (ধনুর্বিদ্যা চর্চার সময়) ব্যক্তি দুই খুঁটির মাঝখানে হাঁটে এবং অন্য ব্যক্তিকে সাঁতার শিক্ষা দেয়।”<sup>[১১০]</sup>

স্বামী যেহেতু পরিবারের প্রধান কর্তা, তাই স্ত্রী এবং পরিবারের অন্যান্য সদস্যদের সাথে তার আচরণ অবশ্যই হতে হবে ন্যায়সঙ্গত এবং সুবিচারপূর্ণ। এক্ষেত্রে তার

[১০৯] আন-নিসা, ৪:১২৮

[১১০] হাদীসটি আন-নাসা‘ঈ সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে’, হাদীস নং ৪৫৩৪ এবং আস-সাহীহাহ, হাদীস নং ৩১৫)

ব্যর্থতা হবে পরিবার পরিচালনার ক্ষেত্রে তার ব্যর্থতার পরিচায়ক। নিজের শারীরিক শক্তি ব্যবহার করে স্ত্রীকে নির্যাতন করা স্বামীর মোটেই উচিত নয়।

### অন্তরঙ্গতার গুরুত্ব

স্বামী-স্ত্রীর মাঝে চমৎকার বোঝাপড়া এবং ভাবের উৎকৃষ্ট আদান-প্রদান বজায় রাখতে হবে। নিজেদের সুখ-দুঃখ, আবেগ, উৎকণ্ঠা পরম্পরের সাথে ভাগাভাগি করে নিতে হবে। এতে তাদের মাঝে ভালোবাসা ও সম্প্রীতির বন্ধন অটুট থাকবে এবং স্বামী-স্ত্রীর 'সুখের নীড়' রচনার যে শর্ত তা প্রতিষ্ঠিত হবে।

যেদিন যে স্ত্রীর সাথে রাত্রি যাপনের পালা থাকতো সেদিন সেই স্ত্রীর ঘরে যাওয়ার পূর্বেই নবী ﷺ তাঁর অন্য সকল স্ত্রীদের সাথে দেখা করে তাদের সাথে তাঁর সংক্ষিপ্ত আলাপ সেরে নিতেন। এটিই ছিল তাঁর প্রাত্যহিক রীতি।

### পরম্পরের শারীরিক চাহিদা পূরণ করা

বিয়ের অন্যতম উদ্দেশ্য হলো সতীত্বের সুরক্ষা। সাধারণভাবে এই ব্যাপারটি নারীদের থেকে পুরুষদের ক্ষেত্রেই বেশী প্রাসঙ্গিক; তবে নিশ্চিতভাবে তা নারীদের ক্ষেত্রেও প্রযোজ্য। কারণ স্বামীর কর্তব্য হলো, নিজের সাধ্যমতো তার স্ত্রীর জৈবিক চাহিদা মেটানো।

সে কারণেই পরম্পরের প্রতি তাদের বৈবাহিক কর্তব্য পূর্ণ করা স্বামী এবং স্ত্রী উভয়েরই কর্তব্য। পরম্পরকে শয়তানের প্ররোচনা থেকে রক্ষা করার জন্য ইসলামের পরিসীমার মধ্যে থেকেই পরম্পরকে সুখ ও আনন্দ দিতে সম্ভাব্য সবকিছু তাদের করা উচিত।

### গাইরাহ বা ব্যক্তিত্ববোধ

স্ত্রীর প্রতি ভালোবাসার বহিঃপ্রকাশ স্বরূপ তার প্রতি স্বামীর 'গাইরাহ' থাকা উচিত। এক্ষেত্রে গাইরাহ হলো স্ত্রীর সার্বিক কল্যাণের ব্যাপারে স্বামীর গভীর উদ্বেগ বা উৎকণ্ঠা এবং তার জন্য ক্ষতিকর এমন সবকিছু—যেমন কারও অশুভ স্পর্শ, মন্দকথা কিংবা কুনজর ইত্যাদি থেকে তাকে নিরাপদে রাখার মানসিক প্রস্তুতি।

তবে গাইরাহ যেন এমন মাত্রায় না পৌঁছায় যা স্ত্রীর বিরক্তির উদ্দেক হয় বা অকারণে স্বামীর মনে স্ত্রীর ব্যাপারে সন্দেহ জাগে। আবার গাইরাহকে সামান্য

ত্রুটিবিচ্যুতি খুঁজে বের করার মতলবে ব্যবহার করা যাবে না। জাবির ইবনু 'আতিক  
বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“নিশ্চয়ই এক প্রকার গাইরাহ (আত্মসম্মানবোধ) আছে যা আল্লাহ ভালোবাসেন এবং  
অন্য এক প্রকার যা আল্লাহ ঘৃণা করেন। সেই গাইরাহ আল্লাহ ভালোবাসেন যা হয়  
(বৈধ) সংশয়ের ভিত্তিতে, এবং সেই গাইরাহ আল্লাহ ঘৃণা করেন যা কোনো (বৈধ)  
সংশয় ছাড়াই করা হয়।” [১১১]

যে ব্যক্তির গাইরাহ নেই তাকে বলা হয় 'দাইয়ুস'। দাইয়ুস হলো সেই ব্যক্তি,  
নিজের স্ত্রীর ব্যাপারে যার কোনো নিরাপত্তা বা সম্মানবোধ থাকে না।

### সন্দেহ করা থেকে বিরত থাকা

স্ত্রীকে দোষারোপ করার জন্য অযৌক্তিক সন্দেহ পোষণ বা খুঁটিয়ে খুঁটিয়ে দোষ বের  
করা একেবারেই অনুচিত।

এজন্যই নবী ﷺ পুরুষদেরকে ছট করে বাড়িতে ঢুকতে নিষেধ করেছেন। যেন সে  
পছন্দ করে না, এমন কোনো কাজ করা অবস্থায় সরাসরি স্ত্রীকে দেখে ফেলে। জাবির  
বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“যখন তোমাদের কেউ দীর্ঘ সফর শেষে ফিরবে, সে যেন রাতের বেলা হঠাত করে  
পরিবারের কাছে না আসে।” [১১২]

### স্ত্রীর গোপনীয়তা রক্ষা করা

স্ত্রীর গোপনীয় বিষয়কে প্রকাশ করা স্বামীর জন্য কঠোরভাবে নিষিদ্ধ। বিশেষ করে  
এমন গোপনীয় বিষয় যেগুলো সাধারণত স্বামী ছাড়া অন্য কোনো মানুষের জানার কথা  
নয়। যেমন: স্ত্রীর বিশেষ শারীরিক বা আবেগিক বৈশিষ্ট্য, শারীরিকভাবে ঘনিষ্ঠ হওয়ার  
সময় তার বিশেষ উদ্দীপন ও আচরণ, শরীরের কোনো অঙ্গের বিবরণ ইত্যাদি। আবু  
সাউদ আল-খুদ্রি বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

[১১১] হাদিসটি আহমাদ এবং আবু দাউদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদিসটি  
হাসান বলে মত দিয়েছেন (আরওয়া আল-গালীল, হাদিস নং ১৯৯৯)।

[১১২] হাদিসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

“নিশ্চয়ই কিয়ামতের দিন মানুষের মধ্য থেকে আল্লাহর নিকট সবচেয়ে নিকৃষ্ট হবে সে-ই, যে (পুরুষ) গোপনে তার স্ত্রীর সাথে মিলিত হয় এবং সেও (নারী) গোপনে তার (স্বামীর) সাথে মিলিত হয় এবং সে (স্বামী) তার (স্ত্রীর) গোপনীয় বিষয়গুলো প্রকাশ করে দেয়।”<sup>[১১৩]</sup>

স্ত্রীর গোপনীয় বিষয়গুলোকে প্রকাশ করে দিলে স্ত্রীর মনে স্বামীর প্রতি অবিশ্বাস এবং ভয়ের জন্ম হয়। এই ধরনের আচরণ স্বামীর দাইয়ুস প্রবণতার পরিচায়ক।

### নারীর নাজুক প্রকৃতিকে বোঝা

শারীরিক এবং মানসিক উভয় দিক দিয়েই নারীরা নাজুক প্রকৃতির হয়ে থাকে। বিষয়টি ভালোভাবে বুঝতে পারলে স্ত্রীর সাথে সদয় এবং কোমল আচরণ করা পুরুষের জন্য সহজ হয়ে যায়।

আনাস ﷺ বর্ণনা করেন যে, একবার আল্লাহর রাসূল ﷺ সফরে ছিলেন এবং তাঁর সাথে স্ত্রীগণও ছিলেন। আনজাশাহ নামের এক আবিসিনীয় উট চালক নারীদের দলটিকে পরিচালনা করছিল। উটগুলোকে হাঁকানোর সময় সে গান গাইতো। এতে নারীদেরকে বহনকারী উটগুলো দ্রুত এগিয়ে যেতো। তাই আল্লাহর রাসূল ﷺ তাকে বললেন:

“হে আনজাশাহ! তোমার জন্য অমঙ্গল। নাজুক পাত্রগুলোকে<sup>[১১৪]</sup> ধীরে ধীরে হাঁকিয়ে নিয়ে যাও।”<sup>[১১৫]</sup>

আল-বুখারি, আল-কুরতুবি এবং আল-‘আসকালানিসহ<sup>[১১৬]</sup> অনেক বিশেষজ্ঞের মতে, আল্লাহর রাসূল ﷺ এখানে দুটি বিষয় বুঝিয়েছেন:

- ✿ শারীরিক গঠন এবং প্রকৃতিগতভাবে নারীরা নাজুক এবং তাদেরকে নিয়ে দ্রুত উট চালনা করলে পড়ে গিয়ে বা অন্য কোনোভাবে তাদের অঘটন ঘটতে পারতো।
- ✿ নারীরা প্রকৃতিগতভাবেই আবেগপ্রবণ হয়ে থাকে। ফলে খুব সহজেই গান এবং কাব্যের দ্বারা তাদের হৃদয় আলোড়িত হয় এবং তাদের জন্য ফিতনা বয়ে আনতে পারে।

[১১৩] হাদিসটি মুসলিম এবং আবু দাউদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[১১৪] লক্ষণীয় যে, এই হাদিসের আলোকেই আমাদের বইয়ের নামকরণ করা হয়েছে।

[১১৫] হাদিসটি আল-বুখারি এবং মুসলিমসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন।

[১১৬] ফাতহুল বারী’র বর্ণনা অনুযায়ী।

## পরম্পরের মনোভাব বুঝে মানিয়ে চলা

নারী হোক আর পুরুষ হোক, মাঝে মাঝে তারা রাগের বশবতী হতেই পারে। স্বামীর মেজাজ-মর্জি বুঝে স্ত্রীর চলা উচিত। বিশেষত যখন তারা বাইরে থেকে ঘরে ফেরে তখন কিছুতেই এমন কিছু করা বা বলা উচিত নয় যা সে অপছন্দ করে। স্বামী যদি রেগে যান তাহলে স্ত্রীর উচিত তর্ক এড়িয়ে সম্পূর্ণ চুপ থাকা—এমনকি স্বামী ভুল, এবং স্ত্রী সঠিক হলেও। পরবর্তীতে যখন স্বামী খোশমেজাজে থাকে তখন যত্নের সাথে তার ভুল ধরিয়ে দিলে সে মেনে নেবে। একইভাবে স্বামীরও উচিত স্ত্রীর মন-মানসিকতা বুঝতে চেষ্টা করা। স্ত্রীর ক্ষণিকের রাগকে প্রতিশোধের উপলক্ষ বানিয়ে ফেলা মোটেই উচিত নয়। বরং বিষয়টিকে ঠাট্টার ছলে বা হালকা মেজাজে সামলে নেওয়া বুদ্ধিমানের লক্ষণ। এক্ষেত্রে নবী ﷺ-এর দৃষ্টান্ত অনুকরণীয়। আইশাহ ﷺ বর্ণনা করেন যে, একদিন আল্লাহর রাসূল ﷺ তাঁকে বলেন:

“নিশ্চয়ই আমি জানি কখন তুমি আমার প্রতি খুশি থাকো আর কখন রেগে থাকো— যখন তুমি আমার প্রতি খুশি থাকো, (কসম করার সময়) তুমি তখন বলো, 'না, মুহাম্মাদের প্রতিপালকের শপথ'। আর যখন তুমি আমার প্রতি রেগে থাকো, তখন তুমি বলো, 'না, ইব্রাহীমের প্রতিপালকের শপথ'।”

তিনি প্রত্যন্তে বলেন, “নিশ্চয়ই তা-ই, আল্লাহর কসম, হে আল্লাহর রাসূল! (রাগান্বিত অবস্থায়) আপনার নাম ছাড়া অন্যকিছু ত্যাগ করি না।” [১১৭]

## নারীর প্রকৃতি বোঝা

স্ত্রী কোনো ভুল করলে, স্বামীর উচিত ধৈর্য এবং সহিষ্ণুতা দেখানো। এক্ষেত্রে স্বামীকে বুঝতে হবে যে, অনেক কিছুই আপাতদৃষ্টিতে ভুল বলে মনে হলেও সত্যিকার অর্থে তা ভুল না-ও হতে পারে। প্রকৃতিগত দিক থেকেই নারীরা পুরুষদের চেয়ে আলাদা। কাজেই পদক্ষেপ নেওয়ার ক্ষেত্রেও তারা পুরুষদের থেকে আলাদা হতেই পারে।

নবী ﷺ উল্লেখ করেছেন যে, নারীকে (হাওয়া বা ইভ) সৃষ্টি করা হয়েছে মূলত পুরুষের (আদম) পাঁজরের হাড় থেকে। গঠনগত কারণেই পাঁজরের হাড় হয় বাঁকা। এজন্যই নারীর মেজাজ কখনোই পুরুষের মেজাজের সাথে মিলবে না। কারণ তাদের মাঝে আদি থেকেই একটা 'বাঁক' রয়ে গেছে।

[১১৭] হাদীসটি আল-বুখারি, মুসলিম এবং আহমাদ সংকলন করেছেন।

নারীর দৃষ্টিকোণ থেকে দেখলে এ কথাও মিথ্যা নয় যে, পুরুষের প্রকৃতিতেও 'বাঁক' রয়েছে। অর্থাৎ পুরুষের কর্ম-পদক্ষেপ কখনোই নারীর কর্ম-পদক্ষেপের সাথে মিলবে না।

আবু হুরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ আদেশ করেছেন:

“নারীদের উত্তম যত্ন নাও; কারণ নারীকে সৃষ্টি করা হয়েছে পাঁজরের বাঁকা হাড় থেকে। আর পাঁজরের হাড়ের সবচেয়ে বাঁকা অংশ হলো উপরের প্রান্ত। যদি একে জোর করে সোজা করতে চাও, তাহলে তোমরা একে ভেঙ্গে ফেলবে; আর যদি যেমন আছে তেমনি রেখে দাও, তাহলে তা বাঁকাই থেকে যাবে। সুতরাং, তোমরা নারীদের উত্তম যত্ন নাও।”<sup>[১১৮]</sup>

এই হাদীসে পাঁজরের হাড়ের ওপরের প্রান্ত বলতে সম্ভবত মাথাকে বুঝানো হয়েছে। মন্তিক্ষেই হলো প্রধান মানবীয় ইন্দ্রিয়সমূহের (দর্শন এবং শ্রবণ) ধারক। মাথার অংশেই রয়েছে জিহ্বা যার মাধ্যমে কথা বলা হয়। আবার মাথা শরীরের এমন একটি অঙ্গ যেখানে চিন্তা প্রক্রিয়া সংঘটিত হয়ে থাকে।

অর্থাৎ চিন্তা এবং পরিকল্পনা করার প্রয়োজন পড়ে এমন বিভিন্ন বিষয় সমাধা করার ক্ষেত্রে নারী এবং পুরুষের পদক্ষেপ গ্রহণের পদ্ধতিগত পার্থক্যই হলো তাদের মাঝে প্রধান পার্থক্য। যেমন— তাদের দৃষ্টিভঙ্গিগত পার্থক্যের কারণে তারা একই বিষয়কে ভিন্নভাবে দেখে এবং ভিন্ন ভিন্ন পরিস্থিতিতে তাদের আবেগিক প্রতিক্রিয়ার (হাসি, বাজে ভাষার ব্যবহার, মিথ্যা বলা ইত্যাদির মাধ্যমে) বহিঃপ্রকাশও ভিন্নভাবে ঘটে থাকে।

সামুরাহ ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“নারীকে সৃষ্টি করা হয়েছে পাঁজরের হাড় থেকে। যদি তুমি তা সোজা করার চেষ্টা করো, তুমি একে ভেঙ্গে ফেলবে। অতএব, তার প্রতি কোমল হও। এতে তুমি তার সাথে আনন্দে জীবন যাপন করবে।”<sup>[১১৯]</sup>

এই হাদীসে নবী ﷺ নারীর কোনো স্বত্বাবসূলভ আচরণকে পরিবর্তনের জন্য তাকে বাধ্য করাকে পাঁজরের হাড় ভেঙ্গে ফেলার সাথে তুলনা করেছেন। আর পাঁজরের হাড় ভেঙ্গে ফেলার অর্থ হলো 'তালাক'। আবু হুরায়রা ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

[১১৮] হাদীসটি আল-বুখারি এবং মুসলিম সংকলন করেছেন।

[১১৯] হাদীসটি আহমাদ, ইবনু হিক্বান এবং আল-হাকিম সংকলন করেছেন। আল-আলবানি হাদীসটিকে সহীহ বলে মত দিয়েছেন (সহীহুল জামে', হাদীস নং ১৯৪৪)।

“নারীকে সৃষ্টি করা হয়েছে পাঁজরের হাড় থেকে। তোমার ইচ্ছে মতো সে সোজা হবে না। যদি তুমি তাকে উপভোগ করতে চাও, তাহলে তোমাকে তার বাঁকা ভাব নিয়েই উপভোগ করতে হবে। কিন্তু তুমি যদি তাকে সোজা করার চেষ্টা করো, তুমি তাকে ভেঙ্গে ফেলবে; আর তাকে ভেঙ্গে ফেলার মানে হলো তাকে তালাক দেওয়া।” [১২০]

### স্ত্রীর ভালো দিকটাই বিবেচনা করা

পাপের পর্যায়ে না পড়লে স্ত্রীর ভুলক্ষণ উপেক্ষা করে তার ভালো গুণাবলীর দিকটাই বিবেচনা করে তাকে মূল্যায়ন করা উচিত। নবী ﷺ ইঙ্গিত করেছেন যে, নারীর কিছু বৈশিষ্ট্য আছে যেগুলো পরিবর্তন করা কঠিন, এমনকি অসম্ভব।

পুরুষ যেমন সবদিক দিয়ে পরিপূর্ণ এবং নির্খুঁত হতে পারে না, নারীর ক্ষেত্রেও তা-ই। দাম্পত্য জীবনকে উপভোগ্য করে তুলতে হলে স্বামীকে অবশ্যই স্ত্রীর কিছু অপচন্দনীয় কাজকর্মের প্রতি ঝক্ষেপ না করে সেগুলো ক্ষমাসুন্দর দৃষ্টিতে দেখতে হবে। সেই সাথে, স্ত্রীর যে সমস্ত কাজকর্ম স্বামী পছন্দ করে সেগুলোকে স্বীকৃতি জানাতে হবে। নিশ্চিতভাবেই বলা যায় যে, অধিকাংশ ক্ষেত্রেই স্ত্রীর ভালো গুণগুলো তার ছোটখাটো ক্রটি-বিচ্যুতিকে আড়াল করে দেবে। আল্লাহ সুবহানাল্লাহ ওয়া তা‘আলা বলেন:

« যদি তোমরা তাদেরকে অপচন্দ করে, তাহলে হতে পারে তোমরা হয়তো এমন কিছু অপচন্দ করছো যার মাঝে আল্লাহ অনেক কল্যাণ রেখেছেন। [১২১] »

আবু হুরায়রা رضي الله عنه বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“কোনো বিশ্বাসী পুরুষ যেন কোনো বিশ্বাসী নারীকে ঘৃণা না করে; তার একটি খারাপ গুণ সে অপচন্দ করলেও তার অন্যান্য গুণগুলো তাকে সন্তুষ্ট করবে।” [১২২]

ভালো দিকগুলোকে উপেক্ষা করে শুধু খারাপ দিকগুলো নিয়ে মেতে থাকলে তা নিশ্চিতভাবে দাম্পত্য জীবনকে ধ্বংসের দিকে ঠেলে দেবে। পুরুষরা যদি এই বাস্তব সত্যকে উপেক্ষা করে, তাহলে দাম্পত্য জীবন হবে দুর্দশা আর বিষাদে আচ্ছন্ন যা বিবাহ বিচ্ছেদের পথকে সুগম করবে।

[১২০] হাদীসাটি মুসলিম এবং আত-তিরমিয়ি সংকলন করেছেন।

[১২১] আন-নিসা, ৪:১৯।

[১২২] হাদীসাটি মুসলিম এবং আহমাদ সংকলন করেছেন।

## পারম্পরিক সহযোগিতা ও তার সীমারেখা

যামী-স্ত্রী সুদীর্ঘ একটি সময়ের জন্য পরম্পরের প্রতিজ্ঞাবন্ধ জীবনসাথী। কাজেই নিজেদের অংশীদারিত্বপূর্ণ সম্পর্ককে সার্থক করার জন্য পরম্পরকে সহযোগিতা করতে গিয়ে তাদের সাধ্যমতো সবকিছুই করতে হবে। এর মধ্যে শারীরিক, আর্থিক এবং মানসিকসহ সবধরনের সহযোগিতাই অন্তর্ভুক্ত।

যখন স্বামী বা স্ত্রীর কোনো একজন শারীয়াসম্মত কোনো কাজ করবে, তখন অন্যজনের জন্য মুস্তাহাব হলো তাকে সেই কাজ করার জন্য নিজের সাধ্যমতো সাহায্য করা। আবার তাদের দু'জনের কোনো একজন যখন শারীয়াহুর কোনো ফরয হ্রকুম পালন করবে, তখন অন্যজনের অপরিহার্য কর্তব্য হলো তাকে সেই হ্রকুম পালনের জন্য নিজের সাধ্যমতো সাহায্য করা। আল্লাহ সুবহানাল্লাহ ওয়া তা'আলা বলেন:

» وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۝ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الإِثْمِ وَالْعُدُوٰءِ ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَرِيكُ الْعِقَابِ ۝

« সৎকর্ম ও তাক্রওয়ায় তোমরা পরম্পরের সহযোগিতা করো। মন্দকর্ম ও সীমালঙ্ঘনে পরম্পরের সহযোগিতা করো না। আর আল্লাহকে ডয় করো। নিশ্চয় আল্লাহ আযাব প্রদানে কঠোর।[১২৩] »

একইভাবে, উল্লিখিত আয়াত থেকে সিদ্ধান্ত হলো, যখন স্বামী বা স্ত্রীর কোনো একজন মাক্রুহ (অপচন্দনীয়) কোনো কাজ করবে, তখন অন্যজনের জন্য তাকে সেই কাজ করতে সহযোগিতা করাও হলো মাক্রুহ। আবার তাদের দু'জনের কোনো একজন যখন শারীয়াহুতে নিষিদ্ধ কোনো কাজ করবে, তখন অন্যজনেরও তাকে সেই কাজ করতে সহযোগিতা করা নিষিদ্ধ। আলী ﷺ বর্ণনা করেন যে, আল্লাহর রাসূল ﷺ বলেছেন:

“আল্লাহর অবাধ্যতা করে মানুষের আনুগত্য করা যাবে না। আনুগত্য হবে কেবল বৈধ বিষয়ে।” [১২৪]

[১২৩] আল-মায়েদা, ৫:২

[১২৪] হাদিসাটি আল-বুখারি এবং মুসলিম সংকলন করেছেন। ইমরান ইবনু হুসাইন ﷺ থেকে অনুৰূপ একটি হাদিস আহমাদসহ অন্যান্যরা সংকলন করেছেন যেটিকে আল-আলবানি সহীহ বলে মত দিয়েছেন (আস-সাহীহাহ, হাদিস নং ১৭৯, ১৮০)।